जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 159 प्रभात जालोर, सोमवार 15 सितम्बर, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

संशोधित वक्फ कानून पर सुप्रीम कोर्ट आज अंतरिम निर्णय सुनायेगा

मुख्य न्यायाधीश की बैंच ने लगातार सुनवाई के बाद 22 मई को आदेश सुरक्षित रखा था

नई दिल्ली, 14 सितंबर। सुप्रीम कोर्ट सोमवार को तीन प्रमुख मुद्दों पर अपना अंतरिम फैसला सुनाएगा। इनमें एक मुद्दा यह है कि क्या वक्फ घोषित संपत्तियों को अदालतें वक्फ की सूची से हटा (डिनोटिफाई) सकती हैं या नहीं। इसके साथ ही यह भी देखा जाएगा कि क्या कोई संपत्ति उपयोग के आधार पर वक्फ (वक्फ बाय यूजर) या किसी दस्तावेज के जरिए वक्फ (वक्फ बाय डीड) घोषित की जा सकती

- **इस केस में एक बड़ा मुद्दा यह है कि अगर किसी जमीन को पहले अदालत ने वक्फ घोषित कर दिया तो क्या सरकार बाद में उसे वक्फ की सूची से हटा सकती है।**

है। ये सभी मुद्दे वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान उठे थे।

चीफ जस्टिस (सीजेआई) बीआर गवई की अध्यक्षता वाली बेंच ने 22 मई को इन तीनों पर दोनों पक्षों की दलीलों को सुना था, जिसके बाद अंतरिम अंतरिम आदेश सुरक्षित रख लिया गया था। शीर्ष कोर्ट की वेबसाइट पर 15 सितंबर की कार्य सूची के मुताबिक, कोर्ट सोमवार को इस मामले पर अपना आदेश सुनाएगी।इन मुद्दों में एक बड़ा मुद्दा यह है कि अगर किसी जमीन को पहले अदालत ने वक्फ घोषित कर दिया हो, तो क्या सरकार बाद में उसे वक्फ की सूची से हटा सकती है या नहीं। यह मामला वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 से जुड़ा है।

आदेश सुरक्षित रखने से पहले बेंच ने तीन दिनों तक लगातार सुनवाई की थी, जिसमें संशोधित वक्फ कानून को चुनौती

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वैष्णो देवी यात्रा फिर स्थगित हुई

जम्मू, 14 सितंबर। श्री माता वैष्णो देवी मंदिर तीर्थयात्रा खराब मौसम के मद्देनजर रविवार को पुनः स्थगित कर दी गयी। यह यात्रा 19 दिनों के लंबे अंतराल बाद रविवार से शुरू होने वाली थी।

मंदिर बोर्ड के अधिकारी ने बताया,"श्री माता वैष्णो देवी यात्रा जो रविवार से शुरू होने वाली थी, भवन और मार्गों पर लगातार बारिश के कारण अगले आदेश तक पुनः

- **नवरात्रि के दौरान निर्बाध तीर्थ यात्रा सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त बैठक।**

स्थगित की गई है।" उन्होंने कहा श्रद्धालुओं से निवेदन है कि आधिकारिक संचार तंत्र के जरिये जानकारी प्राप्त करते रहें। 26 अगस्त को अधकुवारी में इंद्रप्रस्थ भोजनालय के पास भारी बारिश से आये भूस्खलन में कम से कम 34 लोगों ने अपनी जान गंवा दी थी, जिसमें अधिकतर श्रद्धालु थे और कई अन्य घायल हो गये थे।

कटरा के आध्यात्मिक विकास केंद्र में 13 सितंबर को श्री माता वैष्णो देवी मंदिर बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सचिन कुमार वैश्य की अध्यक्षता में एक संयुक्त बैठक की गयी, जिसमें 22 सितंबर से चलने वाली नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्रि के दौरान निर्बाध तीर्थयात्रा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डिवाइडर से टकरा कर रिंग रोड से कार नीचे गिरी, सात की मौत

हरिद्वार में अस्थी विसर्जन कर लौटते समय कार सवारों के साथ यह हादसा हुआ

जयपुर, 14 सितंबर। शिवदासपुरा थाना इलाके में एक तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर रिंग रोड से नीचे गिर गई। हादसे में कार में सवार दो परिवार के सात लोगों की मौत हो गई। मृतकों में दो बच्चे और दो महिलाएं भी शामिल हैं। हादसा थाना इलाके में प्रहलादपुरा के पास शनिवार देर रात हुआ।

रविवार दोपहर को जब लोगों को अंडरपास में भरे पानी में क्षतिग्रस्त कार उलटी पड़ी दिखाई दी उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने क्रेन की मदद से कार को बाहर निकाल कर कार में फंसे सातों लोगों

- **शिवदासपुरा थाना इलाके में प्रहलादपुरा के पास अंडर पास के पानी में उलटी पड़ी कार को पुलिस ने क्रेन से बाहर निकाला तो कार में सवार सातों मृत पाये गये।**

के शवों को पोस्टमार्टम के लिए महात्मा गांधी हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया तथा मृतकों के परिजनों को सूचना दी गई।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज वर्मा, एसीपी चाकसू सुरेन्द्र सिंह सहित अन्य अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। प्राथमिक जांच में सामने आया है कि रिंग रोड से नीचे अंडरपास में भारी जलभराव के कारण कार नाले में पलट गई।

एसीपी चाकसू सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि वाटिका सांगानेर निवासी रामराज वैष्णव (38), पत्नी मधु (36) और बेटे रुद्र (14 महीने) और फुलियाकलां (भीलवाड़ा)

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बीस सीटें नहीं दीं, तो 100 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे

केन्द्र सरकार में मंत्री जीतनराम मांझी की घोषणा ने एनडीए में खलबली मचाई

गयाजी, 14 सितंबर। केंद्र की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के मंत्री और हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) के प्रमुख जीतन राम मांझी ने बिहार की राजनीति में खलबली मचा दी है। लोकसभा चुनाव के कुछ समय पहले महागठबंधन से निकल कर एनडीए में लौटे जीतन राम मांझी ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए सीट बंटवारे केा लेकर बड़ा बयान दिया है। मांझी ने कहा कि उनकी पार्टी को अगर 20 सीटों पर मौका नहीं दिया गया तो वह 100 प्रत्याशियों को मैदान में उतारेंगे।

केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने कहा कि वह एनडीए के प्रति समर्पित हैं और लोकसभा चुनाव में भी हर बात स्वीकार की थी। इस गठबंधन में प्रतिष्ठा मिली है, लेकिन हमारे मेहनत करने वाले कार्यकर्ताओं की भी कुछ उम्मीदें हैं। यह उम्मीदें पूरी करने का बिहार विधानसभा चुनाव एक मौका है और हम एनडीए को जिताने के लिए हर तरह

- **मांझी ने कहा कि वे चाहते हैं, हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा हर हाल में बिहार में मान्यता प्राप्त दल बने। इसके लिए विधानसभा में 8 सीटें या कुल मतदान का 6 प्रतिशत वोट चाहिए।**

से ताकत झोंकने को तैयार भी हैं। लेकिन, इस बार चुनाव में एनडीए के अंदर हमें बिहार की 20 सीटें चाहिए। हमने यह मांग रखी है। बात कर रहे हैं। लेकिन, अगर बात नहीं बनी तो 100 सीटों पर भी प्रत्याशी उतार सकते हैं।

मांझी ने कहा कि अगर मान लिया जाए हमको हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा अधिकृत करता है, तो हम जरूर फैसला लेंगे। फैसला में हमारा एक ही चीज है कि हम चाहते हैं, हमारा हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा हर हालत में मान्यता प्राप्त कर ले। मान्यता प्राप्त करने के लिए हमको 8 सीट विधानसभा में चाहिए या पोलिंग का 6 प्रतिशत टोटल वोट चाहिए। हमारे साथ दो परिस्थिति हैं। आठ सीट जीतने के लिए हमको काम से कम 15 से 20 सीट मिलेगा तभी ना हम इस दायरे में आ सकते हैं। हम सभी सीट तो जीत जाएंगे, ऐसा तो है नहीं। अगर 60 प्रतिशत स्कोरिंग सीट माना जाए तो भी कहा जाएगा। तब 15 सीट की बात आती है। अगर 15 सीट हमको मिलेगा और 8 सीट जीत जाएंगे तो एक प्रावधान यह है।

नहीं तो हम भी 50 या 100 सीट पर लड़ेंगे। बिहार में हर जगह हमारा दस हजार और 15 हजार वोटर है। जीत करके 6 प्रतिशत हम वोट ले आएंगे और हम मान्यता प्राप्त कर लेंगे। दस वर्ष हमारी पार्टी का हो गया। निबंधित पार्टी रहने में हम अपमानित समझते हैं। इसलिए इस बार करो या मरो का लोगों का यह मुद्दा है।

सेवानिवृत्त आईएएस अमित खरे उपराष्ट्रपति के सचिव नियुक्त

नई दिल्ली, 14 सितंबर। कैबिनेट की अपॉइंटमेंट कमेटी ने सेवानिवृत्त आईएएस अमित खरे को उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन के सचिव के रूप में नियुक्ति को मंजूरी दी है। खरे 1985 बैच के झारखंड कैडर के आईएएस अधिकारी रहे हैं। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने रविवार को आदेश जारी किया है, जिसके मुताबिक, खरे की नियुक्ति पदभार ग्रहण करने की तिथि से तीन साल के लिए

- **वर्तमान में वे प्रधानमंत्री के सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं।**

अनुबंध के आधार पर होगी। खरे की छवि एक ईमानदार अधिकारी की रही है और उन्हें चारा घोटाले का पर्दाफाश करने में उनकी भूमिका के लिए भी जाना जाता है। इस नियुक्ति से पहले खरे 12 अक्टूबर 2021 से प्रधानमंत्री के सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं और प्रधानमंत्री कार्यालय में सामाजिक क्षेत्र से संबंधित मामलों को संभाल रहे हैं। खरे ने केंद्र और राज्य सरकारों में कई प्रमुख पदों पर भी कार्य किया है।

अमित खरे को 31 मई 2018 को भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण सचिव के पद पर नियुक्त हुए और इसके बाद स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता सचिव और उच्च शिक्षा सचिव के रूप में कार्य किया। खरे राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को तैयार करने और लागू करने वाली मुख्य टीम का हिस्सा थे।

मराठा आरक्षण के विरोध में ओबीसी-बंजारा व आदिवासी एकजुट हुए

मराठा समुदाय को कुनबी जाति प्रमाण पत्र देने से अनुसूचित जाति-जनजाति व ओबीसी वर्ग चिन्तित

जालना, 14 सितंबर। महाराष्ट्र में अब मराठा आरक्षण का विरोध तेज हो गया है। मराठों को आरक्षण देने के लिए जारी सरकारी आदेश के विरोध में जालना जिले में ओबीसी-बंजारा और आदिवासी संगठन ने विरोध प्रदर्शन की तैयारी की है। संगठनों का कहना है कि राज्य सरकार जब तक मराठा आरक्षण गवरमैंट रैजोल्यूशन (जी.आर.)को वापस नहीं लेती, तब तक विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

मराठा समुदाय के सदस्यों को कुनबी जाति प्रमाण पत्र और कोटा प्राप्त करने की अनुमति देने वाले हैदराबाद राजपत्र के कार्यान्वयन से अनुसूचित जातियों, जनजातियों और अन्य पिछड़ा वर्गों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। कुनबी एक कृषि प्रधान समुदाय, महाराष्ट्र में ओबीसी वर्ग का हिस्सा है।

बंजारा संगठन गोर सेना के

- **धाराशिव निवासी बंजारा स्नातक ने शनिवार को एसटी आरक्षण की मांग पर आत्महत्या की। ओबीसी नेताओं ने 10 अक्टूबर को नागपुर में एक विशाल मोर्चा निकालने का संकल्प लिया है।**

अध्यक्ष संदेश चव्हाण ने कहा कि हमें अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया था और हैदराबाद राज्य में आरक्षण प्राप्त था। हम चाहते हैं कि हमारे समान अधिकार बहाल हों।

धाराशिव निवासी 32 वर्षीय बंजारा स्नातक ने शनिवार को आत्महत्या कर ली। उसने अपने पीछे एसटी आरक्षण की मांग करते हुए एक नोट छोड़ा था। ग्यारह सितंबर से बंजारा युवा जालना कलेक्टर कार्यालय के बाहर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं। जबकि वरिष्ठ नेता हरिभाऊ राठौड़ ने 15 सितंबर को जालना और बीड में मार्च निकालने की घोषणा की है।

आदिवासी संगठनों ने बंजारा समुदाय की मांग का विरोध किया है और दावा किया है कि बंजारा समुदाय को विमुक्त जाति और घुमंतू जनजाति (वीजेएनटी) खंड के तहत पहले से ही 3 प्रतिशत कोटा का लाभ मिल रहा है। ओबीसी कार्यकर्ता नवनाथ वाघमारे और सतसुंग मुंधे ने चेतावनी दी कि आरक्षण बढ़ ाने से ओबीसी श्रेणी में पहले से सूचीबद्ध 374 जातियों के अधिकार खतरे में पड़ जाएंगे। ओबीसी नेताओं ने 10 अक्तूबर को नागपुर में एक विशाल मोर्चा निकालने का संकल्प लिया है।

वहीं मराठा क्रांति मोर्चा के राज्य समन्वयक संजय लाखे पाटिल ने भी जारंगे के खिलाफ बोलते हुए दावा किया है कि उन्हें हैदराबाद राजपत्र के बारे में कोई गहन जानकारी नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि केवल कुनबी रिकॉर्ड वाले मराठों को ही लाभ मिलेगा। सरकार मराठों को धोखा दे रही है।

मराठवाड़ा क्षेत्र हैदराबाद के निजाम के अधीन था। उनके प्रशासन ने राजपत्र में जातियों और व्यवसायों का दस्तावेजीकरण किया था। 1918 में मराठों को शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण दिया गया था। जो एक ऐसी मिसाल है जिसका इस्तेमाल अब उनके ओबीसी दावे के समर्थन में किया जा रहा है। उस समय निजाम का शासन 17 जिलों पर था, जिनमें से पांच, औरंगाबाद, बीड, नांदेड़, परभणी और उस्मानाबाद, बाद में महाराष्ट्र का हिस्सा बन गए।

'संगीतकार इलैयाराजा को भारत रत्न दें'

चेन्नई, 14 सितंबर। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने केंद्र सरकार से महान संगीतकार इलैयाराजा को भारत रत्न से सम्मानित करने का आग्रह किया है।

राज्य सरकार द्वारा रविवार को चेन्नई में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा "मैं यह

- **मुख्यमंत्री स्टालिन ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया।**

अनुरोध केवल फिल्म उद्योग में इलैयाराजा के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में नहीं कर रहा हूं, मैं ऐसा तमिलनाडु के लोगों की ओर से भी नहीं, बल्कि विश्व भर में उनके प्रशंसकों की ओर से भी कर रहा हूं।"

उन्होंने घोषणा की कि राज्य सरकार संगीत के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वाले युवा संगीतकारों के लिए उनके नाम पर एक वार्षिक अवार्ड "इसैग्नानी इलैयाराजा पुरस्कार" देगी। संगीतकार की महानता को याद करते हुये मुख्यमंत्री ने जिक्र करते हुए कहा कि वे इलैयाराजा के लंदन दौरे से पहले उनके घर उन्हें सम्मानित करने गये थे। गौरतलब है इलैयाराजा ने लंदन के प्रसिद्ध रॉयल फिलहारमोनिक ऑर्केस्ट्रा में अपनी प्रस्तुति दी थी। उन्होंने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सेमीकंडक्टर, बायोएथनॉल तथा ईंधन संयंत्रों से असम का विकास होगा : मोदी

प्रधानमंत्री ने रिफायनरी संयंत्र के उद्घाटन के बाद विशाल जनसभा को संबोधित किया

नुमालीगढ़ (असम), 14 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि असम का विकास उनकी सरकार की प्राथमिकता है और राज्य में सेमीकंडक्टर संयंत्र, बायोएथेनॉल तथा ईंधन संयंत्रों के जरिये असम को देश के विकास का आधारबनाया जाएगा।

मोदी ने पूर्वोत्तर के दो दिन के दौरे के आखिर दिन रविवार के यहां रिफाइनरी संयंत्र का उद्घाटन करने के बाद विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए आज के दिन को असम के लिए ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि असम को आज 18 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाएं दी गई हैं। असम में जहां प्लास्टिक के समान को आधुनिक तरीके से तैयार करने के लिए पोलीप्रोपाईलीन

- **प्रधानमंत्री ने कहा कि विशेषज्ञों के अनुसार, हमारे समुद्री क्षेत्र में ईंधन का भंडार है और उसके दोहन के लिए हम तेजी से कदम उठा रहे हैं।**
- **मोदी ने कहा कि वाराणसी के बाबा विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर की तरह माता कामाख्या मंदिर का कॉरिडोर विकसित किया जा रहा है।**

संयंत्र दिया गया है वहीं बायोएथानाल तथा रिफाइनरी को आधुनिक बनाने के संयंत्र दिए गए हैं। उनका कहना था कि सेमीकंडक्टर निर्माण के क्षेत्र में असम को विकास के आधार का महत्वपूर्ण सहयोगी बनाया जा रहा है।

मोदी ने कहा कि जैसे-जैसे भारत तेजी से विकसित हो रहा है उसके लिए गैस, बिजली, ईंधन की जरूरत बढ़े गी। इसलिए हम अब ईंधन क्षेत्र में और स्वच्छ ऊर्जा के लिए अपने सामर्थ्य को नई दिशा दे रहे हैं। हमारे समुद्री क्षेत्र में विशेषज्ञों के अनुसार ईंधन का भंडार है उसके दोहन लिए हम तेजी से कदम उठा रहे हैं। सौर ऊर्जा के मामले में हम तेजी से आगे बड़े हैं और हम दुनिया के प्रमुख देशों में शामिल हो गए हैं।

उन्होंने कहा कि असम में जो बायोएथनॉल संयंत्र लगाया गया है उससे यहां किसानों को फायदा होगा और किसानों को खेती करने में मदद मिलेगी। उनका कहना था कि असम में हर साल 200 करोड रुपए किसानों के हित में खर्च किये जाएंगे।

उन्होंने कामाख्या मंदिर का जिक्र करते हुए कहा कि माता कामाख्या के मंदिर में कॉरिडोर विकसित किया जा रहा है। यह कॉरिडोर ठीक उसी तरह से होगा जैसा वाराणसी में बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर का निर्माण किया गया है। इससे श्रद्धालुओं को माता के दर्शन में आसानी होगी। पॉलीप्रोपाईलीन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इससे प्लास्टिक का सामान बनता है जो हर घर में इस्तेमाल होता है। केंद्र सरकार ने असम को आत्मनिर्भर बनाने के लिए गोलाघाट में पोलीप्रोपाइलीन संयंत्र बनाया जा रहा है जिससे आधुनिक तकनीकी से इसका यहां निर्माण होगा। मोदी ने गोलाघाट में पालीप्रोपाइलीन संयंत्र का वर्चुअल उद्घाटन भी किया। समारोह को पेट्रोलियम मंत्री हरजीत सिंह तथा असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने भी संबोधित किया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोनोवाल सहित कई प्रमुख लोग मौजूद थे।

कांस्टेबल भर्ती : भतीजे की जगह परीक्षा देने पहुँचा चाचा गिरफ्तार

जयपुर, 14 सितंबर। मुरलीपुरा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए राजस्थान पुलिस की कांस्टेबल भर्ती-2025, के तहत एक डमी कैंडिडेट को गिरफ्तार किया है, जो अपने भतीजे की जगह पुलिस कांस्टेबल भर्ती का पेपर देने पहुंचा था। आरोपी बायोमेट्रिक जांच के दौरान पकड़ा गया। आरोपी चाचा भूपेंद्र और भतीजे धर्मवीर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने

- **पुलिस जाँच के अनुसार, आरोपी अपने भतीजे की जगह पहले भी कई प्रतियोगी परीक्षा दे चुका है।**

आया कि आरोपी अपने भतीजे की जगह डमी कैंडिडेट बनकर पहले भी कई प्रतियोगिता परीक्षा दे चुका है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) ने बताया कि मुरलीपुरा के शहीद हिम्मत सिंह सीनियर सेकेंडरी स्कूल में राजस्थान पुलिस कांस्टेबल भर्ती का परीक्षा सेंटर था। जिसमें आरोपी भूपेंद्र गुर्जर का रोल नंबर व सेंटर कोड व सेंटर का नाम सहित बायोमेट्रिक कैप्चर व फोटो पाया गया। बायोमेट्रिक में पाया गया कि वह महावीर वर्धमान ओपन यूनिवर्सिटी की ओर से आयोजित परीक्षा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

श्वास की क्रिया के समान हमारे चरित्र में एक ऐसी सहज क्षमता होनी चाहिए। जिसके बल पर जो कुछ प्राप्य है वह अनायास ग्रहण कर लें और जो त्याज्य है वह बिना क्षोभ के त्याग सकें। –टैगोर

बेहतर कल की तरफ बढ़ता हमारा देश

भारत में हर दस बरस में जनगणना होती रही है। जनगणना से जो जानकारियां प्राप्त होती हैं उनका उपयोग देश की अद्यावधि प्रगति का आकलन करने के लिए तथा भावी योजनाओं के निर्माण के लिए होता है। हमारे देश में अब तक आखिरी दफा जनगणना सन् 2011 में हुई थी। इसके बाद वाली जनगणना सन् 2021 में होनी थी परंतु कोविड महामारी के कारण इसे स्थगित करना पड़ा। अब कोविड तो अतीत हो चुका है परंतु जनगणना की कोई आहट सुनाई नहीं दे रही है। कुछ अपुष्ट सूत्रों के अनुसार देश की आगामी दशकीय जनगणना सन् 2026-27 में हो सकती है। लेकिन इस बीच अन्य अनेक सूत्रों से विभिन्न जानकारियां प्राप्त होती रहती हैं जो हमें अपने देश के वर्तमान और भविष्य के बारे में विचार करने के लिए प्रामाणिक स्त्रोत उपलब्ध कराती हैं। ऐसी ही कुछ जानकारियां हमें रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इण्डिया द्वारा ज़ारी सेंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (संक्षेप में एसआरएस) की सन् 2023 की रिपोर्ट से मिली हैं। बता दूं कि सन् 2023 की यह रिपोर्ट सितम्बर, 2025 में ज़ारी हुई है इसलिए यही नवीनतम रिपोर्ट है। यहीं यह भी बता दूं कि भारत सरकार के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त द्वारा करवाया जाने वाला यह सर्वेक्षण दुनिया के सबसे विशाल जनसांख्यिकी सर्वेक्षणों में एक माना जाता है।

इस एसआरएस रिपोर्ट में भारत और इसके राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के लिए मुख्यतः जन्म दर, मृत्यु दर, प्राकृतिक विकास दर और शिशु मृत्यु दर की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है। कहना अनावश्यक है कि जनगणना के आंकड़ों के अभाव में ये आंकड़े भी हमें अपने देश की प्रगति और भावी योजनाओं के बारे में विचार करने में सहायक साबित होंगे। इस रिपोर्ट से सबसे अहम जानकारी तो यह मिलती है कि देश ने अपनी जनसंख्या वृद्धि पर काबू पाने में भारी सफलता प्राप्त की है। इस रिपोर्ट के अनुसार, पिछले पांच दशकों में देश की जन्म दर में भारी कमी आई है। 1971 में जन्म दर 36.9 थी जो 2023 में घटकर 18.4 रह गई है। केवल इतना ही नहीं शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की जन्म दर के बीच का फासला भी काफी कम हुआ है। पांच दशक पहले ग्रामीण क्षेत्रों की जन्म दर शहरी क्षेत्रों की जन्म दर की तुलना में बहुत ज़्यादा थी। अब ऐसा नहीं रह गया है, हालांकि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म दर अभीभी ज़्यादा है। सन् 2023 की रिपोर्ट के अनुसार देश में सर्वाधिक जन्म दर 25.8 बिहार में है जबकि सबसे कम जन्म दर 10.1 अंडमान निकोबार में है। हम अपने राजस्थान की बात करें तो यहां जन्म दर 22.9 है। शहरी क्षेत्रों में यह 20.1 है तो ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ अधिक, 23.9 है। जन्म दर की गणना के साथ-साथ लिंगानुपात की गणना भी की जाती है। लिंगानुपात का आशय यह होता है कि प्रति एक हज़ार पुरुष शिशुओं के सामने कितनी बालिका शिशु हैं। सन 2020-22 में जहां यह अनुपात 914 था वहां 2023 में यह बढ़कर 917 हो गया है। शहरी क्षेत्रों में यह संख्या 925 है जबकि ठाामीण क्षेत्रों में 914 ही है। सर्वाधिक छत्तीसगढ़ में 974 है तो सबसे कम उत्तराखण्ड में 868 है। इसका आशय यह है कि अब पहले की तुलना में ज़्यादा बच्चियां इस दुनिया में आ रही हैं। भारत में गर्भ में लिंग परीक्षण और कन्या भ्रूण हत्या की चर्चाओं के संदर्भ में यह वृद्धि उत्साहवर्धक है।

सारी अन्य बातों के देश एक बेहतर कल की तरफ बढ़ रहा है। हो सकता है उसके बढ़ने की गति हमारी अपेक्षाओं से कम हो, यह निश्चित है कि वह बढ़ रहा है। हम यही कामना कर सकते हैं कि आगे बढ़ने की यह गति और अधिक तेज़ हो और हमारी सरकारें इस मानव संसाधन का अधिक सार्थक उपयोग करे और इस आबादी को बेहतर ज़िंदगी देने के अपने प्रयासों को और अधिक गति दे।

जन्म दर की चर्चा मृत्यु दर की चर्चा के बग़ैर अधूरी है। असल में तो जन्म दर और मृत्यु दर दोनों को मिलाकर ही यह समझा जाता है कि जनसंख्या बढ़ रही है या घट रही है। मृत्यु दर की गणना के परिणाम को ऐसे समझा जाना चाहिए कि किसी एक ख़ास इलाके में प्रति एक हज़ार लोगों में से कितने काल का ग्रास बन रहे हैं, वही वहां की मृत्यु दर कहलाती है। यह जानना सुखद है कि पिछले पांच दशकों में हमारे देश में मृत्यु दर में भी काफी कमी आई है। इसका श्रेय बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं, स्वास्थ्य के प्रति लोगों की बढ़ी हुई जागरूकता और बेहतर जीवन स्थितियों को दिया जा सकता है। 1971 में देश में मृत्यु दर 14.9 थी जो 2023 में घटकर 6.4 रह गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह इसी अवधि में 7.2 से घटकर 6.8 और शहरी क्षेत्रों में 6.0 से 5.7 हुई है। अपने राजस्थान में वर्तमान मृत्यु दर 5.9 है। शहरों में यह 5.6 है तो ग्रामीण क्षेत्रों में 6.0 है। 2023 में सर्वाधिक मृत्यु दर 8.3 छत्तीसगढ़ में तो सबसे कम 4.0 चंडीगढ़ में पाई गई है। और जब हम मृत्यु दर की बात कर रहे हैं तो शिशु मृत्यु दर की चर्चा भी कर लेनी चाहिए। असल में शिशु मृत्यु दर को स्थूल रूप से किसी देश या क्षेत्र विशेष का समग्र स्वास्थ्य परिचायक तथ्य माना जाता है। किसी ख़ास इलाके में होने वाले एक हज़ार जन्मों में से एक वर्ष तक की आयु वाले कितने बच्चे काल कवलित हो जाते हैं उसी संख्या को शिशु मृत्यु दर कहा जाता है। यह देखना बहुत आश्वस्तिदायक है कि जहां 1971 में यह शिशु मृत्यु दर 129 थी वहीं 2023 में यह बहुत कम होकर मात्र 25 रह गई है। हालांकि यह संख्या भी उपेक्षणीय नहीं है, यह देखा जाना चाहिए कि हम कहां से कहां आ सके हैं। पिछले एक दशक में ही हमारी शिशु मृत्यु दर 40 से घटकर 25 हुई है। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु मृत्यु दर 28 और शहरी क्षेत्रों में 18 है। राजस्थान में यह शिशु मृत्यु दर ठाामीण क्षेत्रों में 31, शहरी क्षेत्रों में 23 और समग्रतः 29 है। देश में सर्वाधिक शिशु मृत्यु दर 37 छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में है जबकि सबसे कम शिशु मृत्यु दर केवल 3 मणिपुर में है। शिशु मृत्यु दर की एक और गणना अंडर 5 मृत्यु दर के रूप में भी की जाती है। पिछले केवल एक बरस में यह अंडर 5 मृत्यु दर 30 से घटकर 29 हो गई है। यहां यह बात ख़ास तौर पर ग़ौर तलब है कि इस उत्साह बढ़ाने वाली गिरावट के बावज़ूद यह एक त्रासद तथ्य है कि राष्ट्रीय स्तर पर कम से कम हर चालीस में से एक शिशु अपनी उम्र का एक साल पूरा होने से पहले यह दुनिया छोड़ जाता है।

इस सर्वेक्षण की कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें संक्षेप में ये हैं: सन् 2023 के सर्वेक्षण के अनुसार भारत की समग्र प्रजनन दर 1.9 है। समग्र प्रजनन दर का आशय यह है कि कोई स्त्री अपनी प्रजनन क्षमता वाले वर्षों में औसतन कुल कितने बच्चों को जन्म देगी। दूसरी बड़ी बात यह कि देश में 14 बरस तक की आयु वाले बच्चों की संख्या लगातार कम हो रही है, और इसी के बरक्स यह तथ्य भी कि कामकाजी उम्र (15 से 59) वालों की संख्या बढ़ रही है। जहां तक कामकाजी उम्र वालों की संख्या बढ़ने की बात है, 1971-81 वाले दशक में यह 53.4 प्रतिशत से बढ़कर 56.3 प्रतिशत हुई थी। इसके बाद 1991 से 2023 के बीच यह बढ़कर 66.1 प्रतिशत हो गई है। शहरी क्षेत्रों में कामकाजी उम्र के लोग 68.8 प्रतिशत हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों में उनसे थोड़े कम, 64.6 प्रतिशत हैं। सबसे ज़्यादा ये दिल्ली में हैं – 70.8 प्रतिशत जबकि सबसे कम 60.1 प्रतिशत बिहार में हैं। देश में न सिर्फ़ कामकाजी उम्र के लोगों की संख्या बढ़ रही है, बुज़ुर्गों की संख्या भी बढ़ रही है। सन् 2023 में 60 बरस से ऊपर वालों की आबादी 9.7 प्रतिशत हो गई है। ऐसी आबादी केरल में सर्वाधिक, 15.1 प्रतिशत है। जहां कामकरने वालों की संख्या का बढ़ना देश के लिए शुभ लक्षण है वहीं वृद्धों की संख्या के बढ़ने का अर्थ देश के नीति निर्माताओं के दायित्व में वृद्धि है।

इनमें से अधिकांश जानकारियां यह बताती हैं कि बावज़ूद सारी अन्य बातों के देश एक बेहतर कल की तरफ बढ़ रहा है। हो सकता है उसके बढ़ने की गति हमारी अपेक्षाओं से कम हो, यह निश्चित है कि वह बढ़ रहा है। हम यही कामना कर सकते हैं कि आगे बढ़ने की यह गति और अधिक तेज़ हो और हमारी सरकारें इस मानव संसाधन का अधिक सार्थक उपयोग करे और इस आबादी को बेहतर ज़िंदगी देने के अपने प्रयासों को और अधिक गति दे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

शतायु होने जा रहा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, पूर्णतः सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन या राजनीति में पूरा दखल

महावीर सिंह

27 सितंबर 1925 को स्थापित, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक ऐसा संगठन है जिसके संबंध में सार्वजनिक रूप से बहुत सी सही, बहुत सी गलत और बहुत सी भ्रामक सामग्री, बातें उपलब्ध है। एक साधारण से उदाहरण के लिए इसकी शाखाओं और सदस्य संख्या को ही ले ले -- इसके 40 लाख से अधिक स्वयं सेवक बताए जाते है और 70 से 80 हजार के बीच शाखाएं बताई जाती है। इसे विश्व का सबसे बड़ा स्वयं सेवक (वॉलंटियर्स का) संगठन बताया जाता है किंतु यह भी कि इसके सदस्यों का, शाखाओं की कोई अधिकृत, केंद्रीकृत सूचना कहीं मिलती नहीं है। गोपनीय रूप से होगी, सार्वजनिक तो नहीं है। यह भी अनुभव के आधार पर सही प्रतीत होता है कि जब केंद्र में या किसी प्रांत में भाजपा सरकार होती है तो शाखाओं की व स्वयं सेवकों की संख्या बहुत बढ़ती है और फिर कम भी होती रहती है। इसका एक समझ में आने आला कारण तो यह प्रतीत होता है कि कई लोग शाखा इस लिए ज्वाइन करते है कि उनके या उनके मिलने वालो के, सरकार से होने वाले काम कुछ आसानी से हो जाएं या छोटे स्तर पर कुछ लोग अपना राजनीतिक प्रभाव थोड़ा बढ़ा सकें। शाखाएं भी कई नामों वाली है जैसे प्रातः शाखाएं, सांयकालीन व मिलन शाखाएं, सप्ताह या महीने में एक बार एकत्र होकर चर्चा करने वाली शाखाएं आदि-आदि।

हर संगठन चाहे किसी कानून में पंजीकृत अथवा न हो किंतु उसकी कार्यविधि व संचालन की कोई न कोई नियमावली जरूर होती है किंतु की ऐसी नियमावली सार्वजनिक रूप से तो पढ़ने के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं है। होगी, जरूर होगी, क्योंकि इतना बड़ा संगठन, 100 वर्ष से बिना सामान्य रूप से अन्य संगठनों में जो लड़ाई-झगड़े देखने को मिलते है वैसे RSS के संबंध कभी सुनने को नहीं मिलते। इसलिए निष्कर्ष यही मानना चाहिए कि नियमावली है किंतु शायद, सामान्य आदमी के पढ़ने के लिए उपलब्ध नहीं।

मुख्य संगठन जिसे के नाम से जाना जाता है। उसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले 50 से अधिक राष्ट्र स्तर पर, अंतरराष्ट्रीय सहयोगी या आनुषंगिक संगठन है। 200 से अधिक संगठन क्षेत्रीय स्तर पर काम करते है। अनुषांगिक संगठन संघ की मुख्य विचारधार (हिंदुत्व व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद -- वो जो भी हैं!!) को ध्यान में रख कर उसी के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में काम करते है।

कुछ राष्ट्रीय स्तर के सहयोगी संगठन हैं:-- सेवा भारती, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, राष्ट्र सेविका समिति, सहकार भारती, हिंदू स्वयं सेवक संघ, लघु उद्योग भारती, स्वदेशी जागरण मंच, क्रीड़ा भारती, विद्या भारती, विवेक नंद केंद्र, भारतीय किसान संघ, अखिल भारतीय मजदूर संघ, बजरंग दल, गौ रक्षक दल आदि-आदि। कुछ लोगों का मानना है कि भारतीय जनता पार्टी भी RSS का एक सहयोगी, अनुषांगिक संगठन ही है। है या नहीं यह निष्कर्ष, व भाजपा के बड़े नेताओं के विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दों पर दिए जाने वाले बयानों से पाठक स्वयं निकाले।

विश्व हिंदू परिषद देश व अंतर्राष्ट्रीय स्तर हिंदुत्व विचारधारा के प्रचार प्रसार के लिए काम करती है।1984 में स्थापित बजरंग दल विश्व हिंदू परिषद की युवा सखा है। गौ रक्षा दल, हिंदू वाहिनी के भी RSS से संबंध हैं।

RSS के अनुसार उसके अनुषांगिक संगठन समाज के वंचित समुदायों, कमजोर आर्थिक स्थिति वालों, कच्ची बस्तियों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक जागरूकता संबंधित कार्य करते है। धार्मिक मुद्दों व हिंदुत्व के मुद्दों पर काम भी इन संगठनों के जरिए ही किया जाता है। इसके अतिरिक्त RSS के लोग एक शब्द बहुदा काम लेते है वह है प्रकल्प। इसके विभिन्न संगठन विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं और जन सहयोग से RSS के उद्देश्यों (हिंदुत्व) के अनुरूप जनोथान के प्रोजेक्ट्स चलाते है। इन्हें प्रकल्प कहते है। इनकी सही सही संख्या तो नहीं पता किंतु RSS के जानकार, प्रवक्ता व अन्य लोग 2 से 4 लाख प्रकल्प बताते रहते है। संघ का मानना है कि उनके संगठन प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्य भी करते है। करते ही होंगे किंतु अभी देश के बहुत से भाग भयंकर बाढ़ का प्रकोप झेल रहे है, करोना कि आपदा आई, इन संगठनों का कोई बड़े पैमाने पर वैसा काम देखने को नहीं मिला जैसा कई अन्य धार्मिक संगठनों यथा विभिन्न गुरुद्वारों ने किया वैसा।

RSS का एक मुस्लिम विचार मंच भी है जिसका उद्देश्य मुसलमानों कोंएए में शामिल करना है। कई बारंएए मुसलमानों से धर्म परिवर्तन कर मूल धर्म में वापसी के भी आधे अधूरे, बिना इस से उत्पन होने वाली समाजिक कलिष्ठताओं पर गहन विचार किए अस्पष्ट विचार छोड़ता रहता है।

इस संगठन से जुड़ा एक बड़ा विवाद इसके किसी सोसाइटी अथवा ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत न होना भी रहा है। इस संबंध में कोई बड़ी जानकारी मुझे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं हुई। कई बार इस संगठन के जानकारों के विचार टीवी, अखबारों में पढ़ने सुनने को मिलते है, उनके आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि RSS किसी भारतीय कानून के अनुसार पंजीकृत संस्था नहीं है। RSS के कई पुराने स्वयं सेवक कहते मिल जाएंगे कि भारतीय संस्कृति व उसके मूल्यों तथा राष्ट्रवाद जागृत करने के पुनीत कार्य करने के लिए पंजीकरण आदि के सरकारी लफ़ड़ों में फंसने की कभी कोई आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। RSS का काम बिना पंजीकरण के ज्यादा सरलता व सुविधाजनक तरीके से 100 वर्षों से चल रहा है।

हर प्रकार की सरकारों देश ने देखली, इस मुद्दे पर कोई कानूनी बाध्यता होती तो सरकारें कभी कोई आपत्ति करती नंएए पर 3,4 बार सरकारी बैन भी लग गए तो भी कुछ नहीं हुआ अर्थात स्वैच्छिक स्वयं सेवी RSS की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रवाद की गतिविधियों को चलाने के लिए किसी प्रकार के पंजीकरण की आवश्यकता नहीं। इंकमटैक्स एक्ट की धारा 10(23c) के अनुसार लाभ नहीं कमाने वाले चैरिटेबल संगठनों पर इंकमटैक्स की भी देयता नहीं बनती।

RSS जानकारों का कहना है कि जो अनुषांगिक संगठन जन हित के कार्य करते है और किसी प्रकार की बाह्य आर्थिक सहायता लेते है वे सब आवश्यक कानूनों के अनुसार सारी कानूनी औपचारिकताएं पूरी करके ही कार्य करते है। प्राप्त सहायता का लेख, अंकेक्षण सब यथा विधि पूर्ण कराए जाते है।

कुछ ऐसे मुद्दे जो RSS का कभी पीछा नहीं छोड़ते :-- 1914 से 1919 तक चला प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। उसका परिणाम था तुर्की में नया शासन, खलीफा का महत्व समाप्त, मध्य एशिया के मुस्लिम क्षेत्रों का विजेताओं के अनुरूप विभाजन, नई सीमाएं। इसका परिणाम था बड़े पैमाने पर मुस्लिम जगत में अशांति। भारत में भी इसका प्रभाव पड़ा। भारत में इस 1920 से 1930 की अवधि में कई हिंदू-मुस्लिम दंगे हुए। 1919 के जलियांवाला गोलीकांड के भयंकर नरसंहार के बाद, 1920 से 1930 का काल आजादी से पूर्व भारत के लिए एक झकझोरने वाला त्रासदियों का काल रहा है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की नई चेतना, आजादी के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, गांधीजी के रूप में भारत में RSS हिंदू मुस्लिम एकता चाहती थी। गांधीजी के रूप में देश में नया नेतृत्व पनप रहा था जिसका मूलमंत्र था अंग्रेजी सरकार से अहिंसात्मक असहयोग तथा अन्यायपूर्ण आदेशों, विदेशी माल का बहिष्कार। कुछ अतिवादी तत्व गांधीजी के इन प्रयासों के विरुद्ध थे।

इसी काल में संघ के संस्थापक हेडगेवारजी में भी कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में अपने सार्वजनिक जीवन की यात्रा शुरू की किंतु शीघ्र ही उनका गांधीजी व कांठोस की नीतियों से मोहभंग हो गया। इसकी परिणीति थी RSS का गठन। वैसे कांग्रेस ने तो 1934 में अपने सदस्यों पर, मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा के सदस्य होने पर रोक लगा दी थी। बहुत से इतिहासकारों का मानना है कि डाक्टर हेडगेवार के नेतृत्व में इक्कठे होने वाले स्वयं सेवको ने खुद को कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे स्वतंत्रता आंदोलन से दूर रखा। हेडगेवारजी की विचारधारा हिन्दुओं को संगठित करके, हिंदूधर्म विरोधी ताकतों से हिंदुओं को अपनी रक्षा करने, अपनी संस्कृति और हिंदू मूल्यों(हिंदुत्व) की रक्षा व प्रसार करने के लिए प्रेरित करना था।इसकी परिणीति हिंदू राष्ट्र के रूप में करने की थी। इसे हिंदू प्रभुत्व स्थापित करने की आकांक्षा भी कह सकते है। सही, गलत या आंशिक सही, किंतु RSS की स्थापना के समय से ही इस पर मुस्लिम विरोधी होने का आरोप लगता आया है जिसे RSS कभी नहीं मिटा पाया या राजनीतिक प्रभुत्व बनाई रखने के लिए, स्वयं इसे मिटाना चाहता नहीं।

स्थापना के समय से ही RSS पर आरोप लगा है कि आजादी के आंदोलन से संगठन ने दूरी बना के रखी, सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया और हमेशा उपनिवेशी ताकत के साथ सहयोगात्मक रुख अपनाया। यद्यपि अप्रैल 1930 के नमक सत्याग्रह में डाक्टर हेडगेवार में भाग लिया था। कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के निर्णय अनुसार 36 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाया, उसमें RSS ने भाग लिया किंतु वह अंतिम बार था। शायद RSS का मानना था कि वह जिस राष्ट्र, चरित्र निर्माण के उच्चतर उद्देश्य की प्राप्ति में लगा है उसके लिए जरूरी था कि उसका कोई काम ब्रिटिश विरोधी न लगे और सरकार उसके काम में अवरोध उत्पन्न करे।

RSS से जुड़ी कुछ अन्य धारणाएं है कि इस संगठन में संविधान सभा द्वारा अपनाए गए राष्ट्र ध्वज तिरंगे ध्वज को कभी में से स्वीकार नहीं किया। इसे अशुभ माना गया। यह संगठन इसके स्थान पर केसरिया ध्वज जो सामान्यत किसी मंदिर, धार्मिक स्थान पर देखने को मिलता है, उसे राष्ट्र ध्वज चाहते थे।इस संगठन ने अपने नागपुर स्थित मुख्यालय पर वर्ष 2000 से पहले तिरंगा फहराया भी नही,यह आरोप भी लगता है।ंएए के शीर्ष नेताओं में भारत के संविधान के लिए भी सार्वजनिक रूप से कहा कि इसमें भारतीय शास्त्रीय व सांस्कृतिक मूल्यों का कोई समावेश नहीं यह पश्चिमी देशों के संविधानों की नकल है। यह सब बातें उस समय केंएए के मुखपत्र ऑर्गनाइजर आदि में छपे लेखों के आधार पर कही जाती है।

आपने शायद यह कई बार सुना होगा कि भाजपा, RSS का ध्येय, सपना अखंड भारत स्थापित करने का है। यह कभी स्पष्ट नहीं किया जाता कि कौन सा अखंड भारत --चन्द्रगुप्त मौर्य या महान सम्राट अशोक या समुद्रगुप्त या चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य या कनिष्क या हर्ष या हम्पी का विजयनगर साम्राज्य या चोल राजाओं का साम्राज्य या किसी अन्य राजा के समय जो सीमाएं थी उन्हें अखंड भारत की सीमाएं मानकर प्रयास कर रहे है?? और एक वाक्य बोलने के अतिरिक्त क्या प्रयास किया?इसे कभी स्पष्ट नहीं किया जाता। हमेशा भ्रम बनाए रखा जाता है।

RSS शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक दिवस,ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी को, हिंदू साम्राज्य दिवस उत्सव मनाती है,क्या इसमें अखंड भारत की झलक मिलती है? विस्तार की दृष्टि से तो शिवाजी महाराजा के राज्य की सीमाएं, ऊपर उल्लेखित किसी भी साम्राज्य की तुलना में, बहुत सीमित थी। ंएए के अनुसार वह साम्राज्य सुशासन का प्रतीक था जिसमें निर्णय अमात्यों के साथ चर्चा कर सहमती से किए जाते थे। यदि मुगलों से सामना करने की बात के आधार पर कोई उत्सव मनाया जाए तो फिर महाराणा प्रताप और महाराजा सूरजमल ने भी डटकर मुगलों का सामना किया था।

RSS से या किसी से भी, एक प्रश्न है कि क्या आज के संवैधानिक भारत की तुलना में इन में से कोई भी राज्य श्रेष्ठ था और कैसे? आम आदमी को जो संवैधानिक अधिकार आज हैं वैसे किसी ओर काल खंड में थे??

एक अन्य मुद्दा जो कई बार जन चर्चा में उछला जाता है, वह है कि उस समय के आजादी के सेना नायकों ने राज्य की लालसा की जल्दबाजी में भारत का विभाजन स्वीकार किया।और क्या विकल्प हो सकता था, इसको हमेशा अस्पष्ट रखा जाता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन की हैसियत एक आर्थिक, सामरिक महाशक्ति वाली नहीं रही। उसको हिंदुस्तान से अपना बोरिया बिस्तर समेटना ही था। अंग्रेजों ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में इंडिपेंडेंस एक्ट पारित कर दिया था । उन्होंने देशी रियासतों को एक विकल्प यह भी दे दिया कि वे स्वतंत्र रह सकते थे।

560 से ऊपर देशी राज्यों के लिए ंएए के पास क्या विकल्प था? क्या उन्हें स्वतंत्र रहने दिया जाता?? क्या गांव, देहात, कच्ची बस्तियों गरीब,मजदूर किसानों को निरंकुश रजवाड़ों की दया पर ही छोड़ दिया जाता? क्या इन रजवाड़ों को विभाजन स्वीकार करने वाले नेताओं ने ही भारत संघ में शामिल होने के लिए मजबूर नहीं किया? देशी रियासतों के लोगों के प्रतिनिधियों को संविधान निर्मात्री सभी में शामिल कर के देशी रजवाड़ों को साफ संदेश दे दिया था कि वे, उनमें इतनी क्षमता नहीं है कि आजादी के जंग से जुड़ी जनता के आक्रोश को वे सहन नहीं कर पाएंगे। यह नहीं भूलना चाहिए कि देशी रियासतों की राजव्यवस्था उस समय के अभिजात वर्ग की अत्यंत अनुकूल थी और गरीब जनता के पास कोई अधिकार नहीं थे या नुमाइशी तोर पर नाम मात्र थे। हिंदू महासभा में इसी अभिजात वर्ग के लोग जी थे।

वैसे कुछ निष्पक्ष इतिहासकारों का मानना है कि भारत विभाजन के लिए ब्रिटेन, हिंदू महा सभा के अग्रणी नेता, जिन्ना और मुस्लिम लीग वो दामोदर सावरकर के द्वि राष्ट्र के विचार या हिंदू-मुस्लिन दो राष्ट्र के विचार दोषी थे?

कुछ लोग प्रश्न पूछ लेते है, RSS में महिलाओं का क्या स्थान है? RSS के जानकार केवल यह कहते है कि महिलाओं के लिए महिला राष्ट्र सेविका समिति अनुषांगिक संगठन है। किंतु यह इसका उतर नहीं हो सकता कि क्या कभी कोई महिलांएए की सरसंघ चालक या सहकार्यवाह बन सकती हैं क्या??

इसी प्रकार पूछने वाले तो पूछते ही रहते है कि सरसंघ चालक का चयन कैसे होता है? आज से करीब 6,7 साल पहले दिल्ली के विज्ञान भवन में RSS के बारे में जानकारी देने के लिए एक कार्यक्रम था। उसमें यही प्रश्न श्री मोहन भागवत जी से पूछा गया था। उनका उतर था.....किसी में मेरा चयन किया, किसी को मैं चुन लूंगा.....खैर यह रस का आंतरिक मामला है और स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि सरसंघचालक का चुनाव वर्तमान सरसंघ चालक के मनोनयन को प्रतिनिधि सभा द्वारा अनुमोदन (जो मात्र औपचारिकता होती है) से होता है। पद की कोई समयावधि नहीं होती। जब सरसंघ चाहेंगे तब वे स्वयं पद छोड़ देते है। इसी प्रकार समय समय पर कुछ ओर भी विचार उछाले जाते है जैसे हिंदुओं, मुसलमानों का DNA एक ही है, हिंदुस्तान में रहने वाला हर आदमी हिंदू है, हिंदुओं की वजह से ही भारत धर्म निरपेक्ष है वगैरा। लगातार अस्पष्ट, भ्रामक बयान देते रहना RSS की सोची-समझी रणनीति होती है ताकि राजव्यवस्था में हिंदुओं और मुख्यत पूर्व वाले अभिजात वर्ग का प्रभुत्व बना रहे।

–महावीर सिंह, पूर्व आई ए एस

त्यौहार के अवसर पर यात्रियों की सुविधा के लिये विशेष ट्रेनों का संचालन

कोटा, (निसं)। त्यौहारी मौसम में यात्रियों की सुविधा एवं अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए रेलवे प्रशासन द्वारा गांधीधाम-सियालदह-गांधीधाम के बीच सुपरफास्ट विशेष ट्रेन का संचालन किया जा रहा हैं।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि गाड़ी संख्या 09437 गांधीधाम-सियालदह का संचालन दिनांक 17, 24 सितम्बर एवं 1, 8 अक्टूबर 2025 को 4 फेरों के लिए किया जाएगा। यह ट्रेन गांधीधाम स्टेशन से प्रत्येक बुधवार शाम 18.25 बजे प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन मार्ग में गुरुवार को 7.38 बजे भवानीमंडी, 8.03 बजे रामगंजमंडी, 9.10 बजे कोटा, 11.30 बजे गंगापुर सिटी एवं 13.28 बजे बयाना स्टेशनों पर ठहरते हुए शुक्रवार 16.15 बजे सियालदह पहुंचेगी।

इसी प्रकार गाड़ी संख्या 09438 सियालदह-गांधीधाम का संचालन दिनांक 20, 27 सितम्बर एवं 4, 11 अक्टूबर 2025 को कुल 4 फेरों के लिए किया जाएगा। यह ट्रेन सियालदह स्टेशन से प्रत्येक शनिवार प्रातः 5.15 बजे प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन मार्ग में रविवार को 5.45 बजे बयाना, 7.40 बजे गंगापुर सिटी, 10.25 बजे कोटा, 11.37 बजे रामगंजमंडी एवं 12.07 बजे भवानीमंडी स्टेशनों पर ठहरते हुए सोमवार तड़के 2.00 बजे गांधीधाम पहुंचेगी। यह गाड़ी रास्ते में दोनों दिशाओं में गांधीधाम, समाखियाली, ध्रांगध्रा, अहमदाबाद, छायापुरी, गोधरा, रतलाम, नागदा, भवानीमंडी, रामगंजमंडी, कोटा, गंगापुर सिटी, बयाना, ईदगाह, टुंडला, कानपुर, प्रयागराज, मिर्जापुर, पं.दीन दयाल उपाध्याय जं., भबुआ रोड, सासाराम, डेहरी-ऑन-सोन, अनुग्रह नारायण रोड, गया, कोडरमा, हजारीबाग रोड, पारसनाथ, गोमो, धनबाद, आसनसोल, दुर्गापुर, बर्द्धमान एवं सियालदह स्टेशनों पर ठहराव लेकर गंतव्य को जाएगी। कोच संरचना-इस विशेष ट्रेन में 5 शयनयान श्रेणी, 10 वातानुकूलित तृतीय श्रेणी एवं 01 वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी के डिब्बों सहित कुल 18 डिब्बे होंगे।

धनसोटी गांव में मृत्युभोज पर रोक लगाने का निर्णय

■ **ग्रामीणों ने सामाजिक सुधार का निर्णय लिया**

भरतपुर, (निसं)। महाराजा जवाहर सिंह स्मारक समिति भरतपुर ने तहसील कुम्हेर के गांव धनसोटी में मृत्युभोज रोकने की पहल की तथा बैठक में मृत्युभोज नहीं करने की निर्णय लिया गया। समिति के मीडिया प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने बताया कि गांव धनसोटी के जल सिंह फौजदार के पिता का स्वर्गवास हो गया था, जिसके लिए गांव वाले मृत्युभोज करने का मनोवैज्ञानिक दबाव बना रहे थे। उनका कहना था कि स्वर्गवासी पिता ने जिन्दगी भर कमाया, बच्चों का पालन-पोषण किया और सब कुछ यहीं छोड़ गये, इसलिए उनकी आत्मशान्ति के लिए मृत्युभोज करना आवश्यक है। समिति के हीरासिंह आर्य, ओमप्रकाश सोगरवाल व थान सिंह सोलंकी ने कहा कि परिजन की मृत्यु से परिवार में शोक होता है तथा मृत्युभोज के खर्चे के कारण गरीब लोगों की सम्पत्ति भी बिक जाती है अथवा कर्ज हो जाता है, जिसे कई सालों तक चुकाना पड़ता है। मृत्युभोज के बजाय स्वर्गवासी की याद में जन सुविधा के लिए विद्यालय में कक्षा कक्ष अथवा सामुदायिक भवन आदि बनवाये जा सकते हैं। इस पर समस्त ग्रामीणों ने सहमति दी तथा मृत्युभोज रोकने का निर्णय किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 15 सितम्बर, 2025

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, मृगशिरा नक्षत्र प्रातः 7:32 तक, व्यतिपात योग रात्रि 3:34 तक, तैतिल करण दिन 3:19 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-तुला, बुध-सिंह, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग योग सूर्योदय से प्रातः 7:32 तक है। आज मृत नवमी, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतीना श्राद्ध, व्यतिपात पुण्य है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:47 तक, शुभ 9:14 से 10:51 तक, चर 1:54 से 3:25 तक, लाभ-अमृत 3:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:16, सूर्यास्त 6:28

मेष
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद और स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब होने का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सार-समाचार

दाता में बैडमिंटन प्रतियोगिता शुरू

सांचौर, (कासं)। उपखण्ड के दाता ग्राम पंचायत के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रविवार से 69वीं जिला स्तरीय बैडमिंटन खेलकूद प्रतियोगिताओं का आगाज रंगारंग कार्यक्रम के साथ हुआ। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक नारायण सिंह देवल रहे। उनके साथ एडीपीसी समग्र शिक्षा जालोर शिक्षा विभाग के मनोहरलाल गोदारा व सीबीईओ भवरलाल विश्नोई व प्रतियोगिता सचिव रामनिवास विश्नोई,सरपंच प्रतिनिधि अमलूराम माजूं,भाजपा नेता मोतीराम चौधरी, ईश्वरलाल मांझू पूर्व सरपंच, प्रतियोगिता संयोजक दीपाशंकर शर्मा सहित कई गणमान्य विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन रहे। अतिथियों ने खेल ध्वज फहराकर और खिलाडयों को शपथ दिलाकर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। खिलाडियों से परिचय भी प्राप्त किया। कार्यक्रम में स्कूली छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से समां बांधा। मुख्य अतिथियों ने कहा कि खेल जीवन में अनुशासन और स्वास्थ्य का आधार हैं। एडीपीसी मनोहरलाल गोदारा ने खिलाडियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेलों से नेतृत्व क्षमता और अनुशासन का विकास होता है। साथ ही जीवन में संघर्ष की भावना भी विकसित होती है। प्रतियोगिता संयोजक शर्मा ने बताया कि बालक वर्ग में 31 एवं बालिका वर्ग में 18 टीमो के कुल 196 प्रतिभागी दमखम दिखायेंगे। उद्घाटन मैच में शैमफोर्ड फ्यूचर स्कुल जालोर व भोडो की ढाणी धानोल के बीच हुआ जिसमें शैमफोर्ड फ्यूचर स्कूल जालोर विजेता रही। संस्था प्रधान ने बताया कि प्रतिभागियों एवं मेहमानों के लिये चार दिवस भोजन एवं जलपान की व्यवस्था दाता ग्राम वासियों के द्वारा की गई।

जिला स्तरीय टेबल टेनिस का शुभारंभ

जालोर, (कासं)। 69 वीं जिला स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता का रविवारको चिरंजीलाल दवे जिलाध्यक्ष टेबल टेनिस संघ जालोर के मुख्य आतिथ्य में रा. बा. उ. मा. वि. प्रताप चौक में शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ । तत्पश्चात अतिथियो का स्वागत विद्यालय स्टाफ द्वारा किया गया। आयोजक सचिव तथा प्रधानाचार्य ज्ञानी राठौड द्वारा प्रतियोगिता की जानकारी देते हुए बताया गया कि जिलास्तरीय इस प्रतियोगिता में 17 व 19 वर्ष छात्र व छात्रा वर्ग की कुल 33 टीमों के रूप में कुल 138 खिलाडी भाग ले रहे है, जो 14 सितम्बर से 17 सितम्बर तक अपने खेल कौशल का प्रदर्शन करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप उद्बोधन देते हुये चिरंजीलाल दवे ने सभी खिलाडियों को खेल भावना से खेलते हुए राज्य स्तर पर जाकर जालोर का नाम रोशन करने की बात कही। विशिष्ट अतिथि मुकेश कुमार सोलंकी सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी ने खिलाडियों से मेहनत के साथ अपनी प्रतिभा को निखारने की बात कही। अध्यक्षता कर रहे अतिरिक्त जिला शिक्षाधिकारी (माध्यमिक) नरेन्द्र कुमार परमार ने शिक्षा विभागीय नियमों की पालना करते हुये निर्णायक से निष्पक्ष निर्णय देने का कहा। विद्यालय की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्य म की प्रस्तुति भी दी गई। खिलाडियो द्वारा खेल भावना व सौहार्दपूर्वक खेलने की शपथ छात्रा जानवी के नेतृत्व में ली गई। संचालन स्थानीय व्याख्याता नरपत लाल आर्य द्वारा किया गया। नोडल अधिकारी मदनलाल सुन्देशा प्रधानाचार्य राउमावि शहरी ,वरिष्ठ भाजपा नेता गणपत सिंह बगैडिया, ग्रेनाइट व्यवसायी धर्मपाल सिंह , एसडीएमसी सदस्य मधु भाटी, विवेक शर्मा एयटेल भारती फाउंडेशन सहित विद्यालय स्टाफ, छात्र व छात्रा खिलाडी उपस्थित थे।

जोधपुर में शहरी सेवा शिविर 17 से

जोधपुर, (कासं)। राज्य सरकार के आदेशों के क्रम में जोधपुर विकास प्राधिकरण आयुक्त उत्साह चौधरी के निर्देशन में जोधपुर विकास प्राधिकरण द्वारा 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक आयोजित शहरी सेवा शिविर 2025 का शिविर कार्यक्रम जोनवार जारी किया जा चुका है। शिविरों का आयोजन समय प्रातः 9:30 बजे से ०6 बजे तक जेडीए कार्यालय प्रांगण में ही किया जाएगा। प्राधिकरण द्वारा सोमवार एवं मंगलवार को तैयारी शिविर का आयोजन किया जाएगा। प्राधिकरण सचिव भागीरथ विश्नोई ने बताया कि प्राधिकरण द्वारा 17 सितम्बर को जोन-०2 के ग्राम झालामण्ड, विनायकिया, धींगाणा, राजनगर एवं विवेक विहार कुडी/ सांगरिया, जोन-०3 के ग्राम सांगरिया, जोन-०4 के ग्राम चौखा, रोहिला कलां, कराणी, जोन-०5 के ग्राम गेंवा व बडली एवं जोन-०6 के ग्राम पूंजला तथा 18 सितम्बर को जोन-०1 के ग्राम नांदडी, नांदडा कलां, उचियारडा, नांदडा खुर्द, बासनी बैंदा, कांकेलाव, जालेली चंपावतां, जोन-०3 के ग्राम सर, सरेचा, जोन-०4 के ग्राम लोरडी देजगरा, जोलियाली, जानादेसर, जोन-5 के ग्राम चौखा, इन्द्रोका बागा, जोन 6 के ग्राम खोखरिया के लिए शिविर का आयोजन प्राधिकरण कार्यालय में किया जाएगा। प्राधिकरण आयुक्त उत्साह चौधरी द्वारा आमजन से अपील की गयी है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में उक्त जनहित शिविरों में भाग लेकर लाभ उठावें।

खेलकूद प्रतियोगिता का आगाज

गुड़ामालानी, (कासं)। गुडामालानी क्षेत्र के ग्राम पंचायत भैडाना के महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय परिसर में 69 वी जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आगाज हुआ । खेलकूद प्रतियोगिता कार्य म चार दिवसीय रहेगा जिसमें 17 से 19 वर्षीय छात्र छात्राएं भाग ले रही है । जिसमें जिले भर की 3० टीमें एवं 15० छात्र छात्राएं हिस्सा ले रही है । भैडाना विद्यालय के प्रधानाचार्य अनिल कुमार चौधरी ने बताया कि जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम दिन पांच मैच हुए । मैच के दौरान टेबल टेनिस में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मौखावा, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय गुडामालानी एवं डिपीएस स्कूल बाडमेर के साथ मुकाबला रहा। चार दिवसीय कार्यक्रम में गांव के गणमान्य भामाशाहों के सहयोग से खाना,पानी आदि व्यवस्थाएं देखी जा रही है। खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम दिन जिला परिषद सदस्य देवाराम चौधरी, रमेश पुरोहित,चतराराम चौधरी, टीकमाराम चौधरी,महेश मीणा, हेमेंद्र विश्नोई, प्रवीण सिंह, करनाराम प्रधानाचार्य, दिनेश पटेल,भगवानाराम,गणपतसिंह,घमडाराम घासी, प्रभुराम चौधरी,पतापाराम चौधरी सहित कई जने उपस्थित रहे।

रामदेवरा व कपूरिया बने विजेता

पोकरण, (निसं)। पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामदेवरा में चल रही 69वीं जिला स्तरीय हॉकी 17 व 19 वर्षीय छात्र/छात्रा खेलकूद प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग के फाइनल मुकाबले संपन्न हुए। संयोजक हेमंत चौधरी ने बताया कि 17 वर्ष आयु वर्ग छात्रा हॉकी फाइनल में महात्मा गांधी विद्यालय रामदेवरा और पीएमश्री रामदेवरा आमने-सामने हुए। इसमें पीएमश्री रामदेवरा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3-०0 से जीत दर्ज की। वहीं, 19 वर्ष छात्रा वर्ग के फाइनल में राउमावि कपूरिया ने बाबा रामदेव विद्या मंदिर रामदेवरा को 6-0० से पराजित किया। इस प्रकार छात्रा वर्ग में रामदेवरा और कपूरिया ने खिताब अपने नाम किए। छात्र वर्ग हॉकी प्रतियोगिता संयोजक रेंवत सिंह बडोडा गांव ने बताया कि कल से छात्र वर्ग के मुकाबले सुबह 7 बजे से शुरू होंगे। विद्यालय के प्रधानाचार्य व प्रतियोगिता संयोजक उगम सिंह तंवर ने बताया कि प्रतियोगिता में दोनों वर्गों के कुल 295 खिलाडी हिस्सा ले रहे हैं और मैदान पर खिलाडियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं।निर्णायक के रूप में पूनमसिंह, भोपालसिंह, हरीराम, खातूराम, रुखमणी, कानसिंह तंवर, घनश्याम, श्योपत सिंह, भोमराज और सत्यप्रकाश ने कडी धूप में सेवा दी।

शांतिनाथ घूमुंतु छात्रावास का उत्सव 20 को

जालोर, (कासं)। शहीद भगतसिंह स्टेडियम के पास स्थित श्री शांतिनाथ गुरुकुलम घुमन्तू छात्रावास की प्रबंध कार्यकारिणी की बैठक रविवार को हुई। जिसमें वार्षिक उत्सव मनाने के लिए चर्चा की गई। प्रबंध कार्यकारिणी के अध्यक्ष नंदकिशोर रांदड ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में छात्रावास का वार्षिक उत्सव 20 सितंबर को मनाने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया तथा व्यवस्थाओं की वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को अलग अलग जिम्मेदारी सौंपी गई। घूमन्तु जाति कार्य विभाग संयोजक पुखराज भाटी को कार्यक्रम आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। बैठक में प्रबंध समिति के प्रहलाद गर्ग, सहकार भारती के मोहन लाल परमार, विद्या भारती के निदेशक के. एन. भाटी, सचिव कानाराम परमार, जिला घूमन्तु कार्य संयोजक बाबूलाल मेघवाल, अश्विन राजपुरोहित उपस्थित थे।

शिक्षक संघ राष्ट्रीय आज ज्ञापन देगा

जालोर, (कांस)। राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय जिला शाखा जालोर की ओर से 15 सितंबर को दोपहर 3 बजे जिलाध्यक्ष हीर सिंह राठौड के नेतृत्व जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा जाएगा। जिला मंत्री कपूर सिंह राजपुरोहित ने बताया कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 1 सितंबर को टेट परीक्षा के संबंध में दिए गए न्यायालय के बहु प्रतीक्षित फैसले के कारण राजस्थान के करीब एक लाख शिक्षकों की नौकरी खतरे में हैं। 15 सितम्बर को जिला कलेक्टर को तृतीय श्रेणी अध्यापकों के टेट परीक्षा की बाध्यता को समाप्त करने के क्रम में ज्ञापन सौंपा जाएगा।

लक्ष्य पर निशाना हमेशा सटीक लगाएं : जोगेश्वर गर्ग

जालोर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग के मुख्य आतिथ्य में रविवार को विनायक फाउंडेशन एकेडमी जालोर में 69वीं जिला स्तरीय राइफल शूटिंग प्रतियोगिता का उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि जीवन में निशाना हमेशा सटीक लगाना चाहिए चाहे वह जिंदगी के किसी कार्य का हो या किसी निर्धारित लक्ष्य के लिए हो या भले ही खेल में हो। महाभारत काल में द्रोणाचार्य ने पांडवों और कौरवों की परीक्षा लेते समय यही ध्यान दिया जिसमें अर्जुन जैसा धनुर्धर सफल रहा था। क्योंकि उसका ध्यान सम्यक लक्ष्य की तरफ था। हम सभी की अपने जीवन लक्ष्य पर पैनी नजर होनी चाहिए तथा उस पर चलते हुए हमें ज्ञान भी होना चाहिए ताकि लगातार आगे बढ़ते हुए हमें लक्ष्य सफलता का ख्याल रहे। उन्होंने जालोर में पहली बार राइफल शूटिंग प्रतियोगिता आयोजन पर गर्व व्यक्त हुए भविष्य में जिले में राइफल शूटिंग खेल को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और निजी स्तर पर हर संभव सहयोग का विश्वास दिलाया। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मुनेश मीना ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए खिलाड़ियों को खेल भावना से खेल खेलने की सीख दी।

इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जबरसिंह देवड़ा, रमेशचंद्र खोरवाल, तहसीलदार संजय बोराणा, संयोजक गणपतसिंह मंडलावत, टेबल टेनिस जिला सचिव नाथू सोलंकी, चावणदान, कृष्णपालसिंह, देवीलाल, सचिन जांगिड, वीरेंद्रसिंह, अंकित बराला, हरफुल जाट, प्रहलादसिंह, देवीसिंह, किरणसिंह, भूपेंद्रसिंह सहित गणमान्य नागरिक, दल प्रभारी,ा खिलाड़ी व अभिभावक उपस्थित रहे।

राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में 23 विद्यालयों के 121 खिलाडी दिखा रहे अपना हुनर . राइफल शूटिंग प्रतियोगिता प्रतियोगिता के संयोजक गणपतसिंह मंडलावत ने बताया कि चार दिनों तक चलने वाली इस प्रतियोगिता में जिले से 23 विद्यालयों के कुल 121 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। जिसमें 69 छात्र खिलाड़ी और 51 छात्रा खिलाड़ी टारगेट पर राइफल और पिस्तौल से अपना निशाना लगाकर दमखम दिखाएंगे। अकादमी की संस्था प्रधान व आयोजन सचिव सुमन चौधरी ने बताया कि प्रतियोगिता के उद्घाटन कार्यक्रम के उपरांत बालकों ने खेल को खेल की भावना से खेलने की शपथ दिलाई गई तथा सभी दल प्रभारी और खिलाड़ियों से आयोजन में सहयोग का आह्वान किया गया।

'ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को सही ट्रेनिंग मिले'

सायला, (निसं)। सायला के निकटवर्ती पोषाणा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रविवार को 69वीं जिला स्तरीय 17/19 वर्षीय तीरंदाजी एवं कराटे खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ पूर्व विधायक रामलाल मेघवाल मुख्य आतिथ्य व प्रधान ढोमीदेवी राजपुरोहित की अध्यक्षता में हुआ। विशिष्ट अतिथि जिला परिषद सदस्य डॉ. रमेश राणा, भाजपा जिला उपाध्यक्ष उदयसिंह दादाल, एसीबीईओ नेमाराम चौधरी मौजूद रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक रामलाल मेघवाल ने कहा कि खेल जीवन में जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। अगर कोच द्वारा ग्रामीण खिलाडियों को सही ट्रेनिंग दी जाए और इन खिलाड़ियों को उचित मंच मिले तो निसंदेह स्थानीय खिलाडी भी अपने क्षेत्र का नाम रोशन करेंगे।

जिला परिषद सदस्य डॉ. रमेश राणा ने कहा कि खेल को खेल की भावना से खेलने की बात कही। साथ ही निर्णायकों से अनुरोध किया कि वे निष्पक्ष एवं सटीक निर्णय देकर खिलाडियों के साथ न्याय करेंगे। प्रतियोगिता के सचिव सुरेंद्रकुमार अग्रवाल ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रतियोगिता में जिलेभर की 13 टीमों के 122 खिलाडी भाग ले रहे है। मंच संचालन वरदाराम सुथार पुनराऊ और मनोज कुमार ने किया।

इस भाजपा पोषाणा मंडल अध्यक्ष रघुनाथराम पुरोहित, मंडल महामंत्री रमेश गर्ग, एसएमसी सदस्य मोडाराम देवासी, जितेंद्रसिंह बालावत, पंचायत समिति सदस्य पन्नाराम, मेंगलवा प्रधानाचार्य सुरेशकुमार, पांथेडी प्रधानाचार्य पूरनसिंह मदेरणा, भारताराम माली, पारसाराम राजपुरोहित, नरपतराम, माधोसिंह, मिश्रीमल सुथार, ओमप्रकाश गर्ग, आरपी सुरेशचंद बेनीवाल, कृष्णकुमार राजपुरोहित, अशोक कुमार गर्ग, नवाराम देवासी, विक्रमसिंह सिराना, एडवोकेट रमेशकुमार, शैलसिंह बैरठ समेत कई जने मौजूद थे।

सड़क के लिए विवेक विहार निवासी केंद्रीय मंत्री शेखावत से मिले

जोधपुर , (कासं)। जोधपुर विकास प्राधिकरण की जोधपुर स्थित विवेक विहार आवासीय योजना तथा निकटवर्ती सांगरिया गांव के निवासियों के प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत कों सर्किट हाउस में मिलकर विवेक विहार योजना में वर्षों से लंबित पड़ी 160 फ़ीट चौड़ी मुख्य सड़क के निर्माण नहीं होने के कारण हो रही परेशानियों से अवगत कराया।

समग्र विवेक विहार विकास समिति के अध्यक्ष जितेंद्र सोलंकी ने कहा कि विवेक विहार योजना जोधपुर विकास प्राधिकरण की एक महत्वाकांक्षी योजना है । इस योजना में सांगरिया गांव को विवेक विहार होते हुए जोधपुर शहर से जोड़ने के लिए 160 फीट चौड़ी सड़क का प्रावधान है। यह सड़क सांगरिया गांव से विवेक विहार के हेलीपैड चौराहा, सेंट्रल पार्क चौराहा होकर बाईपास को मिलती है। क्षेत्रवासियों ने कहा कि योजना के अस्तित्व में आए हुए 14 वर्ष से अधिक बीत जाने के बाद भी इस सड़क के एक छोटे से हिस्से का निर्माण अभी तक नहीं किया जाना तथा विवश होकर पुरानी टूटी-फूटी संकड़ी रोड से निकलना निवासियों के लिए दुःस्वप्न जैसा होता है। इस सड़क के लगभग 200 मीटर के बकाया हिस्से के निर्माण के लिए क्षेत्रवासी जेडीए आयुक्त, उपायुक्त, तहसीलदार, पटवारी से मिल चुके हैं। कई बार जेडीए की एकल खिड़की पर तथा अनेकों बार संपर्क पोर्टल पर शिकायत कर चुके हैं।

इस सड़क के निर्माण की मांग को लेकर क्षेत्रवासी विधि एवं संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल से भी मिल चुके हैं। अधिकारियों को जनप्रतिनिधियों द्वारा कई बार निर्देशित किए जाने के बाद भी क्षेत्रवासियों की समस्या का समाधान नहीं हुआ है।

क्षेत्रवासियों ने मंत्री को बताया कि जोधपुर विकास प्राधिकरण द्वारा केंद्रीय मंत्री कार्यालय के पूर्व के पत्र के लिखित में जवाब में यह कहा जाना कि सड़क निर्माण क्षेत्र में अभी तक अवार्ड निर्धारित नहीं हुए हैं इसलिए सड़क निर्माण होना संभव नहीं है विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्नचिन्ह है। जिस आवासीय योजना को अस्तित्व में 14 वर्ष हो गए हों उसके लिए आवाप्त की गई भूमि का 14 वर्ष तक अवार्ड निर्धारण नहीं हो पाना चिंतनीय है। यह जेडीए की जन समस्याओं तथा अवार्डियों के प्रति उदासीनता को परिलक्षित करता है। क्षेत्रवासियों की पीड़ा सुनकर केंद्रीय मंत्री शेखावत ने क्षेत्रवासियों को जिला कलेक्टर तथा जेडीए आयुक्त के माध्यम से आगामी आयोजित होने वाले प्रशासन शहरों के संग शिविरों में इस समस्या का समाधान होने का भरोसा दिलाया।

प्रतिनिधिमण्डल में नारायण सिंह खींची, हितेश सोनी, हरिप्रकाश जीनगर, कुलदीप चारण, सीताराम प्रजापत, मनोज व्यास, सुखदेव प्रजापत, नारायण पटेल, मरुधर चौधरी, अशोक पटेल, कुशाल खोजा, मनोज सोलंकी, बलदेव चौधरी, कुणाल विश्नोई, महेन्द्र सोलंकी, सोहन चौधरी, ओमप्रकाश माली, रमेश पटेल, राधेश्याम बंसल सहित अनेक क्षेत्रवासी उपस्थिति रहे।

विद्यालय स्तर पर खेलों का विशेष महत्व : जोगेश्वर गर्ग

जालोर, (कासं)। भैरूनाथ अखाड़ा जालोर के ईश्वर नाथ महाराज के सानिध्य व राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग के मुख्य आतिथ्य में रविवार को धानपुर में 69 वीं जिला स्तरीय 14 वर्षीय छात्र-छात्रा हैंडबॉल खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि विद्यालय स्तर पर खेलों का विशेष महत्व है क्योंकि इसी उम्र में शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास की नींव रखी जाती है। जब छात्र मैदान में खेलते हैं तो उनमें आत्मविश्वास और आपसी सहयोग की भावना विकसित होती है। हार-जीत का अनुभव जीवन के संघर्षों के लिए उन्हें तैयार करता है।

उन्होंने खिलाड़ियों से आह्वान किया कि वे अपने प्रतिभा के दम पर जालोर जिले का नाम राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर रोशन करें। उन्होंने कहा कि जालोर का विकास करने मे कोई भी कमी नहीं रहेगी। उन्होंने धानपुर प्याऊ से धानपुर गांव तक एक किलोमीटर सीसी सड़क बनाने की बात कही। समारोह के अध्यक्षता मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मुनेश मीना ने कहा कि खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का माध्यम है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि ईश्वर सिंह धानपुर, सुमेर सिंह धानपुर, अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जबर सिंह देवड़ा, रमेश चंद्र खोरवाल, तहसीलदार संजय बोराणा, उप प्रधान प्रतिनिधि हनवंत सिंह देवड़ा, पूर्व सीबीईओ रघुनाथ सिंह परिहार, प्रेमा राम देवासी, पूर्व मंडल अध्यक्ष महेन्द्र सिंह भागली सिंधलान, पीईईओ घनश्याम वैष्णव, प्रधानाध्यापक विक्रम सिंह, प्रतियोगिता संयोजक रूप सिंह राङ्गौड़ नारणावास आदि का समारोह मे साफा, माला व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। मंच संचालन प्रमोद वैष्णव ने किया।

इस अवसर पर नाथू सोलंकी, मुकेश सुंदेशा, शारीरिक शिक्षक ओब सिंह परिहार, जितेंद्र सिंह धानपुर, तीकमा राम घांची, भवरू खान पङ्गान, जसपाल सिंह, अमरदास वैष्णव, डिंपल राजपुरोहित, डूंगर सिंह दहिया, भोला राम सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

केशवना ने आहोर को हराया

प्रतियोगिता संयोजक रूप सिंह राठौड़ ने बताया की हैंडबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन मैच गुरु शिखर केशवना व संस्कार स्कूल आहोर के बिच खेला गया जिसमें 3 गोल से केशवना टीम विजय रही। निर्णायक मंडल में संयोजक रूप सिंह राङ्गौड़, हीरालाल सोलंकी, माधु सिंह देवड़ा, ओब सिंह,रवि बेनीवाल जब्बार खान, परबत सिंह भाटी, गजेसिंह तेलवाड़ा, भींवदास स्वामी, अंगूरी धांधल, अजरा साइन आदि शामिल रहे।

वरिष्ठ तीर्थ यात्रा, विशेष रेलगाड़ी रवाना

जोधपुर , (कासं)। राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग की वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना 2025 के तहत विशेष रेलगाड़ी के माध्यम से रविवार को जोधपुर के तीर्थयात्री हरिद्वार, ऋषिकेश, अयोध्या, वाराणसी एवं सारनाथ के लिए रवाना हुए।

उनके परिजनों ने माला पहनाकर शुभकामनाएं दी।

देवस्थान विभाग के अनुसार जोधपुर संभाग के नौ जिलों से यात्री इसमें रवाना हुए। इन यात्रियों को अयोध्या, हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी और सारनाथ की यात्रा करवाई जाएगी। इसमें जोधपुर से 418, पाली से 66, जंवाई बांध से 201 यात्री सहित कुल 706 यात्री रवाना हुए। यात्रियों को एसी कोच से तीर्थयात्रा करवाई जा रही है।

देवस्थान विभाग के निरीक्षक ओमवीर ताडा ने बताया कि राजस्थान सरकार की योजना के तहत इन यात्रियों को तीर्थ यात्रा करवाई जाएगी।

ट्रेन में यात्रियों को निशुल्क भोजन भी दिया जाएगा यह 19 सितंबर को वापस लौटेंगे।

सीमांत जिला मिलिट्री सिविल फ्यूज़न संगोष्ठी का आयोजन किया

जैसलमेर, (नि.सं.)। कोणार्क कोर ने 'दक्षिणी कमान सीमांत जिला मिलिट्री सिविल फ्यूज़न संगोष्ठी' 1 सितम्बर से 12 सितम्बर तक जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर में आयोजित की।

पीआरओ आर्मी राजस्थान ले कर्नल निखिल धवन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सम्मलेन में ऑपरेशन सिंदूर जैसी स्थिति से निपटने के लिए सैन्य बलों एवं सिविल प्रशासन के बीच तालमेल को और मजबूत करना तथा राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया को बढ़ावा देने के विषय में चर्चा की गई । इसका उद्देश्य विचार-विमर्श और सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से राजस्थान के सीमावर्ती जिलों के लिए मज़बूत ढाँचे का निर्माण करना व एक समठा एवं समावेशी राष्ट्रीय दृष्टिकोण को समाहित करना था।जिन प्रमुख मुद्दों पर चर्चा हुई उनमें सीमा क्षेत्र विकास, प्रयासों का केन्द्रीकरण और सुरक्षा को बढ़ाना शामिल था। सभी स्टेकहोल्डरों ने इस बात पर सहमति जताई कि, सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे का विकास व सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा देने के साथ-साथ मिलिट्री आपरेशनों के लिए महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान करना आवश्यक है। सभी प्रतिभागियों ने संसाधनों के कुशल उपयोग, समय पर कार्यवाही और सामूहिक समस्या-समाधान हेतु समन्वय के महत्व पर बल दिया। सभी अधिकारियों ने इस बात पर सहमति जताई कि, सड़कें, उनकी उपयोगिताएं, संचार प्रणालियां और कल्याणकारी उपाय सीधे तौर पर परिचालन, रसद व सैन्य गतिशीलता को पुख्ता बनाती है।

सेमिनार इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि, एक सुरक्षित और सुदृढ़ राष्ट्र के लिए विकासात्मक प्रयासों को राष्ट्रीय सुरक्षा की अनिवार्यताओं के साथ ढाला जाए, जिससे सैन्य और अन्य दूसरे स्टेकहोल्डरों के बीच समन्वय और सहयोग स्थापित किया जा सके।

जुआ खेलते 10 लोगों को पकड़ा

जोधपुर , (कासं)। सरदारपुरा थाना पुलिस ने होटल सुगन पैलेस में जुआ खेलते 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से 22690 रुपए और जुआ सामग्री भी जब्त की है।

सरदारपुरा थाना अधिकारी शेषकरण ने बताया कि अतिरिक्त पुलिस पुलिस आयुक्त रोशन मीणा और सहायक पुलिस आयुक्त छवि शर्मा के सुपरविजन में कार्रवाई की। सुगन होटल में काफी लोग ताश के पत्तों पर दांव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। सूचना विश्वसनीय होने पर पुलिस ने तुरंत दबिश दी और 10 लोगों को एक कमरे में गोल बनाकर ताश के पत्तों से जुआ खेलते हुए पकड़ा। इन लोगों के कब्जे से पुलिस ने 22690 रुपए नगद और जुआ सामग्री बरामद की। पुलिस ने बी चंद्रकुमार पुत्र भेरचंद, सिद्धार्थ पुत्र राजेंद्र, सुभाष पुत्र भैराराम, युधिष्ठिर सिंह पुत्र अजीत सिंह ,प्रतीक बोथरा पुत्र नरेंद्र बोथरा, हर्षित पुत्र नंदकिशोर माहेश्वरी, विजय पारख पुत्र पन्नालाल, मृदुल पुत्र सुनील अठावाल, साकेत पुत्र आनंद कुमार, विजय कुमार उर्फ रिक्की पुत्र सरजीत को गिरफ्तार किया।

मुस्लिम समाज के सामूहिक विवाह की तैयारी जोरों पर

पाली, (नि.सं.)। आम मुस्लिम समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन , दूल्हा दुल्हन के विवाह शगुन नारियल व दुल्हन के बेस परिवार परिजनों को बैठक में सुपर्द किए। 12 अक्टूबर को सामुहिक निकाह होगी। सामाजिक संस्था मुस्लिम युवा फाउंडेशन समिति पाली की ओर से 12 अक्टूबर 2025 को मात्र एक रुपए में तीसरा आम मुस्लिम समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

अध्यक्ष मेहराज अली चूडिगर ने बताया कि इस सामूहिक सम्मेलन की तैयारियों हेतु रविवार को हैदर कॉलोनी साल वाले बाबा दरगाह परिसर में दूल्हा दुल्हन के परिजनों व कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई। जिसमें दूल्हे के परिजनों को विवाह का नारियल शगुन के रूप में दिया गया व दुल्हन के परिवार जनो को निकाह का जोड़ा दिया गया तथा निकाह सम्मेलन के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए गए।

कार्यकम की शुरुआत ईदगाह पेश इमाम मौलाना दानिश कफील के तिलावते कुरान व मोहम्मद सलीम मिस्कीन द्वारा नात ख्वानी से हुई।

मुस्लिम समाज के रंगरेज समाज सदर हाजी आबिद अली , हाजी सरफराज अली चूडिगर लोहार समाज सदर मोहम्मद रफ़ीक चौहान ,पिंजारा समाज सदर हाजी हाजी मोहम्मद यूसुफ ,जिला मुस्लिम समाज प्रवक्ता शक़ील अहमद नागौरी , फाउंडेशन सदर मेहराज अली , एडवोकेट निसार मोहम्मद इत्यादि वक्ताओं ने मुस्लिम समाज मे सादगी के साथ सामहूहिक विवाह को बढ़ाने के साथ निकाह को आसन बनाने के साथ समाज मे सादगी सरलता अपनाने के साथ कुरीतियों को दूर करने के बड़े कदम उठाने की आवश्यकता बताया। प्रवक्ता खालिद कादरी ने बताया कि सामूहिक विवाह सम्मेलन कमेटी के अध्यक्ष मेहराज अली चूडिगर, संयोजक जाकिर गौरी, नायब सदर शकील अहमद नागौरी, जहिर अली मकरानी, सत्तार पठान, चांद अली संजरी, इकबाल भाई मोयल, इंसाफ अली साता वाले, हसन चौहान, इंसाफ सोलंकी, अकरम खिलेरी, रईस सोलंकी, अफजल पठान, अरबाज खान अज्जू, आरिफ नवीन, रफीक सोलंकी, सलीम फ्रूट वाले, गुड्डु भाई, फकीर मोहम्मद चढ़वा, वाहिद खान, यासीन सबावत, अय्यूब सुलेमानी, रफीक सोलंकी,अनवर हुसैन सोजत, रफीक भाटी, इकबाल भाटी, फारूक रंगीला, हाजी मोहम्मद सोलंकी, असगर कुरैशी, सैयद अबूबकर, सदाकत अंसारी, फिरोज सामरिया, इमरान जोया, गौस मोहम्मद, इस्माइल गौरी, जावेद जिलानी, नौशाद , सलीम कुरैशी, इस्लामुद्दीन मोयल, हुसैन अजमेरी, वसीम भाटी, फैजान पठान, वसीम अल्फ़ाज़, फिरोज खिलेरी, मोहम्मद साजिद, समीर खान मोयल, आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बास्केटबॉल में पाली ने जैसलमेर को हराया

पाली,(नि.सं.)। राजस्थान राज्य अंतरजिला 10वीं सिविल सेवा बॉस्केटबॉल पुरुष एवं 9वीं सिविल सेवा वॉलीबॉल पुरुष प्रतियोगिता 2025-26 के तहत रविवार को पाली में क्वार्टर फाइनल मुकाबले सम्पन्न हुए। बॉस्केटबॉल के मैच बांगड़ स्कूल में तथा वॉलीबॉल के मैच बांगड़ स्टेडियम में खेले गए।

वॉलीबॉल सिविल क्वाटर फाइनल प्रतियोगिता में डीडवाना कुचामन वर्सेज सचिवालय के बीच मैच खेला गया जिसमें डीडवाना कुचामन टीम विजेता रही। इसी प्रकार पाली वर्सेज उदयपुर में उदयपुर विजेता, सीकर वर्सेज भीलवाड़ा मैच में भीलवाड़ा, ब्यावर वर्सेज चुरू में ब्यावर जिले की टीम विजय रही है।

बॉस्केटबॉल क्वाटर फाइनल मैचों में जैसलमेर वर्सेज पाली के मुकाबले में पाली जिले की टीम ने जीत हासिल की। इसी प्रकार गंगानगर वर्सेज बीकानेर में बीकानेर, हनुमानगढ़ वर्सेज चुरू में खले गए मैच में हनुमानगढ़ विजेता रहा। भीलवाड़ा वर्सेज बाडमेर की बीच मैच में बाड़मेर विजय रहा। प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के उम्दा प्रदर्शन और रोमांचक मुकाबलों से खेल प्रेमियों में उत्साह का माहौल रहा। विजेता टीमें अब सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगी।समापन समारोह 15 सितमबर को बांगड स्टेडियम में 12 बजे आयोजित होगा जिसमें अनेक जनप्रतिनिधि व अधिकारी भाग लेंगे।

डॉ.पद्मजा शर्मा को साहित्यश्री सम्मान

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति श्रीडूंगरगढ़ ने हिन्दी सृजन को लेकर वर्ष 2025 का मलाराम माली स्मृति साहित्यश्री सम्मान जोधपुर की प्रख्यात साहित्यकार डॉ. पद्मजा शर्मा को प्रदान किया।

जोधपुर, (का.सं.)। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ ने हिन्दी सृजन हेतु वर्ष 2025 का सर्वोच्च व प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर का मलाराम माली स्मृति साहित्यश्री सम्मान जोधपुर की प्रख्यात साहित्यकार डॉ. पद्मजा शर्मा को उनके समग्र साहित्यिक अवदान के लिए प्रदान किया।

कार्यक्रम में मंच पर संस्थाध्यक्ष श्याम महर्षि ,मुख्य अतिथि विधायक ताराचंद सारस्वत ,अध्यक्ष आचार्य मनोज दीक्षित कुलगुरु महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर, विशिष्ट अतिथि डॉ गजादान चारण, उमाकांत गुप्त थे।संस्था के डॉ. मदन सैनी ,मंत्री रवि पुरोहित ,समन्वयक महावीर माली के अनुसार संगीता सेठी, देवेन्द्र मिश्रा, नागेश पाण्डेय, कुमार सुरेश और विश्वनाथ तंवर भी अन्य पुरस्कारों से पुरस्कृत किए गए।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के मंत्री एवं पुरस्कार समिति के संयोजक रवि पुरोहित ने बताया कि डॉ.पद्मजा शर्मा ने साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां हासिल की हैं । अब तक 37 किताबें विविध विधाओं की प्रकाशित हो चुकी हैं । आपने शब्दचित्र, कविता, कहानी ,डायरी , लघुकथा, निबंध लिखे हैं तो बाल साहित्य भी लिख रही हैं। बाल डायरी गौरा की खिलखिलाती डायरी को हिन्दी की प्रथम बाल डायरी होने का गौरव प्राप्त है। लघुकथाएँ और कविताएं यूनिवर्सिटी के पाठ्यक्रमों में रही हैं । अनेक पुरस्कारों के साथ राजस्थान साहित्य अकादमी के सुधीन्द्र पुरस्कार के साथ अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार से सम्मानित हैं।

शोभायात्रा निकाली

पाली, (नि.सं.)। श्रीमाली समाज ने श्री महालक्ष्मी प्रकटोत्सव के अवसर पर रात्रि 8 बजे झालारवा महालक्ष्मी मंदिर की आरती के पश्चात विशाल शोभा यात्रा अध्यक्ष एडवोकेट पी एम जोशी के नेतृत्व में निकाली। महिला मंडल एक ड्रेस में भजन गाते चल रही थी। पुरुष फूलों से सजी मां लक्ष्मी की सवारी को खींचकर चला रहे थे। झांकियां में राम दरबार, राधा कृष्ण नरसिंह अवतार, नवदुर्गा परशुराम शंकर पार्वती नारद बनकर बच्चे बैठे हुए थे।

कार्यालय नगर परिषद जालोर (राजस्थान)

(अस्पताल चौराहा, जोधपुर रोड, जालोर -343001)

Tel. (02973) 222270 | E-mail : mbjalore24@yahoo.in

क्रमांकः- नपजा/राजस्व/2025/4008 | दिनांक : 08/09/2025

।। आपत्ति विज्ञप्ति ।।

श्री रमेश कुमार पुत्र सवाराम, जाति-घांची, निवासी - कस्तुरबा कॉलोनी, जालोर ने एक भुखण्ड / मकान के नामांतरण व उपविभाजन हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है । उक्त भुखण्ड जालोर की आबादी भूमि आया हुआ है, जिसका पट्टा कार्यालय नगर पालिका जालोर द्वारा जरिये पटटा सं.-17 वर्ष 1966, के अनुसार श्री रगीया पुत्र अनाजी के नाम से जारी किया गया है । अतः श्री रमेश कुमार पुत्र सवाराम का आवासीय प्लॉट का क्षेत्रफल 1237 .50 वर्गफीट का अपने नाम से उपविभाज / नामांतरण चाहा गया है । उक्त आवासीय प्लॉट पडौस एव चतुर्सीमा निम्न प्रकार है-

उत्तर :- हरीया केसाजी घांची का मकान, यह भुजा 10.39 फीट है ।

दक्षिण :- प्रवेश द्वारा, रास्ता भुजा 10.39 फीट है ।

पूर्व :- भुराराम व मांगीलाल पुत्र तोलाजी का मकान, यह भुजा 60 फीट है ।

पश्चिम :- इसी मकान का हिस्सा, यह भुजा 60 फीट है ।

अतः सर्वसाधारण को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो उक्त सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति मय दस्तावेज साक्ष्य सहित निम्नहस्ताक्षकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है । निर्धारित समयावधि के पश्चात प्रस्तुत आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी। इस प्रकरण से संबंधित प्रार्थना पत्र व संलग्न दस्तावेजों का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय के दौरान इस कार्यालय के राजस्व अनुभाग में आकर किया जा सकेगा ।

अवगत रहें।

आयुक्त
नगर परिषद, जालोर

कंटेनर ट्रक से 60 लाख की अवैध अंग्रेजी शराब पकड़ी, दो तस्कर गिरफ्तार

ट्रक से विभिन्न ब्रांड की अवैध अंग्रेजी शराब की 402 पेटियां बरामद की

कोटा, (निसं)। ग्रामीण इलाके की कनवास पुलिस टीम ने अवैध शराब तस्करों के विरूद्ध नाकाबंदी के दौरान बड़ी कार्रवाई करते हुए कंटेनर ट्रक से पंजाब निर्मित अवैध अंग्रेजी शराब की 402 पेटियां जब्त की है। पकड़ी गई अवैध अंग्रेजी शराब की अंतरराज्यीय बाजार में कीमत करीब 60 लाख रूपये आंकी गई है। साथ ही पुलिस टीम ने दो तस्करों को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस दोनों तस्करों से पूछताछ कर रही है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि अवैध गतिविधियों की रोकथाम तथा वांछित आरोपियों की गिरफ्तारी के लिये विशेष अभियान चलाया जा रहा है। ग्रामीण एसपी ने बताया कि ग्रामीण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकल्याण मीना के निर्देशन में वृताधिकारी वृत सांगोद बाबूलाल के सुपरविजन में कनवास थाने के उपनिरीक्षक श्यामाराम के नेतृत्व में विशेष टीम गठित कर अवैध शराब तस्करी व अवैध गतिविधियों के विरूद्ध कार्रवाई के लिये निर्देशित किया गया।

कोटा ग्रामीण की कनवास पुलिस टीम ने अवैध अंग्रेजी शराब की पेटियां जब्त कर दो तस्करों को गिरफ्तार किया।

- कंटेनर ट्रक की बॉडी में विशेष पार्टीशन बनाकर छिपा रखी थी अवैध शराब

ग्रामीण एसपी ने बताया कि गठित टीम ने योजना बनाकर नाकाबंदी के दौरान एक कंटेनर ट्रक की तलाशी के दौरान कंटेनर ट्रक की बॉडी में विशेष पार्टीशन बनाकर छिपा रखी विभिन्न ब्रांड की अवैध अंग्रेजी शराब की 402 पेटियां बरामद की। ग्रामीण एसपी ने बताया कि जब्त की गई अवैध अंग्रेजी शराब की अंतरराज्यीय बाजार में कीमत करीब 60 लाख रूपये है। ग्रामीण एसपी ने बताया कि पुलिस टीम ने मौके पर कार्रवाई करते हुए जिला वाड़मेर के छीतर कापर निवासी चुनाराम एवं थाना भोपाल के हीरादेशर निवासी खेराजराम को गिरफ्तार किया है। पकड़े गये दोनों शराब तस्करों से अनुसंधान जारी है।

स्कूल की आड़ में चर्च में धर्मांतरण का आरोप

बड़ी संख्या में हिंदू संगठनों और गांव के लोग चर्च पहुंचे और आक्रोश जताया

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा और रामसागड़ा थाना क्षेत्र जेलाना गांव में स्कूल के नाम पर चर्च चलाने पर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। बड़ी संख्या में हिंदू संगठनों और गांव के लोग चर्च पहुंचे, जहां मौजूद लोगों को प्रार्थना करवाई जा रही थी। वहीं चर्च में अवैध रूप से धर्म परिवर्तन करवाने के भी आरोप लगाए। मौके पर पहुंची पुलिस ने भी स्कूल के अलावा किसी भी तरह की अवैध गतिविधियों का संचालन नहीं करने के लिए पाबंद किया गया।

- मौके पर पहुंचे लोगों ने चर्च में आदिवासियों को गुमराह कर अवैध रूप से प्रार्थना करवाने के आरोप लगाए
- पुलिस ने स्कूल के अलावा किसी भी तरह की अवैध गतिविधियों का संचालन नहीं करने के लिए पाबंद किया
- बिछीवाड़ा और रामसागड़ा थाना क्षेत्र के बीच जेलाना और भेहना गांव के सीमा पर स्कूल के नाम चर्च चलाने का आरोप है

जानकारी के अनुसार प्रदेश में नया धर्म परिवर्तन का कानून बनने के बाद डूंगरपुर में ये पहला मामला सामने आया है। बिछीवाड़ा और रामसागड़ा थाना क्षेत्र के बीच जेलाना और भेहना गांव के सीमा पर स्कूल के नाम चर्च चलाने का आरोप है। गोपालराम महाराज के नेतृत्व में कई हिंदूवादी संगठनों और गांव के लोग चर्च पहुंच गए। लोगों ने चर्च में आदिवासियों को गुमराह कर अवैध रूप से प्रार्थना करवाने के आरोप लगाए, जिससे हंगामा हो गया। वहीं घटना की सूचना पर बिछीवाड़ा थानाधिकारी कैलाश सोनी और रामसागड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची।

गोपालराम महाराज ने कहा कि यहां स्कूल के नाम 3 साल पहले चर्च का काम शुरू हुआ था। तब से गांव और आसपास के लोग विरोध कर रहे हैं, लेकिन ध्यान नहीं दिया गया। अब स्कूल के नाम से यहां चर्च में धर्मांतरण की गतिविधियां चल रही हैं। आदिवासी लोगों को गुमराह कर उनका धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा है। वहीं डूंगरपुर डीएसपी तपेंद्र मीणा भी मौके पर पहुंचे। लोगों ने स्कूल के नाम पर अवैध गतिविधियों पर तुरंत बंद करने की मांग की।

खेल को खेल की भावना से खेला जाना चाहिए : केन्द्रीय मंत्री शेखावत

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत रविवार को जोधपुर में रहे। इस दौरान उन्होंने भारत और पाकिस्तान के क्रिकेट मैच को लेकर विपक्ष के आरोपों पर कहा कि खेल को खेल की भावना से खेला जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट्स में सदस्य देशों का बहिष्कार संभव नहीं होता, लेकिन भारत अपनी नीतियों और राष्ट्रहित में किसी भी तरह का समझौता नहीं करेगा।

- केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने भारत और पाकिस्तान के क्रिकेट मैच को लेकर कहा कि खेल को खेल की भावना से खेला जाना चाहिए

उन्होंने कहा कि खेल को खेल की भावना तक सीमित रखना चाहिए। कल ओलिंपिक खेल होंगे, ऐसे ही खेल होंगे। खिलाड़ियों को खेलना चाहिए। साथ ही उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि अंग्रेजी में कहावत है पॉलिसी एंड प्रोटोकॉल्स क्योंकि इंटरनेशनल प्लेटफार्म पर खेलना व संवाद करना हम खेलों से आगे बढ़कर भी कर सकते हैं। कल विपक्ष कहेंगे कि ब्रिक्स में पाकिस्तान के साथ मंच साझा नहीं करना चाहिए। लेकिन ऐसा संभव नहीं पॉलिसी एंड प्रोटोकॉल दोनों को एक तराजू में नहीं तोला जा सकता।

इसके साथ ही मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने पांडुलिपि मिशन को लेकर जानकारी दी और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से संस्कृति मंत्रालय ने पांडुलिपि मिशन को विस्तार देते हुए ज्ञानवार्तम नेशनल मिशन प्रारंभ किया है। इसके तहत देशभर में उपलब्ध लाखों पांडुलिपियों को न सिर्फ सुरक्षित किया जाएगा, बल्कि उन्हें कंप्यूटर रीडेबल फॉर्मेट में परिवर्तित कर विश्व स्तर पर प्रस्तुत किया जाएगा। शेखावत ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता है और हमारे पास करोड़ों की संख्या में हस्तलिखित ग्रंथ मौजूद हैं, जो पेड़ की छाल, कपड़े, हस्तनिर्मित कागज सहित कई माध्यमों पर लिखे गए हैं। इन ग्रंथों में ब्राह्मी, पाली, खरोष्ठी, देवनागरी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ सहित अनेक लिपियों का उपयोग हुआ है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री के कार्यक्रम से लॉन्च किए गए पोर्टल पर अब तक लाखों पांडुलिपियां अपलोड हो चुकी हैं और शीघ्र ही यह संख्या 10 लाख तक पहुंच जाएगी। पर्यटन को लेकर उन्होंने कहा कि बीते एक वर्ष में भारत में डोमेस्टिक टूरिज्म में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। कुंभ को छोड़ दें तो भी इसकी संख्या लगभग 250 करोड़ यात्राओं तक पहुंच गई है, जो देश की कुल आबादी से दोगुनी है।

कार की टक्कर से घायल हुये बुजुर्ग की मौत

कोटा, (निसं)। आरकेपुरम थाना इलाके में कार की टक्कर से घायल हुए बाईक सवार बुजुर्ग की अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। नयागांव निवासी नारायणलाल शर्मा (68) मोटरसाइकिल से जाते समय नयागांव इलाके में पेट्रोल पम्प के समीप तेज रफ्तार कार ने बाईक को टक्कर मार दी। आरकेपुरम थानाधिकारी महेन्द्र मारू ने बताया कि नारायणलाल शर्मा शनिवार को बाइक से जाते समय कार चालक ने लापरवाही से वाहन को चलाते हुए बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में घायल को उपचार के लिये अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां बुजुर्ग ने अस्पताल में उपचार के दौरान रविवार को दम तोड़ दिया। मृतक के शव का पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया।

धर्म परिवर्तन मामले में दो जने हिरासत में

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर में कोतवाली थाना पुलिस ने धर्म परिवर्तन कराने के आरोप में दो युवकों को हिरासत में लिया है। फिलहाल पुलिस मामले के अनुसंधान में जुटी हुई है। विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों ने बताया कि उन्हें सूचना मिली कि सुभाष नगर ने धर्म परिवर्तन का कार्य चल रहा है। जिस पर मौके पर पहुंचे तो कुछ लोग धर्मांतरण करवा रहे थे। वहां नाबालिग बच्चे और महिलाएं थी, जिनको आर्थिक सहायता का लोभ देकर फंसाया जा रहा था। मौके पर बाइबल और होली वाटर भी मिला। एक व्यक्ति मौके से कुछ सामग्री लेकर फरार हो गया।

40 क्विंटल से अधिक खेजड़ी की लकड़ी से भरी पिकअप जब्त

जांच में खुलासा हुआ कि लकड़ी खेतों से काटकर अवैध रूप से हरियाणा में परिवहन की जा रही थी

झुंझुनूं, (निसं)। मलसीसर क्षेत्र में अवैध लकड़ी परिवहन पर नकेल कसते हुए वन विभाग ने बड़ी कार्रवाई की है।

उप वन संरक्षक उदाराम सियोल के निर्देशन और क्षेत्रीय वन अधिकारी संदीप लोयल के नेतृत्व में गठित टीम ने मलसीसर क्षेत्र में दबिश देकर एक पिकअप वाहन को खेजड़ी की लकड़ी के साथ जब्त किया। वाहन में करीब 40 से 50 क्विंटल खेजड़ी की लकड़ी भरी हुई थी, जो ओवरलोड स्थिति में हरियाणा राज्य ले जाई जा रही थी। जांच के दौरान खुलासा हुआ कि लकड़ी खेतों से काटकर अवैध रूप से हरियाणा में परिवहन की जा रही थी। इस पर प्रभावी कार्रवाई करते हुए पिकअप को जब्त किया। साथ ही जिला परिवहन अधिकारी झुंझुनूं और तहसीलदार मलसीसर को भी कार्रवाई के लिए लिखा गया है।

मलसीसर में वन विभाग ने अवैध लकड़ी परिवहन पर कार्रवाई की।

गौरतलब है कि उप वन संरक्षक के निर्देशन में क्षेत्र में अवैध लकड़ी परिवहन के विरुद्ध लगातार अभियान चलाया जा रहा है। विभाग का कहना है कि इस तरह की और भी सख्त कार्रवाईयां आगे की जाएंगी। इस कार्रवाई के दौरान वनपाल सुदेश पूनियां, वन रक्षक अमरसिंह, नरेन्द्र मीणा, वनपाल सतीश कुमार तथा वाहन चालक अमरचंद मौजूद रहे।

अजमेर : सेवन वंडर को तोड़ने की कार्रवाई तीसरे दिन भी जारी रही

सुप्रीम कोर्ट ने अजमेर के आनासागर वेटलैंड में बने इन सेवन वंडर्स को अवैध घोषित किया था

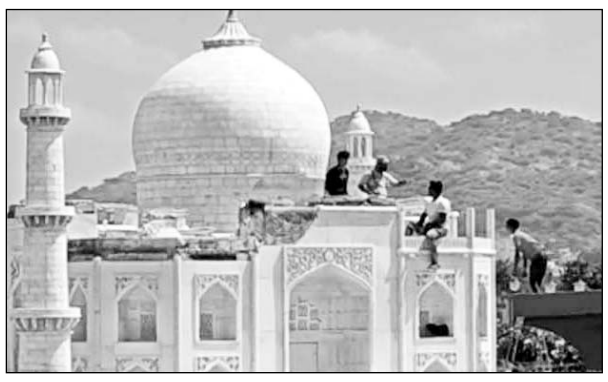

अजमेर के आनासागर के भराव क्षेत्र में बने सेवन वंडर को तोड़ने की कार्रवाई तीसरे दिन भी मजदूरों ने की।

अजमेर, (कासं)। स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत करीब 12 करोड़ रुपए की लागत से वैशाली नगर स्थित आनासागर के भराव क्षेत्र में बने सेवन वंडर को तोड़ने की कार्रवाई तीसरे दिन रविवार को भी जारी है। मजदूरों ने ताजमहल को तोड़ने का काम शुरू कर दिया है, जबकि पीसा की झुकी हुई मीनार को तोड़ना अभी बाकी है।

अजमेर विकास प्राधिकरण सात अजूबों को गिराने की कार्रवाई कर रहा है। इनका निर्माण वर्ष 2022 में करीब 12 करोड़ रुपये की लागत से हुआ था और जिसका पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने उद्घाटन किया था। सेवन वंडर में बने ताजमहल को जेसीबी से नहीं तोड़ा जा रहा, बल्कि मजदूरों की ओर से धीरे धीरे तोड़ा जा रहा है, ताकि इस पत्थर का फिर से उपयोग हो सके। एडीए द्वारा रविवार को तोड़ने की कार्रवाई में भारी-भरकम लोहे से बने पेरिस के एफिल टावर को काटकर हटाया जा रहा है, पहले इसे चार भागों में हटाने की योजना थी, लेकिन लोहे का वजन अधिक होने के कारण अब इसे छह भागों में हटाया जा रहा है। चार भाग हटा दिए गए हैं और अब इसे दो भागों में काटकर हटाया जाएगा।

- मजदूरों ने ताजमहल को तोड़ने का काम शुरू कर दिया है, जबकि पीसा की झुकी हुई मीनार को तोड़ना अभी बाकी है
- भारी-भरकम लोहे से बने पेरिस के एफिल टावर को कटिंग कर हटाया जा रहा है

जानकारी के अनुसार सुप्रीम कोर्ट ने आनासागर वेटलैंड में बने इन वंडर्स को अवैध घोषित किया था। इसी प्रकार सेवन वंडर में बनाए एफिल टावर का नीचला हिस्सा शेष बचा है। भारी-भरकम लोहे से बने पेरिस के एफिल टावर को कटिंग कर हटाया जा रहा है। पहले इसे चार पार्ट में हटाना था, लेकिन वजनी लोहा होने के कारण इसे अब छह पार्ट में हटाया जा रहा है। चार पार्ट हटा दिए है और अब इसे दो पार्ट में काटकर हटाया जाएगा।

रोडवेज बस और ट्रेलर में आमने-सामने भिड़ंत, बड़ा हादसा टला

मौलासर के रिंग रोड चौराहे पर हादसा हुआ, कुचामन जा रही थी बस

डीडवाना, (निसं)। डीडवाना जिले के मौलासर कस्बे के रिंग रोड चौराहा पर रविवार को सुबह बस व ट्रेलर में आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसे में बस की केबिन बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई और दोनों वाहनों को काफी नुकसान पहुंचा, लेकिन गनीमत रही कि हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई।

- बस में स्कूली बच्चे भी सवार होकर प्रतियोगिता में खेलने जा रहे थे, कोई जनहानि नहीं हुई

हादसे में बसे के आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया।

जानकारी के अनुसार रविवार सुबह डीडवाना डिपो की एक रोडवेज बस डीडवाना की ओर से कुचामन जा रही थी। इसी दौरान मौलासर में रिंग रोड चौराहे पर सामने से आ रहे ट्रेलर से बस की टक्कर हो गई। हादसे में बस की केबिन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, लेकिन केबिन में कोई यात्री नहीं बैठा नहीं था, जिससे किसी भी यात्री को कोई चोट नहीं लगी। हालांकि बस में स्कूली बच्चे भी सवार थे, जो स्कूली प्रतियोगिता में खेलने के लिए जा रहे थे। हादसे के बाद यात्रियों को अन्य वाहन की सहायता से गंतव्य की ओर रवाना किया गया। गौरतलब है कि एक सप्ताह पहले इसी जगह पर बस व कार में टक्कर हो गई थी, जिसमें दो लोगों की मौत हुई थी।

कार्यकर्ता निस्वार्थ भाव से संगठन के लिए काम करें : वासुदेव देवनानी

रानीवाड़ा, (नि.सं.)। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का रानीवाड़ा पहुंचने पर भाजपा संगठन ने स्वागत किया गया। यह अभिनंदन भाजपा जिलाध्यक्ष जसराज राजपुरोहित के निर्देश पर जिला उपाध्यक्ष हीरालाल सारस्वत और मुकेश कुमार खण्डेलवाल के नेतृत्व में हुआ। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने देवनानी को फूल-मालाएं, साफा और दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया। स्वागत समारोह में भाजपा संगठन की ओर से जिला उपाध्यक्ष सारस्वत और खण्डेलवाल ने देवनानी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित भी किया।

- विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का रानीवाड़ा में स्वागत

अपने संबोधन में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने भाजपा कार्यकर्ताओं को राष्ट्रीय विचारधारा का पालन करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र हमारे लिए सबसे पहले है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के आव्हान को अपनाने पर जोर दिया, जिससे आत्मनिर्भर भारत को बल मिलेगा और विदेशी ताकतों के गलत मंसूबे नाकाम होंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से निस्वार्थ भाव से संगठन के लिए काम करने का भी आव्हान किया। पूर्व विधायक नारायण सिंह देवल ने देवनानी को सरल स्वभाव और सहज व्यक्तित्व का धनी बताया। उन्होंने कहा कि पिछली भाजपा सरकार में शिक्षा मंत्री रहते हुए देवनानी ने शिक्षा के क्षेत्र में कई कार्य किए, जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनके कार्यकाल में रानीवाड़ा, जसवंतपुरा में महाविद्यालय और आईआईटी जैसे कई संस्थान खुले, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। देवल ने विश्वास जताया कि वर्तमान विधानसभा भी राजस्थान की जनता के हित में नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। इस मौके पर राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय के पदाधिकारियों ने भी संभाग संगठन मंत्री दीपसिंह देवल और विभाग संगठन मंत्री मुकेश जोशी के नेतृत्व में देवनानी का स्वागत किया।

झुंझुनूं में 1965 के भारत-पाक युद्ध के रणबांकुरों की शौर्यगाथा जीवंत हुई

झुंझुनूं, (निसं)। जिला मुख्यालय स्थित सामुदायिक भवन में रविवार को फिल्लौरा दिवस का 60वां आयोजन धूमधाम और गरिमा के साथ किया गया। इस अवसर पर 1965 के भारत-पाक युद्ध के ऐतिहासिक फिल्लौरा टैंक बैटल की स्मृतियां जीवंत हुई।

- 60वां फिल्लौरा दिवस पर वीरता, स्मृतियां और गौरव का संगम दिखा

कार्यक्रम में पूना हॉर्स रेजिमेंट के लगभग 250 वेटरंस एक साथ जुटे।

इस विशेष अवसर पर पूना हॉर्स रेजिमेंट के लगभग 250 वेटरंस एक साथ मंच पर जुटे। फख्रे हिंद-द पूना हॉर्स कहलाने वाली इस रेजिमेंट के पूर्व सैनिकों ने पुराने साथियों से मिलकर सैनिक बंधुत्व को फिर से जीवंत किया। कार्यक्रम की शुरुआत शहीदों की स्मृति में मौन और दीप प्रज्ज्वलन से हुई। शहीद परिवारों को मंच पर सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट जनरल राजन बक्शी, मेजर जनरल विजय सिंह, ब्रिगेडियर केएस राठौड़, कर्नल अजय सिंह और रिसालदार मेजर ऑनरी लेफ्टिनेंट भंवरसिंह ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी और युद्ध से जुड़े संस्मरण साझा किए। एक पूर्व सैनिक ने भावुक होकर कहा कि आज 60 साल बाद भी हमें गर्व है कि हम उस ऐतिहासिक युद्ध का हिस्सा रहे। अन्य ने कहा कि फिल्लौरा केवल एक स्थान नहीं, यह हमारी आत्मा का हिस्सा है। राजस्थान की वीरभूमि का गौरव झुंझुनूं, झालावाड़, सीकर और नागौर जैसे जिलों की वीर परंपरा का उल्लेख करते हुए वक्ताओं ने कहा कि यह भूमि सदैव रणबांकुरे पैदा करती रही है। लेफ्टिनेंट जनरल राजन बक्शी ने कहा कि सैनिक का जीवन केवल वर्दी पहनने तक सीमित नहीं है। यह जीवन भर का संकल्प है राष्ट्र के लिए जीना और आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र के लिए मरना। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। वेटरंस ने संकल्प लिया कि फिल्लौरा दिवस हर वर्ष और अधिक भव्यता से मनाया जाएगा, ताकि युवा पीढ़ी शौर्य और बलिदान से प्रेरणा ले सके।

राजस्थान पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा सम्पन्न, 3.76 लाख से अधिक उम्मीदवारों ने आजमाया भाग्य

दोनों दिन की परीक्षा में 72 प्रतिशत अभ्यर्थियों की रही उपस्थिति, परीक्षार्थी को तलाशी और बायोमैट्रिक जांच के बाद ही परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया

जयपुर। राजस्थान पुलिस में कांस्टेबल के 10 हजार रिक्त पदों पर भर्ती के लिए 13 और 14 सितंबर 2025 को आयोजित की गई लिखित परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके सम्पन्न हुई। इस परीक्षा के लिए 5 लाख 24 हजार 740 उम्मीदवारों ने आवेदन किया था। जिनमें से 3 लाख 76 हजार 902 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए। दोनों दिनों में करीब 72 प्रतिशत अभ्यर्थियों ने इसमें हिस्सा लिया।

- **शाम को परीक्षा खत्म होने के बाद केन्द्रों के आस-पास, रेलवे स्टेशन और बस स्टैण्ड जाने वाले रास्तों पर जाम लगा सीकर रोड से कलेक्ट्रेट सर्किल तक आने में लोगों को डेढ़ से दो घंटे लगे**

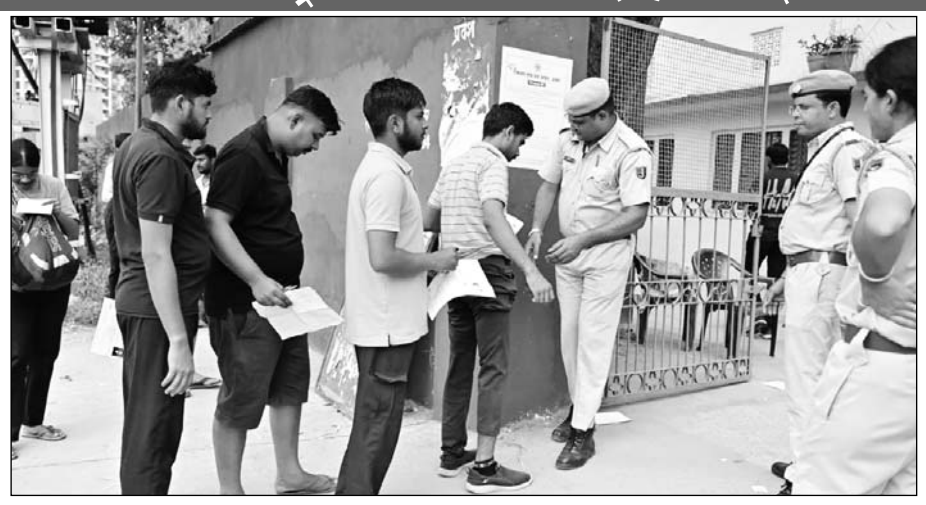

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (भर्ती एवं पदोन्नित बोर्ड) बिपिन कुमार पाण्डेय ने बताया कि रविवार को जिला पुलिस कांस्टेबल,इंटेलिजेंस, आरएसी, एमबीसी के कांस्टेबल सामान्य व चालक पद के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन प्रदेश के 21 जिलों में किया गया। प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक पहली पारी में 582 परीक्षा केंद्रों पर हुई और अपरान्ह 3 बजे से 5 तक दूसरी पारी में 21 जिलों के 580 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की गई। इन दोनों पारियों की परीक्षाओं में तीन लाख से कुछ अधिक अभ्यर्थी शामिल हुए।

इस दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। प्रत्येक परीक्षा कक्ष में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे, जिनकी निगरानी पुलिस मुख्यालय में आइटी प्रशिक्षित अधिकारी लगातार देख रहे थे।

उल्लेखनीय है कि विज्ञापित पदों के अनुसार कांस्टेबल सामान्य नॉन टीएसपी के 8 हजार 512 पद, टीएसपी के 867, चालक नॉन टीएसपी के 503, टीएसपी के 47 और कांस्टेबल बैंड के 71 पद है। विज्ञापित पदों में 03 नवसृजित आरएसी महिला बटालियन अमृता देवी, कालीबाई व पदमनी देवी के कुल 1500 पदों एवं पुलिस दूरसंचार में कांस्टेबल आईटी के 1 हजार 469 पदों को सम्मिलित किया गया है। कांस्टेबल बैंड पद के अभ्यर्थियों के लिए लिखित परीक्षा का प्रावधान नहीं रखा गया है।प्रत्येक परीक्षार्थी को तलाशी और बायोमैट्रिक जांच के बाद ही परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया गया। परीक्षा केन्द्रों पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को निष्प्रभावी करने के लिए जैमर लगाए गए थे। परीक्षा केन्द्र पर ड्यूटी करने वाले स्टाफ को विशेष पहचान पत्र जारी किए गए ताकि किसी अनधिकृत व्यक्ति का प्रवेश रोका।अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस भर्ती एवं पदोन्नित बोर्ड बिपिन कुमार पाण्डेय ने बताया कि परीक्षा की पवित्रता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए पुलिस मुख्यालय स्तर पर मॉनिटरिंग की जा रही थी। सभी 280 परीक्षा केंद्रों को सीसीटीवी कैमरों से कवर किया गया था। पुलिस मुख्यालय में एक नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया, जहाँ आईटी प्रशिक्षित अधिकारी और कर्मचारी लाइव फुटेज की निगरानी कर रहे थे। परीक्षा केंद्रों के प्रवेश द्वार पर अभ्यर्थियों की मैनुअल और हैंड-हेल्ड मेटल डिटेक्टर से सघन तलाशी ली गई। इसके अलावा सभी अभ्यर्थियों का बायोमेट्रिक सत्यापन भी किया गया। सभी केंद्रों पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे मोबाइल, पेजर आदि) को निष्क्रिय करने के लिए जैमर लगाए गए थे। परीक्षा केंद्र के अंदर किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध था। परीक्षा सामग्राी (प्रश्न पत्र, ओएमआर शीट) को अस्थाई ट्रेजरी रूम में सुरक्षित रखा गया था, जो सीसीटीवी की निगरानी में थे और हथियारबंद गार्डों द्वारा सुरक्षित थे। सामठाी की लोडिंग और अनलोडिंग की पूरी प्रक्रिया की वीडियोठााफी भी की गई। पुलिस ने संगठित गिरोहों पर विशेष निगरानी रखी, जो स्मार्ट गैजेट्स (मोबाइल, ब्लूटूथ डिवाइस) का उपयोग करके नकल कराने की कोशिश कर सकते थे।

शाम को परीक्षा खत्म होने के बाद केन्द्रों के आस-पास, रेलवे स्टेशन और बस स्टैण्ड जाने वाले रास्तों पर जाम लग गया। सीकर रोड से कलेक्ट्रेट सर्किल तक आने में लोगों को डेढ़ से दो घंटे लग गए। यही हाल झोटवाड़ा, पानीपेच, बनीपार्क क्षेत्रों में भी रहा।

परीक्षा केंद्रों के प्रवेश द्वार पर अभ्यर्थियों की मैनुअल और हैंड-हेल्ड मेटल डिटेक्टर से तलाशी ली गई व बायोमैट्रिक जांच के बाद ही परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया गया।

मोबाइल पर मिलने का मैसेज दे घर से बुलाया, कैफे में ले जाकर नाबालिग से दुष्कर्म

जयपुर। करधनी थाना इलाके में कैफे में ले जाकर नाबालिग से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़ित मां की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

मामले की जांच कर रहे एसीपी झोटवाड़ा सुरेंद्र सिंह राणावत ने बताया कि थाना इलाके में रहने वाली महिला का आरोप है कि 10 सितम्बर की रात करीब 11 बजे परिचित दो लड़कों ने उसकी 14 वर्षीय बेटी के मोबाइल फोन पर मैसेज किया और मिलने का झांसा देकर उसे घर से बाहर बुलाया। जिसके बाद दोनो उसे बहला- फुसलाकर अपने साथ एक कैफे में ले गए। कैफे में जाकर दोनो लड़कों ने नाबालिग को अपने अन्य दो दोस्तों के हवाले कर दिया। जिसके बाद एक बदमाश ने नाबालिग के साथ दुष्कर्म किया। आरोपियों के चुगंल से मुक्त होने के बाद नाबालिग जैसे-तैसे अपने घर पहुंची और घटना की जानकारी अपनी माँ को दी। गुस्साई मां ने पीड़िता को थाने ले जाकर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस ने महिला के बयानों के आधार पर आरोपियों के खिलाफ पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है।

करणी विहार थाना इलाके परिचित ने नाबालिग को मिलने का झांसा देकर होटल में बुलाया और नश करवा कर उसके साथ छेड़छाड़ की। नाबालिग ने जब आरोपी की हरकतों का विरोध किया तो उसने नाबालिग को धमकाना शुरु कर दिया। परिजनों को घटना की जानकारी मिलने के बाद उन्होने नाबालिग को थाने ले जाकर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कराया । पुलिस

- **पुलिस ने महिला की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर तलाश शुरु की**
- **विरोध करने पर आरोपी ने मारने की धमकी दी, आरोपी के चुगंल से निकलने के बाद घटना की मां को की जानकारी दी**

बयानों के आधार पर पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरु कर दी है। मामले की जांच कर रहे थानाधिकारी हवासिंह ने बताया कि करणी विहार इलाके में रहने वाली महिला का आरोप है कि शुक्रवार को परिचित युवक ने नाबालिग बेटी को मिलने का झांसा देकर होटल में बुलाया और जबरन उसे नशा करवाया। नशा होने के बाद बेहोशी की हालत में आरोपी युवक ने नाबालिग से छेड़छाड़ करना शुरु कर दिया। विरोध करने पर आरोपी ने जान से मारने की धमकी दी। आरोपी के चुगंल से निकलने के बाद नाबालिग नशे की हालत में अपने घर पहुंची और घटना की जानकारी अपनी माँ को दी। घटना की जानकारी मिलने के बाद माँ अपनी नाबालिग बेटी को लेकर थाने पहुंची। पुलिस ने महिला की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

सवाई सिंह धमोरा की स्मारिका व पुस्तक का विमोचन

जयपुर। इतिहासविद् व समाजसेवी स्व. सवाईसिंह धमोरा की स्मृति में रविवार को पांच बत्ती स्थित श्री राजपूत सभा भवन में 'पुस्तक विमोचन एवं स्मृति समारोह' का आयोजन किया गया। समारोह में स्व. सवाई सिंह धमोरा पर प्रकाशित एक स्मारिका और जमवाय माताजी पर उनके द्वारा लिखी पुस्तक "जय जमुवाय" का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम को महावीर सिंह सरवड़ी, पूर्व मंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा,राजवीर सिंह चलकोई,गुमानसिंह धमोरा,राजपूत सभा जयपुर अध्यक्ष रामसिंहचंदलाई, राजेंद्र सिंह बसेठ सहित कई वक्ताओं ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम में बद्रीसिंह राजावत सम्पतसिंह धमोरा, गोविंद सिंह मुंडियावाससहित जोधपुर, अलवर, सीकर, झुंझनू, हरियाणा, दौसा, करोलीआदि जिलों व दूर दराज से आये हुए लोगों ने सवाई सिंह धमोरा को श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस अवसर पर परस्पर समाजबंधु धमोरा के व्यक्तित्व से संबंधित संस्मरणों पर चर्चा करते नजर आये।

कार्यक्रम में सवाई सिंह धमोरा के पैतृक गाँव धमोरा से बस व निजी वाहनों से काफी लोगों ने आकर शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर सवाई सिंह धमोरा के छोटे दोहिते दिग्वियसिंह मसूदा की दोनों पुत्रियों जागृति एंव कृतिका राठौड़ ने कविता के माध्यम से धमोरा के कृतित्व एंव व्यक्यित्व पर प्रकाश डाला। इस मौके पर पुस्तक मेला भी लगाया।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने राष्ट्रदूत समाचार पत्र में भू स्वामी आंदोलन सहित सवाई सिंह धमोरा के लिखित लेखों का बार बार जिक्र किया। इस अवसर पर महिलाओं की काफी संख्या रही।

कार्यक्रम को लेकर कृष्ण वर्धन सिंह,नरेंद्र सिंह निमेड़ा,धमोरा के पोते नरेंद्र सिंह,अवधेश सिंह सहित स्वयसेवकों ने व्यवस्था संभाल रखी थी। सवाई सिंह धमोरा ने पत्रकारिता, लेखन, इतिहास और समाज सुधार के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया।राजस्थानी भाषा, साहित्य, राजपूत इतिहास और संस्कृति के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें व्यापक पहचान दिलाई. स्वतंत्रता के बाद के राजस्थान में वे राजपूत समुदाय की एक प्रभावशाली आवाज थे और कई सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से शामिल रहे।

वक्ताओं के अनुसारसवाई सिंह धमोरा ने असाधारण लगन और समर्पण के बल पर उल्लेखनीय ऊंचाइयां हासिल कीं।

धमोरा ने अपने करियर की शुरुआत एक पत्रकार के रूप में की और जल्द ही राष्ट्रदूत सहित कई प्रमुख समाचार पत्रों के लिए एक प्रसिद्ध स्तंभकार बन गए. उनकी लेखनी में गहरी अंतर्दृष्टि और स्पष्टता झलकती थी. उन्होंने मासिक प्रकाशन संघ शक्ति के संपादक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो राजपूत सामाजिक सुधार आंदोलनों का मुखपत्र था. पत्रकारिता के अलावा, उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) और दूरदर्शन के साथ भी काम किया, जहाँ उन्हें उनकी स्पष्ट प्रस्तुतियों और दमदार वॉयस वर्क के लिए सराहा गया।. 91 वर्ष की आयु तक भी वे राष्ट्रदूतसमाचार पत्रके लिए लगातार लिखते रहे।

धमोरा ने राजस्थानी और हिंदी दोनों भाषाओं में विपुल लेखन कार्य किया, जिसमें राजपूतों की वीरता, गौरवशाली इतिहास और समृद्ध संस्कृति पर गहन ध्यान केंद्रित किया गया. उनकी कृतियों को राजपूताना इतिहास के गहरे ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के प्रति उनके सम्मान के लिए व्यापक रूप से मान्यता मिली. उन्हें अक्सर राजस्थान की सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत का "जीवित विश्वकोश" कहा जाता था।उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकें और रचनाएँ: पेरू प्रकाश, गांधी गाथा, चारण चिंतन, शैतान सुजस (परमवीर चक्र विजेता मेजर शैतान सिंह के जीवन पर आधारित एक युद्ध जीवनी)चित्तौड़ के जौहर और शाके (चित्तौड़गढ़ के तीन ऐतिहासिक शाकों का विस्तृत विवेचन)बाल गीत (बच्चों की कविताओं का संग्रह)सम्राट पृथ्वीराज चौहान , गुढ़ा गौड़जी गोपीनाथ हैं।

बंधक बनाकर लूटने वाली गैंग के चार बदमाश पकड़े

जयपुर। करधनी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए लोगों को बंधक बनाकर लूटने वाली गैंग के चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इसमें दो बाल अपचारी भी शामिल है। पुलिस जांच में जांच में सामने आया कि गैंग के बदमाश मारपीट कर राहगीरों का अपहरण कर बंधक बनाते थे और फिर सुनसान जगह कपड़े उतरवाकर अश्लील वीडियो बनाकर मोबाइल-कैश लूटकर फरार हो जाते थे। पुलिस फिलहाल गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) हनुमान प्रसाद ने बताया कि करधनी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए लोगों को बंधक बनाकर लूटने वाली गैंग के आरोपी विष्णु हरिजन (19) निवासी नांगल लाडी हरमाड़ा हाल करधनी और निकेश वर्मा (21) निवासी गणेश वाटिका निवारू रोड करधनी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने वारदात में शामिल दो बालअपचारियों को निरूद्ध भी किया है। गिरोह के चारों बदमाश सुनसान जगह पर राहगीरों को पकड़ते थे और मारपीट कर कार में डालकर बंधक बनाते। सुनसान जगह ले जाकर कपड़े उतरवाकर अश्लील वीडियो बताने। मारपीट कर उसकी जेब में मिले कैश और मोबाइल लूट लेते थे। पुलिस शिकायत पर अश्लील वीडियो से धमकी देकर ब्लैकमेल करते थे। पुलिस पूछताछ में गिरने से कई खुलासे होने की संभावना जताई गई है।

बैठक में समिति का वार्षिक लेखा-जोखा पेश किया

न्यायालय कर्मचारी बचत व साख सहकारी समिति लिमिटेड साधारण सभा की वार्षिक बैठक हुई।

जयपुर। वार्षिक लेखा-जोखा न्यायालय कर्मचारी बचत एवं साख सहकारी समिति लिमिटेड जयपुर मेट्रो प्रथम, द्वितीय एवं जिला की शनिवार को विद्याधर नगर स्थित पापड़ के हनुमानजी मंदिर परिसर में साधारण सभा की वार्षिक बैठक एवं सामूहिक गोठ का आयोजन किया गया। समिति के अध्यक्ष अनिल पारीक की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में कोषाध्यक्ष किशोर केवलरामानी ने समिति का वार्षिक लेखा-जोखा पेश किया कार्यक्रम में जिला एवं सत्र न्यायाधीश महानगर-01, नंदिनी व्यास, महानगर-02 रीटा तेजपाल एवं जिला अजीत कुमार हिंगर सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत की। बैठक में पूर्व सचिव मनोज माथुर, वर्तमान सचिव पवन शर्मा, उपाध्यक्ष शुभा माथुर, रामस्वरूप मीणा, सुमन देवाना, बद्रीलाल चौधरी, रामावतार मीना, किशोर वर्मा, अश्वनी भूतिया, सतीश चंद्र गुप्ता, मोहित शर्मा, कृष्ण गोपाल, सुनील शर्मा, पदम पंडित, वीरेंद्र सोलंकी सहित अन्य न्यायिक कर्मचारी मौजूद रहें।

विधायक कालीचरण सराफ ने वार्ड 136 में किए विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण

जयपुर। मालवीय नगर विधायक कालीचरण सराफने रविवार को वार्ड 136 में विभिन्न विकास कार्यों काशिलान्यास एवं लोकार्पणकर स्थानीय निवासियों को समर्पित किया। इस अवसर पर क्षेत्रवासियों और विकास समिति के सदस्यों ने विधायक सराफ कासाफा पहनाकर और पुष्पगुच्छ भेंट कर जोरदार स्वागतकिया और उनके कार्यों के प्रति आभार जताया।स्थानीय पार्षद उषा टाटीवालने जानकारी दी किअठासेन नगर राधा गोविंद मंदिरपरिसर मेंटाइल्स कार्य और जिमका लोकार्पण किया गया। साथ ही मंदिर परिसर स्थितइंद्रधनुष रंगमंचमेंटाइल्स और पेराफिटका जीर्णोद्धार कर उसे नई रूपरेखा प्रदान की गई। इसके अलावानीलकंठ महादेव मंदिर (सी ब्लॉक)मेंसीसी रोड निर्माण कार्यका शिलान्यास कर विकास की नई शुरुआत की गई।

भाजपा जिला कार्यशाला का हुआ समापन

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी जयपुर देहात दक्षिण की जिला कार्यशाला रविवार को प्रदेश कार्यालय, जयपुर में सम्पन्न हुई। कार्यशाला में मुख्य वक्ता राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लाखावत ने संबोधित करते हुए कहा कि सेवा ही संगठन का सार है और सेवा पखवाड़ा समाज में राष्ट्रभावना जागृत करने का सशक्त माध्यम बनेगा। कार्यशाला की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष राजेश गुर्जर ने की। इस अवसर पर प्रदेश प्रवक्ता अपूर्व सिंह, प्रदेश मंत्री अजीत मांडल, स्टेफी चौहान, विधायक डॉ. कैलाश वर्मा, पूर्व विधायक निर्मल कुमावत, बस्सी से विधायक प्रत्याशी चंद्रमोहन मीणा, जिला महामंत्री शिवजीराम कुमावत, शिवप्रसाद यादव, हेमंत मीणा, जिला प्रभारी विमल अठावाल, अजय पाल सिंह, हरिमोहन शर्मा और हृदय सुमन पारीक सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में निर्णय लिया गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितम्बर से लेकर गांधी जयंती 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा का आयोजन जिलेभर में व्यापक स्तर पर किया जाएगा। इस दौरान रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य शिविर, प्रबुद्ध वर्ग संवाद, 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा, दिव्यांग सम्मान समारोह, सांसद खेलकूद प्रतियोगिताएं तथा गांधी जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।जिलाध्यक्ष राजेश गुर्जर ने कहा कि सेवा पखवाड़ा अभियान समाज में सेवा और राष्ट्रभावना को सशक्त करने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'सेवा ही संगठन' संदेश हर कार्यकर्ता के लिए प्रेरणास्त्रोत है। बैठक की खास बात यह रही कि मंडलों से आए पदाधिकारियों से सुझाव लेकर उन पर शीघ्र ही काम करने का आश्वासन दिया गया।

हिन्दी दिवस पर साहित्यकारों को किया सम्मानित

रामकिशन उपाध्याय समाज सेवा पुरस्कार बाहेती को मिला

जयपुर। हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति द्वारा श्री डूंगरगढ़ में आयोजित भव्य समारोह में संस्था के सर्वोच्च सम्मान साहित्य श्री से डॉ. पद्मजा शर्मा को सम्मानित किया गया। नंदलाल महर्षि स्मृति हिंदी सर्जन पुरस्कार जबलपुर के देवेंद्र कुमार मिश्रा, सुरेश कंचन ओझा लेखन पुरस्कार कुमार सुरेश, चंद्र मोहन हाड़ा हिमकर स्मृति पुरस्कार उपन्यास लेखक विश्वनाथ तंवर को प्रदान किया गया। रामकिशन उपाध्याय समाज सेवा पुरस्कार हरिशंकर बाहेती को प्रदत्त किया गया। बाहेती ने समर्पित राशि को दुगुना कर समिति को सौंपते हुए कहा कि इसे साहित्यिक व सेवा के कार्यों में खर्च किया जाए। शिव प्रसाद सिखवाल महिला लेखन पुरस्कार संगीता सेठी बीकानेर, शब्द शिल्पी सम्मान अजमेर के सुरेश कुमार श्रीचंदानी तथा श्याम सुंदर नगला बाल साहित्य पुरस्कार शाहजहांपुर के डॉ. नागेश पांडेय को समर्पित किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए विधायक ताराचंद सारस्वत ने कहा कि हिंदी एवं हमारी भारतीय संस्कृति दोनों एक दूसरे से जुड़ी हुई है, इसलिए संस्कृति को बचाने के लिए हिंदी को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति के साहित्यिक कार्यों की प्रशंसा करते हुए भरोसा दिलाया कि वे आगामी दिनों में गंगासिंह विश्वविद्यालय से इसको किसी न किसी रूप में जोड़ने का कार्य करेंगे। राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति के अध्यक्ष और जाने माने साहित्यकार श्याम महर्षि ने समिति के द्वारा की जाने वाली साहित्यिक सेवाओं के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। श्रीमती भगवती पारीक मनु की सरस्वती वन्दना से प्रारंभ हुए समारोह में मंत्री व संयोजक रवि पुरोहित ने संस्था की 65 वर्षीय विकास यात्रा साझा की।

हिंदी दिवस के अवसर पर "हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता- संभावनाएं और चुनौतियां" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में महारानी सुदर्शना बालिका महाविद्यालय बीकानेर के पूर्व प्राचार्य डॉ. उमाकांत गुप्त, साहित्यकार व समालोचक डॉ. गजादान चारण ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मोनिका गौड़ ने किया।

कार्यक्रम में चेतन स्वामी, बजरंग शर्मा, रामचन्द्र जी राठी, गजानंद सेवग, मदन सैनी, सत्यनारायण योगी, सत्यदीप भोजक, महेश जोशी, सोहन ओझा, भवानी उपाध्याय, तुलसीराम चौरड़िया, विजय महर्षि, महावीर माली, नारायण सारस्वत, श्रीभगवान सैनी, महावीर सारस्वत, सुशीला सारण, मीना मोरवानी, प्रतिज्ञा सोनी, सरोज शर्मा, पूनमचंद गोदारा, श्रवण गुरनानी, सुनील खांडल, नंदकिशोर पारीक, हरीराम सारण, लक्ष्मी कांत वर्मा, दयाशंकर शर्मा, कैलाश शर्मा आदि साहित्य प्रेमी व गणमान्य जन उपस्थित रहे।

हिन्दी दिवस पर साहित्यकारों को सम्मानित किया।

यात्रियों को मिल रही आधुनिक और सुरक्षित सुविधाएं

जयपुर। राजस्थान में मुख्यमंत्रीभजनलाल शर्मांके नेतृत्व में राज्य की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में अभूतपूर्व सुधार और विस्तार देखने को मिल रहा है। सरकार का उद्देश्य प्रदेश के प्रत्येक नागरिक कोसुलभ, सुरक्षित और आधुनिक यात्रा सुविधाप्रदान करना है, और इसी दिशा में राज्य सरकार लगातार प्रभावी कदम उठा रही है। राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा के अनुरूप160 नई ब्लू लाइन एक्सप्रेस बसोंको प्रदेश के 12 प्रमुख डिपो में शामिल किया गया है, जिनमें जयपुर, अजमेर, अजयमेरू, कोटपूतली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा, वैशाली नगर, विद्याधर नगर, शाहपुरा, हिण्डौन और दौसा शामिल हैं। इसके साथ ही12 सुपर लग्जरी बसोंके अधिठाहण से राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का बेड़ा और अधिक सशक्त हुआ है। धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने विशेष बस सेवाओं की शुरुआत की है। अबअयोध्या, गोवर्धन, सालासर बालाजी, रामदेवरा, श्रीनाथजी, श्रीकरणी माता, कैंची धामऔरकैलादेवीजैसे तीर्थस्थलों तक सीधी और सुविधाजनक बस सेवाएं उपलब्ध हैं।

गोविन्द देवजी मंदिर में सम्पन्न हुआ पितृ तृप्ति महायज्ञ

जयपुर। श्राद्ध पक्ष के उपलक्ष्य में रविवार को गोविन्द देवजी मंदिर प्रांगण में पंचकुंडीय पितृ तृप्ति गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री मन्माध्व गौड़ेश्वराचार्य महंत अंजन कुमार गोस्वामी के सान्निध्य में श्रद्धालुओं ने अपने दिवंगत पितृगणों की स्मृति में काले तिल, जो, चावल एवं घृत से आहुतियां अर्पित कीं।

इससे पूर्व मंदिर सेवाधिकारी मानस गोस्वामी ने ठाकुर श्री गोविन्द देवजी, वेदमाता गायत्री एवं गुरुसत्ता का पूजन किया। आचार्य पीठ से गायत्री शक्ति पीठ ब्रह्मपुरी की गायत्री कचोलिया, गायत्री तोमर, ज्योति शर्मा और सृष्टि ने प्रज्ञा गीतों के साथ यज्ञ सम्पन्न कराया।

प्रवचन में शक्तिपीठ के विद्वानों ने कहा कि पितर हमारे अदृश्य सहायक हैं। उच्च संस्कारों वाली अशरीरी आत्माएँ आकस्मिक सहायता एवं अनुग्रह प्रदान कर मार्गदर्शन करती हैं। पितरों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने से उनका आशीर्वाद जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में विशेष बल देता है। उन्होंने कहा कि जीवन में प्रगति, सद्भाव और शांति तभी संभव है जब हम अपने पूर्वजों का स्मरण कर उनके द्वारा दिखाए गए आदर्शों को आचरण में लाएँ।उन्होंने कहा कि पितरों को केवल कर्मकांड से नहीं, बल्कि अपने व्यवहार, सदाचार और सेवा कार्यों से भी तृप्त किया जा सकता है। माता-पिता और बड़ों की आज्ञा मानना, बुजुर्गों की सेवा करना, वंश परंपरा की श्रेष्ठ परंपराओं को आगे बढ़ाना ही वास्तविक पितृ तर्पण है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ आत्माएँ इतनी प्रखर होती हैं कि वे स्वप्न, विचार या किसी माध्यम से हमें संकेत देकर जीवन में सही दिशा प्रदान करती हैं। यदि हम कृतज्ञता के भाव से पितरों की स्मृति का सम्मान करें, तो वे हमारे जीवन के अदृश्य मार्गदर्शक और शुभचिंतक बनते हैं।श्रद्धालुओं ने पितरों के लिए विशेष आहुतियां अर्पित कर श्रद्धाभाव प्रकट किया। जिनका श्राद्ध भाद्रपद पूर्णिमा को था, उनके लिए भी विशेष हवन कराया गया। श्रद्धालुओं ने यज्ञ के ज्ञान-विज्ञान को समझते हुए श्रद्धापूर्वक अग्नि में आहुतियां अर्पित कीं और अपने पितरों का स्मरण किया।

- **श्रद्धालुओं ने दिवंगत पितृगणों की स्मृति में काले तिल, चावल एवं घृत से आहुतियां अर्पित की**

यज्ञ के अवसर पर कई श्रद्धालुओं ने अपना जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुरूप पंचतत्व पूजन के साथ मनाया। इस अवसर पर मंदिर प्रशासन की ओर से सभी को ठाकुर श्री गोविन्द देवजी का चित्र, प्रसाद और दुपट्टा भेंट स्वरूप प्रदान किया गया। गायत्री चेतना केंद्र, जनता कॉलोनी की ओर से सत्साहित्य की प्रदर्शनी लगाई गई, जहाँ श्रद्धालुओं ने प्रेरणादायक पुस्तकें काम लागत मूल्य पर प्राप्त कीं। यज्ञ की पूर्णाहुति में श्रद्धालुओं ने जूठन नहीं छोड़ेंगे, एक पेड़ अवश्य लगाएंगे, मोबाइल का अत्यधिक उपयोग नहीं करेंगे जैसे संकल्प लिए। साथ ही सभी ने प्रतिदिन गायत्री मंत्र जाप करने और सूर्य भगवान को अर्घ्य देने जैसी श्रेष्ठ आदतों को जीवन में अपनाने का प्रण भी किया।

गोविंद देव मंदिर की ओर से यज्ञ सामठाी निशुल्क उपलब्ध करवाई गई। श्रद्धालुओं को युग निर्माण सत्संकल्प पत्रक एवं गायत्री चालीसा भेंट स्वरूप दी गई। आगामी रविवार, 21 सितम्बर को प्रात: 8 से 10 बजे तक पितृ पुष्टि पंचकुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन पुन: निशुल्क किया जाएगा।

युवा पीढ़ी ''विकसित एवं श्रेष्ठ भारत'' के लिए गौ सेवा से जुड़े : वासुदेव देवनानी

''हरियालो राजस्थान'' व ''एक पेड़ माँ के नाम'' अभियान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

जालोर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के मुख्य आतिथ्य में रविवार को सांचौर शहर स्थित शिवशक्ति नगर में ''हरियालो राजस्थान'' व ''एक पेड़ माँ के नाम'' अभियान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साथ ही गौ कृषि जीवन अभियान का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए युवा पीढ़ी वर्ष 2047 तक ''विकसित एवं श्रेष्ठ भारत'' के निर्माण हेतु प्रकृति एवं गौ सेवा से जुड़े। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में हमारा देश विकास के पथ पर निरंतर प्रगतिरत है तथा वर्तमान में देश की अर्थव्यवस्था जापान को पीछे छोड़ते हुए चौथे पायदान पर काबिज हो गई है। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि भारत आगामी वर्षों में सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति के उच्च मूल्यों के समावेशन से पुन: विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर हैं। उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए कृषि पद्धतियों में हो रहे आधुनिक बदलावों तथा ऑर्गेनिक खेती को अपनाने की बात कही। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत ने कहा कि वर्तमान में कृषि में रसायन का अधिक उपयोग होने के कारण भूमि बंजर हो रही है तथा रसायनों से मानवों व पशुओं में बीमारियां फैल रही है। हमें गौ संरक्षण करने के साथ ही जैविक खेती करने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में वृक्षारोपण कर उनका संरक्षण करने के साथ ही हमें प्रकृति व पर्यावरण के संतुलन की दिशा में अग्रसर होना होगा।

इस अवसर पर श्रवणसिंह राव बोरली ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जालोर जिले की गौशालाओं में 15 हजार पौधारोपण तथा क्षेत्र की 75 जरूरतमंद बालिकाओं को सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से लाभ प्रदान करवाने का कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम में राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी समेत अतिथियों ने सुकन्या समृद्धि योजना के तहत बालिकाओं को प्रतीक स्वरूप सहायता राशि के चैक प्रदान किए।

■ वर्तमान में कृषि में रसायन का अधिक उपयोग होने के कारण भूमि बंजर हो रही है : सांसद राजेन्द्र गहलोत

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने वृक्षारोपण करते हुए पौधों से सुसज्जित वाहनों को हरी झंडी दिखाकर गौशालाओं के लिए रवाना किया। अतिथियों ने सुकन्या समृद्धि योजना के तहत 75 बालिकाओं को प्रतीक स्वरूप सहायता राशि के चैक प्रदान किए गए। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने उपस्थित जनसमूह को वृक्षारोपण करने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित, सांचौर विधायक जीवाराम चौधरी, रानीवाड़ा के पूर्व विधायक नारायण सिंह देवल, जिला प्रमुख राजेश राणा, जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के गावंडे, अतिरिक्त जिला कलेक्टर सांचौर दौलतराम चौधरी, उपखंड अधिकारी सांचौर प्रमोद कुमार, खीमाराम सुथार, श्रवण मोदी, मंगलसिंह सिराणा सहित क्षेत्र के साधु-संत, जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में शहरवासी उपस्थित रहे।

बयाना स्टोन क्रशर पर गैस सिलेंडर फटा, वेल्डर झुलसा

गैस कटर से काम कर रहे वेल्डर का सिलेंडर अचानक लीक हो गया था

बयाना/भरतपुर, (निसं)। बयाना थाना क्षेत्र के भगोरी गांव स्थित एक स्टोन क्रशर पर बड़ा हादसा हो गया। गैस कटर से काम कर रहे एक वेल्डर का सिलेंडर अचानक लीक हो गया, जिससे चिंगारी लगते ही उसमें आग भड़क उठी। इस हादसे में वेल्डर गंभीर रूप से झुलस गया। झुलसे वेल्डर की पहचान उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के गांव खरेबली निवासी सरफराज (28) के रूप में हुई है।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सरफराज स्टोन क्रशर पर गैस कटर से लोहे की प्लेट काट रहा था, तभी गैस सिलेंडर के पाइप में लीकेज हो गया।

■ स्थानीय लोगों ने स्टोन क्रशर पर सुरक्षा के इंतजामों की कमी को लेकर नाराजगी जताई

कुछ ही पलों में चिंगारी ने आग का रूप ले लिया और सरफराज लपटों की चपेट में आ गया। साथ काम कर रहे मजदूरों ने शोर मचाकर तुरंत काम बंद कराया और किसी तरह आग बुझाकर सरफराज को बयाना उप जिला अस्पताल पहुंचाया। मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। उप जिला अस्पताल के पीएमओ डॉ. जोगेंद्र सिंह गुर्जर ने बताया कि सरफराज का चेहरा गंभीर रूप से झुलस गया है। उसे तुरंत प्राथमिक उपचार दिया गया है। फिलहाल उसकी हालत स्थिर है, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर उसे बेहतर इलाज के लिए उच्च चिकित्सा केंद्र भरतपुर रेफर किया जा सकता है। स्थानीय लोगों ने स्टोन क्रशर पर सुरक्षा के इंतजामों की कमी को लेकर नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि ऐसे खतरनाक काम में पर्याप्त सुरक्षा उपकरण और सतर्कता बरती जानी चाहिए ताकि भविष्य में ऐसे हादसे रोके जा सकें।

लोक अदालत में जिला जज ने दिव्यांग की समस्या सुनी

भरतपुर, (निसं)। लोक अदालत में जिला सत्र न्यायाधीश केशव कौशिक ने मानवता का परिचय दिया है। लोक अदालत में बिजली विभाग के अधिकारी खुद कुर्सी पर बैठकर दिव्यांग व्यक्ति को जमीन पर बिठाकर समस्या सुन रहे थे। जिला जज कौशिक ने दिव्यांग व्यक्ति को अपनी बगल की कुर्सी पर बैठकर समस्या सुनी। बिजली विभाग के स्टाफ के प्रति नाराजगी जताई। दिव्यांग व्यक्ति को जिला जज की मानवता के बाद बिजली बिल में 55 प्रतिशत की छूट मिली। दिव्यांग व्यक्ति 2019 में बिजली बिल जमा नहीं करने पर बिजली कनेक्शन काटने के कारण अपनी समस्या को लेकर लोक अदालत में आया था। दिव्यांग व्यक्ति के चेहरे पर दिखाई दी खुशी। जज केशव कौशिक के कार्य की सराहना हो रही है।

हमीरवास पुलिस ने सड़क किनारे पड़े अज्ञात व्यक्ति को घर पहुंचाया

सादुलपुर, (निसं)। घर से तीन-चार दिनों से लापता एक 50 वर्षीय अज्ञात व्यक्ति को हमीरवास थाना पुलिस ने उसके परिजनों तक पहुंचाकर मानवता का परिचय दिया है।

जानकारी के अनुसार अज्ञात व्यक्ति सादुलपुर-पिलानी सड़क पर स्थित गांव थिरपाली छोटी और थिरपाली बड़ी के बीच सड़क किनारे पुलिस को बदहवास हालत में मिला। इस सम्बंध में हमीरवास थाना अधिकारी जय कुमार भादू ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली कि गांव थिरपाली छोटी और थिरपाली बड़ी के बीच में सड़क से थोड़ी दूर एक अज्ञात व्यक्ति पड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि पुलिस मौके पर पहुंची तो देखा कि अज्ञात व्यक्ति की हालत खराब है और चलने- फिरने व बोलने की हालत में नहीं था। शरीर पर कपड़े भी नहीं थे। ऐसी हालत में देखकर पुलिस ने अज्ञात का प्राथमिक उपचार करवाकर और नहला-धूलाकर नए कपड़े पहनाए तथा सरकारी वाहन में बैठाकर खाना खिलाया। थाना अधिकारी भादू ने बताया कि तसल्ली देकर उसका नाम व पता पूछा तो अपना नाम मंदरूप (50) निवासी बागोर पुलिस थाना खेतड़ी जिला झुंझुनू हाल गांव भगीना पुलिस थाना पिलानी होना बताया। पुलिस ने पूछताछ में यह जानकारी भी हासिल की बुजुर्ग मन्दरूप अपनी बहन भतेरी पत्नी कुरडाराम के साथ गांव भगीना में ही रहता है। पुलिस ने मौके पर अन्य लोगों की मदद से घर से लापता हुए बुजुर्ग मंदरूप के बारे में पूछताछ की तथा बुजुर्ग के भांजे सोमवीर के मोबाइल नम्बर प्राप्त कर घटना के बारे में अवगत करवाया, जिस पर सोमवीर ने पुलिस को बताया कि मंदरूप उसके मामा लगते हैं जो मानसिक रूप से परेशान हैं, दिमाग की हालत ठीक नहीं है, मंदबुद्धि होने के कारण कभी-कभी घर से बाहर निकल जाते हैं और वापस घर आ जाते हैं, लेकिन 3-4 दिनों से घर से बाहर निकल गया था। खोजबीन भी की लेकिन कोई पता नहीं चल सका। जिस पर पुलिस ने उसके भांजे सोमवीर और उसकी बहन भतरी देवी को सौंपा, तो बहन की आंखों में खुशी के आंसू झलक उठे तथा हाथ जोड़कर के पुलिस का आभार जताया। थाना अधिकारी जयकुमार भादू, हेड कांस्टेबल रामनारायण ने पुलिस दल के साथ 3-4 दिनों से लापता व्यक्ति को उसके परिवार जनों को पहुंचाने की कार्रवाई की है।

■ लापता भाई को देखकर बहन के झलके आंसू, पुलिस का आभार जताया

किंग कोबरा का रेस्क्यू कर जंगल में छोड़ा

बूंदी, (निसं)। कोबरा खतरे की स्थिति में अपने शरीर का अगला हिस्सा जमीन से लगभग 3 से 4 फीट (1 से 1.2 मीटर) तक उठा सकता है, लेकिन किंग कोबरा जैसे कुछ बड़े कोबरा एक इंसान जितने ऊँचे भी खड़े हो सकते हैं। खतरा महसूस होने पर कोबरा फन फैलाकर खुद को बड़ा दिखाने की कोशिश करता है।

बून्दी के नैनवां रोड़ से किंग कोबरा का रेस्क्यू किया गया था। जानकारी के अनुसार बूंदी के नैनवां रोड गेट नंबर 6 प्रेम नगर कॉलोनी में रविवार को प्रहलाद बैरवा के घर एक कोबरा सांप की सूचना पर टाइगर रिजर्व के रेस्क्यू एक्सपर्ट कुलदीप सिंह हाडा मौके पर पहुंचे और कड़ी मशक्कत के बाद कोबरा का सफलपूर्वक रेस्क्यू किया और उसे जंगल में सुरक्षित छोड़ा। हाडा ने बताया कि सांप की लम्बाई 6 फिट थी। सांप का रेस्क्यू करने पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। इस पर एक्सपर्ट हाडा ने वहां के आस पास की कॉलोनी वासियों को सांप के बारे में जानकारी दी और बारिश के दौरान घरों में साफ सफाई रखने की सलाह दी। सांप का सफलपूर्वक रेस्क्यू करने पर कॉलोनीवासियों ने एक्सपर्ट हाडा को धन्यवाद दिया।

बून्दी के नैनवां रोड़ से किंग कोबरा का रेस्क्यू किया गया।

जिला स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ

बीदासर, (निसं)। शिवाजी बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय बीदासर के प्रांगण में रविवार को चार दिवसीय 69 वीं जिला स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ समाजसेवी गिरधारी लाल मेहला की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि एसीबीईओ द्वितीय चरण सिंह घोटड़ व विशिष्ट अतिथि पार्षद महेंद्र माली, विद्यालय संरक्षक रामस्वरूप रक्षक, राकेश साहू थे। मुख्य अतिथि चरण सिंह ने झंडारोहण कर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। प्रतियोगिता के संयोजक व प्रधानाचार्य मुकेश रक्षक ने बताया कि चार दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता में जिले की 28 टीमों के 450 खिलाड़ी भाग ले रहे है। एसीबीईओ घोटड़ ने कहा कि खिलाड़ी खेल को खेल की भावना से खेले।विद्यालय संरक्षक रामस्वरूप रक्षक ने कहा कि हमारे जीवन में खेल व व्यायाम का सबसे बड़ा महत्व है।

पोस्टर का विमोचन

सादुलपुर, (निसं)। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद सादुलपुर व राजगढ द्वारा रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर भाजपा नेता कृष्ण भाकर ने पोस्टर का विमोचन किया। भाकर ने कहा कि 17 सितम्बर को लगने वाले रक्तदान शिवर में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर रक्तदान करें। इस अवसर पर अध्यक्ष तेयुप सादुलपुर उमेश लुणावत, मंत्री प्रमोद सरावगी, प्रमोद दुग्गड, दीपक मल, मनोज सोनी, राजगढ़ तेयु अध्यक्ष ऋषभ जैन व मंत्री अभिषेक सरावगी सहित युवा साथी मौजूद रहे।

मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

झुंझुनूं। छात्र संगठन एसएफआई ने राजकीय महाविद्यालय में महाविद्यालय परिसर संबंधी मांगों को लेकर प्राचार्य को ज्ञापन सौंपा।

जिला उपाध्यक्ष विकास जैदिया ने बताया कि छात्र-छात्राओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उन्होंने महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर स्थाई गार्ड की व्यवस्था की मांग की। जिला महासचिव प्रिया मिठारवाल ने बताया कि महाविद्यालय का वाटर प्यूरीफायर भी कुछ महीनों से खराब हैं और पानी की टंकियों की सफाई भी नहीं हुई हैं। जिसके संबंध में उन्होंने ज्ञापन दिया है। विक्रम सिंह ने बताया कि महाविद्यालय मैदान को साफ करने की मांग रखी है। पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष विकास गुर्जर ने बताया कि इसके साथ ही एसएफआई ने एक अलग से ज्ञापन शिक्षा मंत्री के नाम सौंपा। जिसमें उन्होंने एनसीसी और स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी साहित्य विषय की मांग की।

इस मौके पर विकास गुर्जर, कंचन, गायत्री, अंकिता, साक्षी, अंकित, सलमान, सुर्जित, आदित्य बजावा, तौफीक पठान, मोनू चौधरी, सुमित, रक्षित, गौरव, अक्षय, योगेश, देव, महेंद्र आदि मौजूद रहे।

विप्र फाउंडेशन ने प्रतिभाओं का सम्मान किया

बुहाना, (निसं)। खेमका कुलदेवी मंदिर प्रांगण में विप्र फाउंडेशन जिला इकाई व बुहाना उपखंड की ब्राह्मण समाज विकास समिति सिंघाना-बुहाना के संयुक्त तत्वावधान में गौड़ ब्राह्मण महासभा के तहसील अध्यक्ष गुरुदयाल शर्मा की अध्यक्षता व विफा के जिला संयोजक उमाशंकर महमिया, संरक्षक राजेंद्र जोशी, सुभाष शर्मा चिड़ावा, एडवोकेट सुशील जोशी, जिला संगठन महामंत्री रामगोपाल महमिया, जिला मंत्री वशिष्ठ शर्मा, चिड़ावा तहसील अध्यक्ष पृथ्वीराज शर्मा, विजय कुमार शर्मा के आतिथ्य में समारोहपूर्वक बुहाना के सौरभ शर्मा का समाज में उत्कृष्ट योगदान व उपलब्धियों के लिए व कड़ी मेहनत कर सरकारी सेवा में राजपत्रित पद प्राप्त करने पर उनका पुष्पमाला, दुपट्टा, साफा, गोल्ड मैडल पहनाकर व अभिनंदन पत्र देकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम संयोजक ब्राह्मण समाज सेवा समिति बुहाना, सिंघाना के अध्यक्ष व विफा के उपाध्यक्ष एडवोकेट नरेश भारद्वाज ने बताया कि समाज में उल्लेखनीय कार्य करने वालों व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान करने से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में समाज की प्रतिभाओं की खोज कर गांव ढाणियों तक युवाओं को प्रेरित किया जा रहा है। जिससे विप्र एकता को बल मिलेगा। युवाओं को प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर समाज के अन्य कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी चर्चा की गई। अभिनंदन पत्र का वाचन महेश शर्मा धुलवा ने किया, जबकि मंच का संचालन ब्राह्मण समाज विकास समिति बुहाना के महामंत्री डॉ. सुरेंद्र शर्मा ने किया। आए हुए अतिथियों का व समाज के गणमान्यजन का धन्यवाद बुहाना सिंघाना ब्राह्मण विकास समिति के अध्यक्ष एडवोकेट नरेश भारद्वाज ने ज्ञापित किया। नंदकिशोर शर्मा, निरंजलाल, मनोहर जोशी, बजरंगलाल, बाबूलाल, चंद्रप्रकाश शर्मा, भास्कर शर्मा, महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रद्धा शर्मा, अनिता भारद्वाज, पवन शर्मा, रविदत्त वशिष्ठ, संतोष कौशिक, हवलदार नथमल शर्मा पुहनिया आदि विप्र समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

तीन वर्ष बाद भीण्डर का झडू बांध छलका

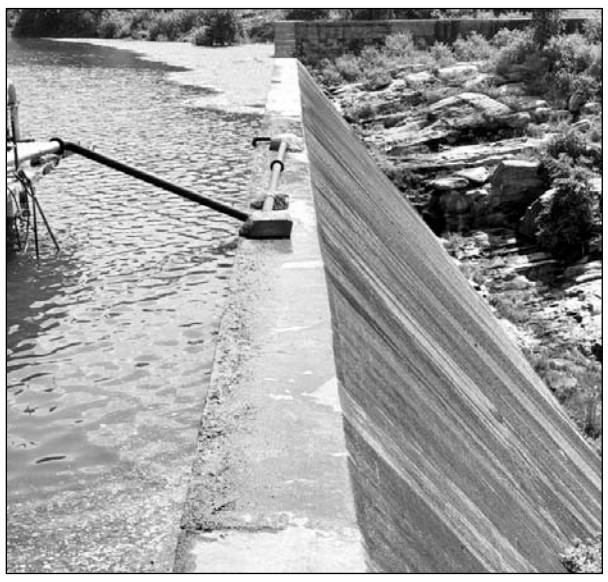

भीण्डर का प्रमुख जलस्त्रोत झडू बांध छलकता हुआ।

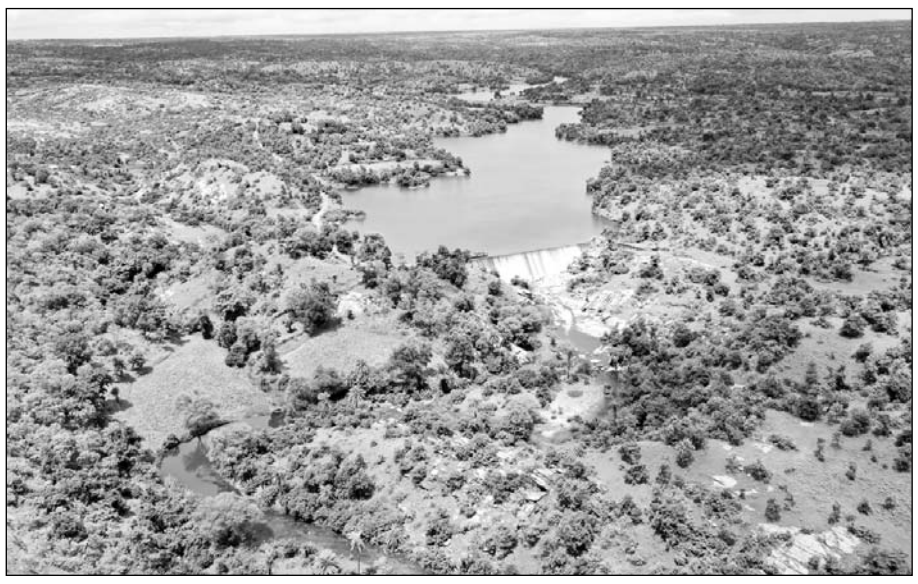

मोतिदा पंचायत क्षेत्र में स्थित झडू बांध पहाड़ियों के बीच बना हुआ है।

भीण्डर, (निसं)। भीण्डर नगर की पेयजल का प्रमुख जल स्त्रोत झडू बांध 14 सितंबर रविवार सुबह 10.30 बजे छलक गया। 2022 के बाद से पिछले तीन वर्षों से छलकने का इंतजार कर रहे भीण्डरवासियों के लिए खुशियों का दिन लेकर आया। 36 फीट भराव क्षमता वाले झडू बांध में 26 एमसीएफटी पानी जमा होता है। इस बांध से भीण्डर नगर की करीब 27 हजार आबादी को अगले 15 माह तक बिना रूके पेयजल सप्लाई की जा सकती है। 12 वर्षों से लगातार छलक रहा झडू बांध पिछले दो वर्ष 2023 व 2024 में कम बारिश के कारण नहीं छलक सका था।

पहाड़ों के बीच बनाया हुआ है झडू बांध :- भीण्डर से महज 5 किमी दूर मोतिदा पंचायत क्षेत्र में स्थित झडू बांध पहाड़ियों के बीच निर्मित कर रखा है। 26 एमसीएफटी पानी की भराव क्षमता वाले झडू बांध के चारों तरफ पहाड़ियां स्थित है। यहां ओवरफ्लो होकर जाने वाले पानी का रास्ता भी पहाड़ियों के बीच से ही गुजरता है। यहां का प्राकृतिक नजारा देखते ही बनता है। झडू बांध से ओवरफ्लो होकर जाने वाला पानी आकोला-पाणुन्द से गुजर रही गोमती नदी से होकर जयसमंद में मिलता है।

अच्छी बारिश और पहाड़ों से हुई पानी की तेज आवक :- भीण्डर नगर की पेयजल सप्लाई का प्रमुख जलस्त्रोत झडू बांध पिछले 8 वर्षों में से 6 बार अगस्त माह में छलक गया तो दो बार सितम्बर की शुरूआत में छलका है, लेकिन पिछली बार कमजोर मानसून के चलते झडू बांध पहली बार अक्टूबर माह में छलका था। भीण्डर नगर की पूरे वर्षभर होने वाली पेयजल सप्लाई का करीब 70 प्रतिशत पानी इस बांध से ही लिया जाता है। जुलाई व अगस्त माह में अच्छी बारिश होने से पानी की अच्छी आवक हुई और पहाड़ियों से लगातार पानी की आवक होने से बांध लबालब हो गया।

15 वर्षों में 13 बार छलका, दो वर्ष में नहीं आया पानी :- भीण्डर नगर का प्रमुख जल स्त्रोत झडू बांध पिछले 15 वर्षों में 13 बार छलका है। वर्ष 2011 से 2022 तक लगातार प्रतिवर्ष छलकता रहा, लेकिन पिछले दो वर्षों में कम बारिश की वजह से 2023 व 2024 में बांध में पानी नहीं भरा, लेकिन इस वर्ष पिछले सप्ताह लगातार बारिश से पानी की अच्छी आवक होने से आज झडू बांध छलक गया। इससे पहले वर्ष 2008 से 2010 तक, लगातार तीन वर्ष तक भी बांध में पानी की कमी रही थी, लेकिन वर्ष 2011 से 2022 तक लगातार छलकता आ रहा है।

■ भीण्डर की 27 हजार आबादी के पेयजल का प्रमुख जलस्त्रोत है झडू बांध

■ 36 फीट भराव क्षमता वाले झडू बांध में 26 एमसीएफटी पानी जमा होता है

भाजपा के सेवा पखवाड़ा अभियान को लेकर जिला कार्यशाला संपन्न

झुंझुनूं, (निसं)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 75वां जन्मदिन 17 सितंबर को मनाया जाएगा। इस दिन से 15 दिनों के लिए भाजपा की ओर से सेवा पखवाड़े का आगाज होगा, जिसमें सामाजिक सरोकार के साथ-साथ मोदी सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी देकर भाजपा के नेता और कार्यकर्ता आमजन के बीच जाएंगे।

सेवा पखवाड़े से पूर्व रविवार को झुंझुनूं बीजेपी की ओर से जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी मुख्य वक्ता भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री अलका गुर्जर थी। जिलाध्यक्ष हर्षिनी कुलहरि की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला को झुंझुनूं विधायक राजेंद्र भांबू, खेतड़ी विधायक इंजीनियर धर्मपाल गुर्जर तथा भाजपा जिला महामंत्री राजेश दहिया आदि ने संबोधित किया। इस मौके पर भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री अलका गुर्जर ने बताया कि भाजपा एक राजनैतिक दल है, लेकिन सामाजिक सरोकारों में भी हमेशा आगे रहता है। उन्होंने बताया कि 17 सितंबर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन से लेकर दो अक्टूबर महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री की जयंती तक भाजपा सेवा पखवाड़ा मनाएगी। इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 75वां जन्मदिन है, इसलिए इस मौके को ऐतिहासिक बनाने के लिए ना केवल मेडिकल कैंप, ब्लड डोनेशन कैंप, नमो मैराथन, सांसद खेलकूद प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाएगा, बल्कि आत्मनिर्भर भारत, एक राष्ट्र श्रेष्ठ राष्ट्र, सबका साथ सबका विकास के नारों को भी साकार किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 25 सितंबर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती है। इस दिन से लेकर पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिन 25 दिसंबर तीन महीने तक आत्मनिर्भर भारत की दिशा में काम होगा। युवाओं को सरकारी योजनाओं से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। इस बार सेवा पखवाड़े के दौरान भी और सेवा पखवाड़े के बाद भी जीएसटी में दी गई छूट को लेकर आमजन को जागरूक किया जाएगा। जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फेस्टिव सीजन से पहले जीएसटी की दरों में कमी है। उससे एक गृहिणी खुश है। टैक्स भी उन चीजों का कम किया गया है। जो आमजन के काम आने वाली है। इस मौके पर सेवा पखवाड़ा अभियान के जिला संयोजक जगदीश सोनी पिलानी ने अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। जीएसटी अभियान के जिला संयोजक एक सीए ने कर प्रणाली पर प्रकाश डाला। आत्मनिर्भर भारत अभियान के सह संयोजक संजय मोरवाल ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं से जन जन को जागरूक करने को कहा। संचालन जिला महामंत्री योगेन्द्र मिश्रा ने किया।

■ सामाजिक सरोकारों को साथ लेकर चलने वाला दल है भाजपा : अल्का गुर्जर

इस दौरान हर घर तिरंगा अभियान में राजस्थान में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर जिला संयोजक सुनिल लांबा व मन की बात कार्यक्रम में प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर जिला संयोजक महावीर ढाका को राष्ट्रीय मंत्री अल्का गुर्जर द्वारा दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। इन अभियानों में विधानसभा में अव्वल रहने पर मंडावा, खेतड़ी व नवलगढ़ विधानसभा संयोजकों को भी सम्मानित किया गया।

मुझे लगता है कि बीसीसीआई 22 अप्रैल के नरसंहार को भूल गया है। जब आतंकवाद के कारण पाकिस्तान से सभी तरह के रिश्ते खत्म हो चुके हैं, तो क्रिकेट क्यों खेला जा रहा है?
- ऐशान्या द्विवेदी

शुभम द्विवेदी की पत्नी, भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶

मेघना सज्जनार

मेघना सज्जनार ने रविवार को महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल में कांस्य पदक के साथ विश्व कप में अपना पहला पदक जीता, जिससे भारत ने सत्र के अंतिम आईएसएसएफ विश्व कप (राइफल/पिस्टल) में पांचवें स्थान पर रहकर अपने अभियान का अंत किया। मेघना ने फाइनल में 230.0 का स्कोर बनाकर कांस्य पदक जीता। इस स्पर्धा में चीन की उभरती हुई स्टार पेंग शिनलू का दबदबा रहा, जिन्होंने 255.3 के स्कोर के साथ हमवतन वांग ज़िफ़ेई के 254.8 के स्कोर का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा। नॉर्वे की जेनेट हेग डुएस्टैड ने रजत पदक जीता।

क्या आप जानते हैं ?... भारत बनाम पाकिस्तान (23 फरवरी 2025): चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में इस मैच में भारत ने पाकिस्तान को 6 विकेट से हराकर शानदार जीत दर्ज की थी।

दौसा क्रिकेट अंडर -23 टीम घोषित

जयपुर, 14 सितम्बर। जिला क्रिकेट संघ के सचिव ब्रजकिशोर उपाध्याय ने बताया कि आरसीए द्वारा 15. 9.2025 से अंडर -23 टूर्नामेंट आयोजित किया जा रहा है जिसके लिए जिले की टीम में निम्न खिलाड़ी लिए गए है। सचिन शर्मा, देवकृत शर्मा, ध्रुव सेठी, जतिन शर्मा, दिव्यांशु घोसिंगा, राम शर्मा, विशाल सिंह, नमन शर्मा, भावेश शर्मा, प्रांजूल शर्मा, प्रदीप सैनी, पृथ्वी नागरवाल, लीलाधर मीणा, शान अवस्थी, आदित्य भट्ट, मोहित जैमन, संजय मीणा। डीसीए के सचिव बृज किशोर उपाध्याय द्वारा यह भी बताया गया कि पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी जिले की टीम में दूसरे जिले के खिलाड़ियों को शामिल नहीं किया गया है लेकिन टीम का प्रदर्शन बिल्कुल आशानूरूप नहीं आ रहा है। हम हमारे जिले के खिलाड़ियों को ज़्यादा से ज़्यादा मौक़ा देना चाहते है परन्तु दौसा के खिलाड़ी निराश कर रहे है। यदि टीम का रिजल्ट इस बार भी ठीक नहीं आता है तो हमे एनओसी प्लेयर खिलाने पर विचार करना होगा ।टीम का चयन पूर्ण पारदर्शिता के साथ किया गया है उम्मीद करते है टीम अच्छा प्रदर्शन करेगी। इस टीम के साथ टीम मैनेजर वेंकटेश शर्मा और कोच सुखराम गुर्जर होंगे।

जयपुर पोलो टीम ने कॉग्निवेरा को 8- 7 से हराया

जयपुर, 14 सितम्बर। जयपुर पोलो टीम ने आज चिंकारा पोलो कप के फ़ाइनल में जीत का जश्न मनाया, जिसमें उन्होंने कोग्निवेरा स्टैलियंस को 8-7 गोल से हराया। लांस वॉटसन ने जयपुर के लिए शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 गोल किए, जबकि बॉतिस्ता अल्बर्डी ने 5 गोल करके स्टैलियंस को मुकाबले में बनाए रखा।

सम्मानित निगाहों के सामने रोमांचक समापन: अंतिम क्षणों में स्कोर बराबरी पर था, लेकिन अंगद कलां ने निर्णायक पेनल्टी शॉट लेते हुए जयपुर की जीत सुनिश्चित की और खिलाड़ियों व समर्थकों के बीच जश्न का माहौल बना दिया। कैवेलरी पोलो ग्राउंड के आसपास का माहौल उत्साहपूर्ण था, क्योंकि प्रशंसकों ने शानदार नाटकीयता और उच्च स्तरीय घुड़सवारी का प्रदर्शन देखा। फाइनल के मुख्य अतिथि 61वीं सब एरिया के जीओसी इन सी थे, जिनके साथ गणमान्य नागरिक और कई यादगार अतिथि थे। 61वीं कैवलरी के पूर्व कमांडेंट और वर्तमान अधिकारी मौजूद थे। उनकी उपस्थिति ने जयपुर के खेल कैलेंडर में चिंकारा पोलो कप के महत्व को रेखांकित किया और प्रतिभागियों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

भारत-पाकिस्तान मैच का विरोध

देश की सुरक्षा और शहीदों का सम्मान किसी भी खेल या आर्थिक लाभ से कहीं बड़ा है : पठान

जयपुर, 14 सितम्बर। कांग्रेस खेल प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमीन पठान ने पाकिस्तान से भारत के क्रिकेट मैच को लेकर कहा कि पाकिस्तान लगातार सीमा पार से आतंकवाद, घुसपैठ और देशविरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देता रहा है। ऐसे समय में भारत-पाकिस्तान के बीच खेल मुकाबले आयोजित करना शहीदों और देशवासियों की भावनाओं का अपमान है। हम यह मानते हैं कि खेल का उद्देश्य भाईचारा और सौहार्द बढ़ाना है, परंतु जब तक पाकिस्तान अपनी नीतियों और आतंकवाद को समर्थन देने वाले रवैये में बदलाव नहीं करता, तब तक भारत को किसी भी प्रकार के खेल, सांस्कृतिक या राजनयिक संबंधों से दूरी बनाए रखनी चाहिए। हमारी स्पष्ट मांग है कि बीसीसीआई और केंद्र की भाजपा सरकार इस मैच को रद्द करे तथा पाकिस्तान के साथ खेल संबंधों को पूरी तरह समाप्त किया जाए। राष्ट्र की सुरक्षा और शहीदों का सम्मान, किसी भी खेल या आर्थिक लाभ से कहीं बड़ा है। पाकिस्तान द्वारा लगातार आतंकवाद और देश विरोधी गतिविधियों के समर्थन की कड़ी निंदा करते हैं। ऐसे हालात में भारत-पाकिस्तान के बीच किसी भी प्रकार का क्रिकेट मैच खेलना शहीदों और देशभक्त नागरिकों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ है। हमारे जवान हर दिन शहीद होते हैं, ऐसे में खेल संबंध रखना शहीदों का अपमान है। यह केवल क्रिकेट का खेल नहीं, बल्कि राष्ट्र की गरिमा और आत्मसम्मान से जुड़ा मामला है। खेल और आतंक एक साथ नहीं चल सकते - यह स्पष्ट संदेश देना जरूरी है।1962 से 1977 में पाकिस्तान से एक मैच भी नहीं खेला पुर जोर विरोध किया। 1986 और 1999 में हमने एशिया कप का बहिष्कार किया और 1993 में एशिया को बर्खास्त करना पड़ा क्योंकि हमने पाकिस्तान के साथ खेलने से मना कर दिया था। मुंबई हमले के कारण 2008 में चैंपियन ट्रॉफी में पाकिस्तान से खेलने से मना कर दिया था हमने। भाजपा के केंद्रीय मंत्री मैच के फायदे गिना रहे हैं। अनुराग ठाकुर और मनोहर लाल खट्टर कह रहे है की खेल और सियासत अलग-अलग है।

भारत ने पाकिस्तान को सात विकेट से हराया

दुबई 14 सितंबर। कुलदीप यादव (तीन विकेट), जसप्रीत बुमराह और अक्षर पटेल (दो-दो विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी के बाद कप्तान सूर्य कुमार यादव (नाबाद 47) अभिषेक शर्मा (31), तिलक वर्मा (31) की बदौलत भारत ने रविवार को एशिया कप के छठे मुकाबले में 25 गेंदे शेष रहते पाकिस्तान को सात विकेट से हरा दिया।

128 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम के लिए अभिषेक शर्मा और शुभमन गिल की सलामी जोड़ी ने तूफानी अंदाज में 22 रन जोड़े। दूसरे सैम अयूब ने शुभमन गिल सात गेंदों में 10 रन को आउटकर भारत को पहला झटका दिया। इसके बाद चौथे ओवर में सैम अयूब ने अभिषेक शर्मा को आउटकर भारत के रनों की रफ्तार को कम करने का प्रयास किया। अभिषेक शर्मा ने 13 गेंदों में चार चौके और दो छक्के लगाते हुए 31 रनों की पारी खेली । इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान सूर्य कुमार यादव और तिलक वर्मा की जोड़ी ने संभलकर खेलते हुए तेजी के साथ रन बटोरे। इन दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट लिये 56 रन जोड़े। 13वें ओवर में सैम अयूब ने तिलक वर्मा (31) को बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। भारत ने 15.5 ओवरों में तीन विकेट पर 131 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया। सूर्यकुमार यादव ने 37 गेंदों में पांच चौके और एक छक्का लगाते हुए नाबाद 47 रनों की पारी खेली। शिवम दुबे ने नाबाद 10 रन बनाये। सूर्य कुमार यादव ने भारत के लिए विजयी छक्का लगाया। पाकिस्तान की ओर से सैम अयूब ने तीन विकेट लिये।

इससे पहले आज यहां टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने मात्र छह रन के स्कोर पर अपने दो विकेट गंवा दिये। सैम अयूब को पहले ही ओवर में हार्दिक पांड्या ने आउट किया। मोहम्मद हारिस (तीन) का जसप्रीत बुमराह ने शिकार किया। इसके बाद फखर जमान ने साहिबजादा फरहान के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट के लिए 39रनों की साझेदारी हुई। आठवें ओवर में अक्षर पटेल ने फखर जमान (17) को आउटकर इस साझेदारी का अंत किया। कप्तान आगा सलामान (तीन) को भी अक्षर पटेल ने आउट किया। 13वें ओवर में कुलदीप यादव ने हसन नवाज (पांच) और मोहम्मद नवाज (शून्य) को आउटकर पाकिस्तान की कमर तोड़ दी। इस दौरान एक छोर थामे साहिबजादा फरहान रन बनाते रहे। 17वें ओवर में कुलदीप ने फरहान को हार्दिक के हाथों कैच आउट कराकर भारत को बड़ी सफलता दिलाई। फरहान ने 44 गेंदों में तीन छक्के और एक चौका लगाते हुए 40 रन बनाये। वरूण चक्रवर्ती ने फहीम अशरफ (11) को आउट किया। सुफियान मकीम (10) को बुमराह ने बोल्ड आउट किया। पाकिस्तान ने निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 127 रन का स्कोर खड़ा किया। शाहीन शाह अफरीदी 16 गेंदों में 33 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने अपनी इस पारी में चार छक्के लगाये। भारत की ओर से कुलदीप यादव ने चार ओवर में 18 रन देकर तीन विकेट लिये। अक्षर पटेल ने चार ओवर में 18 रन देकर दो विकेट झटके। जसप्रीत बुमराह को दो विकेट मिले। वरूण चक्रवर्ती और हार्दिक पांड्या ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

राजस्थान से धनंजय सिंह खींवसर शामिल होंगे

गांगुली, हरभजन सहित कई खिलाड़ी वार्षिक आम बैठक में शामिल होंगे

नयी दिल्ली, 14 सितम्बर। सौरव गांगुली (सीएबी), जयदेव शाह (सौराष्ट्र), अरुण सिंह धूमल (एचपीसीए) और राजीव शुक्ला (यूपीसीए) जैसे नियमित नामों के अलावा, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की वार्षिक आम बैठक (एजीएम) में भाग लेने वाले अधिकांश अन्य सदस्य भी आम तौर पर संदिग्ध होते हैं।

हरभजन सिंह, निश्चित रूप से, आम सभा की बैठक के लिए राज्य प्रतिनिधियों की विशिष्ट सूची में एक अलग नाम के रूप में उभरे हैं। जैसा कि पहले बताया गया था, वह वार्षिक आम बैठक में पंजाब क्रिकेट संघ (पीसीए) का प्रतिनिधित्व करेंगे, जिससे बीसीसीआई के शीर्ष पद के लिए उनके संभावित उम्मीदवार के रूप में उनकी संभावनाओं को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं।

103 टेस्ट मैच खेल चुके पूर्व भारतीय स्पिनर ने अपनी योजनाओं के बारे में चुप्पी साध रखी है, लेकिन उनके करीबी लोगों का कहना है कि उनका नामांकन पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान से उनकी नजदीकी से जुड़ा है और इसके ज्यादा मायने नहीं निकाले जा सकते। लेकिन यह संभावना नहीं है कि यह मामला सिर्फ़ पंजाब के मुख्यमंत्री के साथ उनकी दोस्ती तक ही सीमित रहेगा। यह तय है कि इसमें और भी कुछ है। हरभजन और उनके पूर्व भारतीय कप्तान गांगुली के अलावा, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय खेल का अनुभव रखने वाले अन्य प्रतिनिधियों में जयदेव शाह, रघुराम भट्ट (कर्नाटक) और मिथुन मिन्हास (जेकेसीए) शामिल हैं।

पूर्व बीसीसीआई दिग्गज और दिल्ली क्रिकेट के कद्दावर नेता दिवंगत अरुण जेटली के बेटे रोहन जेटली को दिल्ली ज़िला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) ने नामित किया है। उन्हें बीसीसीआई में एक प्रभावशाली व्यक्ति माना जाता है। बीसीसीआई के पूर्व कोषाध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी हरियाणा क्रिकेट संघ (एचसीए) का प्रतिनिधित्व करेंगे।

संबंधित राज्य संघों द्वारा नामांकित होना महत्वपूर्ण है क्योंकि केवल वही प्रतिनिधि 28 सितंबर को होने वाले चुनाव में भाग ले सकते हैं। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, संयुक्त सचिव और कोषाध्यक्ष के पदों के लिए चुनाव होंगे और यह लगभग तय है कि सचिव देवजीत सैकिया (असम), कोषाध्यक्ष प्रभतेज सिंह भाटिया (छत्तीसगढ़) और संयुक्त सचिव रोहन देस्सा (गोवा) अपने पदों पर बने रहेंगे। बड़ा सवाल यह है कि अब अध्यक्ष कौन होगा क्योंकि रोजर बिन्नी 70 वर्ष की आयु सीमा पार कर चुके हैं।

मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ (एमपीसीए) ने सिंधिया के बेटे और नवनिर्वाचित अध्यक्ष महानार्यमन राव सिंधिया का नाम भेजा है। अन्य प्रभावशाली प्रतिनिधियों में संजय नाइक (मुंबई), रोहित पवार (महाराष्ट्र), पी दामोदरन (पांडिचेरी) और अनिल पटेल (गुजरात) शामिल हैं। राजस्थान से धनंजयसिंह खींवसर इस बैठक में शामिल होंगे।

बीसीसीआई के निर्वाचन अधिकारी एके जोति ने राज्य संघों को भेजे अपने नोट में कहा, ''निम्नलिखित मसौदा मतदाता सूची में बीसीसीआई के पूर्ण सदस्यों द्वारा भेजे गए संचार के माध्यम से प्राप्त सभी प्रतिनिधियों के नाम सूचीबद्ध हैं। निर्वाचन अधिकारी द्वारा 6 सितंबर, 2025 को जारी चुनाव कार्यक्रम की सूचना और पात्र सदस्यों से अपने प्रतिनिधि के नामांकन हेतु आवेदन करने के आव्हान के पैराग्राफ 3 में निर्दिष्ट अभिलेखों की पूर्णता की जांच के बाद नामों को सूचीबद्ध किया गया है।''

एशिया कप में हांगकांग को हराकर सुपर फोर में पहुंचना चाहेगी श्रीलंका

दुबई, 14 सितंबर । श्रीलंका एशिया कप 2025 के आठवें मैच में हांगकांग को हराकर सुपर फोर में पहुंचना चाहेगी। वही टूर्नामेंट से बाहर हो चुकी हांगकांग सम्मान के साथ विदाई के लिए संघर्ष करेगी। चारिथ असलांका की अगुवाई श्रीलंका की टीम अपने पहले मैच में बंगलादेश को छह विकेट से हराने के बाद आत्मविश्वास से भरी हुई है। उनकी बल्लेबाजी में टीम के रूप में लय में दिख रही है। 34 गेंदों पर 50 रनों की सहज पारी खेलने वाले पथुम निसांका एक अलग ही स्तर पर बल्लेबाजी करते दिख रहे हैं, जबकि बंगलादेश के खिलाफ कामिल मिशारा की नाबाद 46 रनों की पारी ने उनकी उम्र से कहीं अधिक संयम दिखाया। कुसल मेंडिस और कुसल परेरा शीर्ष क्रम में स्थिरता प्रदान करते हैं, और कप्तान असलांका के साथ कामिंदु मेंडिस अंतिम ओवरों में मजबूती प्रदान करते हैं। वहीं गेंदबाजी की बात की जाये तो श्रीलंका के पास दुष्मंथा चमीरा और नुवान तुषारा ने गति और सटीकता का मिश्रण है।

सेंट्रल जोन का दलीप ट्रॉफी चैंपियन बनना तय

बेंगलुरु 14 सितंबर । कुमार कार्तिकेयन (चार विकेट) और सारांश जैन (तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत सेंट्रल जोन ने रविवार को दलीप ट्रॉफी मुकाबले के चौथे दिन साउथ जोन को 426 के स्कोर पर समेट दिया। सेंट्रल जोन को अब जीत के लिए 65 रन बनाने है तथा अभी एक दिन का खेल शेष है।

साउथ जोन ने कल के दो विकेट पर 192 रन से आगे खेलना शुरु किया। आज साउथ जोन ने कल के स्कोर में महज 30 रन जोड़कर अपने चार विकेट गंवा दिये। साउथ जोन का तीसरा विकेट रिकी भुई (45) के रूप में गिरा। उन्हें दीपक चाहर ने एस शर्मा के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद कप्तान मोहम्मद अजहरुद्दीन (27) को कुमार कार्तिकेय ने अपना शिकार बना लिया। सलमान निजार (12) और आर स्मरण (47) भी कार्तिकेयन का शिकार बने। 222 के स्कोर पर छह विकेट गंवा चुकी हार की डगर पर खड़ी साउथ जोन को अंकित शर्मा और सी आंद्रे सिद्धार्थ की जोड़ी ने संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच 330 गेंदों में 192 रनों की साझेदारी हुई। कार्तिकेयन ने शतक की ओर बढ़ रहे अंकित शर्मा को आर पाटीदार के साथ हाथों कैच आउट कराकर सेंट्रल जोन को बड़ी सफलता दिलाई। अंकित शर्मा ने 168 गेंदों में 13 चौके और एक छक्के की मदद से 99 रन बनाये। वह महज एक रन से शतक से चूक गये। गुरजपनीत सिंह (नाबाद तीन) को सारांश जैन ने आउट किया। दिन का खेल समाप्त होने के समय सेंट्रल जोन ने साउथ जोन को 426 के स्कोर पर समेट दिया।

प्रतीका, मंधाना और हरलीन के अर्धशतक, भारत ने बनाये 281

न्यू चंडीगढ़, 14 सितंबर। प्रतीका रावल (64) और स्मृति मंधाना (58), हरलीन देओल (54) की शानदार अर्धशतकीय पारियों के दम पर भारतीय महिला टीम ने रविवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 50 ओवर में सात विकेट पर 281 रन का मजबूत स्कोर बना लिया।

आज यहां टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय महिला टीम के लिए प्रतीका रावल और स्मृति मंधाना की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की। दोनों बल्लेबाजों ने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए पहले विकेट के लिए 114 रनों की साझेदारी की। 22वें ओवर में फीबी लिचफील्ड ने स्मृति मंधाना को रनआउट कर ऑस्ट्रेलिया को पहली सफलता दिलाई। मंधाना ने 63 गेंदों में छह चौके और दो छक्के लगाते हुए 58 रनों की पारी खेली। इसके बाद 31वें ओवर में अलाना किंग ने प्रतीका रावल को अपना शिकार बना लिया।

ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम ने भारत को आठ विकेट से हराया

न्यू चंडीगढ़, 14 सितंबर । गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के बाद फीबी लिचफील्ड (88), बेथ मूनी (नाबाद 77), ऐनाबेल सदरलैंड (नाबाद 54) की शानदार अर्धशतकीय पारियों की बदौलत ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम ने रविवार को पहले एकदिवसीय मुकाबले में भारतीय टीम को 35 गेंदे शेष रहते आठ विकेट से हरा दिया। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है।

282 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम के लिए कप्तान अलिसा हीली और फीबी लिचफील्ड की सलामी जोड़ी ने 45 रन जोड़े। सातवें ओवर में क्रांति गौड़ ने अलिसा हीली (27) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। एलिस पेरी 30 रन पर रिटायर हर्ट हुई। ऑस्ट्रेलिया का दूसरा विकेट फीबी लिचफील्ड के रूप में गिरा। फीबी लिचफील्ड ने 80 गेंदों में 14 चौकों लगाते हुए 88 रन बनाये। बेथ मूनी और ऐनाबेल सदरलैंड शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 44.1 ओवर में दो विकेट पर 282 रन बनाकर अपनी टीम को आठ विकेट से जीत दिला दी।

तिलक वर्मा और रजत पाटीदार ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ भारत ए की कप्तानी करेंगे

मुंबई, 14 सितम्बर। रजत पाटीदार और तिलक वर्मा को 30 सितंबर से कानपुर में शुरू होने वाली ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ भारत ए की तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिए कप्तान बनाया गया है। पाटीदार ग्रीन पार्क स्टेडियम में होने वाले पहले मैच में टीम की कप्तानी करेंगे, जबकि तिलक 3 और 5 अक्टूबर को होने वाले दूसरे और तीसरे मैच में कप्तानी संभालेंगे, जबकि पाटीदार उनके उप-कप्तान होंगे।

पहले वनडे के लिए, पाटीदार के साथ विकेटकीपर प्रभसिमरन सिंह और अभिषेक पोरेल के साथ-साथ रियान पराग, आयुष बदौनी, सूर्यांश शेडगे, विप्रज निगम, निशांत सिंधु, प्रियांश आर्य, रवि बिश्नोई, गुरजापनीत सिंह, युद्धवीर सिंह और सिमरजीत सिंह शामिल होंगे।

28 सितंबर को एशिया कप के समापन के साथ, वर्मा आखिरी दो मैचों के लिए टीम में शामिल होंगे। टीम में अभिषेक शर्मा और हर्षित राणा और अर्शदीप सिंह के रूप में अतिरिक्त तेज विकल्प भी शामिल हैं, जबकि पहले गेम के अधिकांश कोर को बरकरार रखा गया है।

पहले वनडे मैच के लिए भारत ए टीम: रजत पाटीदार (कप्तान), प्रभसिमरन सिंह (विकेटकीपर), रियान पराग, आयुष बदौनी, सूर्यांश शेडगे, विप्रज निगम, निशांत सिंधु, गुरजापनीत सिंह, युद्धवीर सिंह, रवि बिश्नोई, अभिषेक पोरेल (विकेटकीपर), प्रियांश आर्य, सिमरजीत सिंह।

दूसरे और तीसरे वनडे के लिए भारत ए टीम: तिलक वर्मा (कप्तान), रजत पाटीदार (वीसी), अभिषेक शर्मा, प्रभसिमरन सिंह (विकेटकीपर), रियान पराग, आयुष बदौनी, सूर्यांश शेडगे, विप्रज निगम, निशांत सिंधु, गुरजापनीत सिंह, युद्धवीर सिंह, रवि बिश्नोई, अभिषेक पोरेल (विकेटकीपर), हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह। यह दो साल से अधिक समय में भारत ए का पहला एक दिवसीय मैच होगा, पिछला एशियन क्रिकेट काउंसिल मेन्स इमर्जिंग कप, 2023 फाइनल था जिसमें वे पाकिस्तान शाहीन से हार गए थे। अभिषेक शर्मा, निशांत सिंधु, रियान पराग और हर्षित राणा भी उस टीम का हिस्सा थे।

सात्विक-चिराग और लक्ष्य हांगकांग ओपन के फाइनल में हारे

हांगकांग, 14 सितंबर। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी तथा लक्ष्य सेन आज हांगकांग ओपन के फाइनल में हार गए और उन्हें उपविजेता रहकर संतोष करना पड़ा।

भारतीय जोड़ी फाइनल में जीत के करीब पहुंच गयी थी, लेकिन यहां पुरुष युगल के खिताबी मुकाबले में चीन के लियांग वेइकेंग और वांग चांग से 62 मिनट में 21-19, 14-21, 17-21 से हार गए। पुरुष एकल में भारत का खिताब का सपना टूट गया। लक्ष्य सेन को पुरुष एकल फाइनल में दूसरे वरीय चीन के ली शि फेंग से 21-15, 21-12 से हारकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा। इस परिणाम के साथ, भारत ने दो रजत पदक के साथ टूर्नामेंट का समापन किया।

दो बार की ओलंपिक चैंपियन ऑलमैन ने विश्व एथलेटिक्स में महिलाओं की डिस्कस थ्रो स्पर्धा में स्वर्ण जीता

टोक्यो, 14 सितंबर । दो बार की ओलंपिक चैंपियन अमेरिका की वैलेरी ऑलमैन ने रविवार को विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में महिलाओं की डिस्कस थ्रो स्पर्धा का खिताब अपने नाम कर लिया।

बुडापेस्ट में पिछली विश्व चैंपियनशिप की रजत पदक विजेता ऑलमैन ने 69.48 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ स्वर्ण पदक जीता।

नीदरलैंड की जोरिंडे वैन क्लिंकेन ने सीजन के सर्वश्रेष्ठ 67.50 मीटर के साथ रजत पदक जीता, जबकि क्यूबा की सिलिंडा मोरालेस ने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 67.25 मीटर के साथ कांस्य पदक जीता।

स्वीडन की वैनेसा कामगा चौथे स्थान पर रहीं, लेकिन उन्होंने 66.61 मीटर का राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। 2022 चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाले चीन की फेंग बिन 65.28 मीटर के साथ सातवें स्थान पर रहीं।

भारतीय महिला हॉकी टीम महिला एशिया कप 2025 के खिताबी मुकाबले में चीन से हारी

हांगझोऊ (चीन), 14 सितंबर। भारतीय महिला हॉकी टीम को महिला एशिया कप 2025 के खिताबी मुकाबले में चीन से 1-4 से हारकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा।

भारतीय टीम के लिए नवनीत कौर ने पहले ही मिनट में गोल किया। वहीं चीन की कप्तान ओउ जिक्सिया ने (21वें मिनट), ली होंग ने (40वें मिनट), ज़ू मीरॉन्ग ने (51वें मिनट) और झोंग जियाकी ने (53वें मिनट) मे गोल किए।

भारत ने फाइनल में पहले ही मिनट में पेनल्टी कॉर्नर के जरिए बढ़त बनाकर शानदार शुरुआत की। अनुभवी फॉरवर्ड नवनीत कौर ने पहले मिनट गोल किया। एक गोल से पीछे, चीन ने खेल की गति बढ़ा दी और पहले हाफ के दौरान ज़ोरदार हमले किए। चौथे मिनट में उन्हें अपना पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला, जिसे सुनीता टोप्पो ने गोललाइन ब्लॉक करके गोलकीपर बिचू देवी के एक और बचाव से रोक दिया। 15वें मिनट में, चीन को एक और पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन इस बार वे भारत के पहले रशर को चकमा नहीं दे सके।

दूसरे क्वार्टर में भी यही क्रम जारी रहा और चीन ने 17वें मिनट में एक और पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया, जिसे बिचू देवी ने 20वें मिनट में ओपन प्ले में एक और शानदार ब्लॉक लगाकर बचा लिया। चीन को 21वें मिनट में एक और पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन इस बार कप्तान ओउ जिक्सिया (21वें मिनट) ने इसे गोल में बदलकर स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। दूसरे हाफ में भी दोनों टीमें बराबरी पर रहीं। भारत ने तीसरे क्वार्टर की शुरुआत मजबूती से की और चीन को उसके ही हाफ तक सीमित रखा और बढ़त बनाने की कोशिश में लगातार सर्कल में घुसते रहे, हालाँकि, चीन ने ही गतिरोध तोड़ा। 40वें मिनट में, भारत को एक पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन वे इसे गोल में नहीं बदल पाए, जिससे गेंद चीन को मिल गई। चीन ने तुरंत पलटवार करते हुए भारत को चौंका दिया। ली होंग (40वें मिनट) में गोलकर स्कोर 1-2 कर दिया। चीन ने चौथे क्वार्टर में क्रमशः 51वें और 53वें मिनट में दो तेज गोल करके अंतर बढ़ा दिया। इसी के साथ चीन एशिया कप का खिताब 4-1 से अपने नाम कर लिया।

मीनाक्षी और जैस्मीन ने विश्व मुक्केबाजी में जीते स्वर्ण

लिवरपूल, 14 सितम्बर। जैस्मीन (57 किग्रा) और मीनाक्षी (48 किग्रा) ने लिवरपूल में विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप 2025 में स्वर्ण पदक जीत लिए। जैस्मीन ने पोलैंड की स्ज़ेरमेटा जूलिया (पेरिस ओलंपिक रजत पदक विजेता) को 4:1 से हराकर स्वर्ण जीता और यह उपलब्धि हासिल करने वाली वह वाली पहली भारतीय बन गईं। मीनाक्षी (48 किग्रा) ने कजाकिस्तान की नाजिम काइज़ेबे (पेरिस ओलंपिक कांस्य पदक विजेता) के खिलाफ 4:1 से जीत हासिल की और चैंपियनशिप 2025 में स्वर्ण पदक जीतने वाली दूसरी भारतीय बन गईं। नुपुर (80 किग्रा) ने रजत पदक जीता जबकि पूजा रानी (80 किग्रा) ने कांस्य पदक के साथ समापन किया।

जयपुर पिंक पैंथर्स के मुख्य कोच नरेंद्र रेड्डू ने यूपी योद्धाज़ पर जीत के बाद घरेलू प्रशंसकों का ऊर्जावान उपस्थिति के लिए धन्यवाद किया

जयपुर,14 सितम्बर। जयपुर पिंक पैंथर्स ने पीकेएल सीज़न 12 के घरेलू चरण में अपनी पहली जीत दर्ज की, एसएमएस इंडोर स्टेडियम, जयपुर में यूपी योद्धाज़ को 41-29 के स्कोर से हराकर शानदार प्रदर्शन किया। जीत के बाद, पोस्ट-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में, जयपुर पिंक पैंथर्स के मुख्य कोच नरेंद्र रेड्डू ने प्रशंसकों के समर्थन को श्रेय दिया। उन्होंने कहा, मैं प्रशंसकों का धन्यवाद करना चाहता हूं, जो हमें इतनी ऊर्जा देते हैं। हमें हर मैच में यही ऊर्जा मिलनी चाहिए। मैं दिल से प्रशंसकों का आभार प्रकट करता हूं।

कोच टीम के प्रदर्शन, खासकर शनिवार को युवा खिलाड़ियों के खेल से भी बेहद खुश थे। उन्होंने कहा, देखिए, हमारी टीम में कई नए खिलाड़ी हैं, जिनमें ज़्यादातर एनवाईपी (न्यू यंग प्लेयर) हैं, और हम हर मैच में अपना 100 प्रतिशत देने की कोशिश कर रहे हैं। आज के मैच में हम टूर्नामेंट की एक बेहतरीन टीम के खिलाफ खेले। यूपी योद्धाज़ के पास बेहद अच्छे खिलाड़ी हैं, जिनमें अनुभवी डिफेंडर और रेडर शामिल हैं।

मुख्य कोच नरेंद्र रेड्डू ने टीम को समर्थन देने में अपनी फ्रैंचाइज़ी की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, हम अपनी टीम पर दबाव नहीं डालना चाहते। मैं दबंग दिल्ली केसी के खिलाफ खेले गए मैच को याद करना चाहता हूं, जिसमें हम मामूली अंतर से हारे थे। उस हार के बाद भी हमने टीम पर कोई अतिरिक्त दबाव नहीं डाला।

हमें विश्वास है कि जब तक खिलाड़ियों को अपना खेल खेलने की आज़ादी मिलेगी, टीम सही नतीजे हासिल करेगी। खिलाड़ियों, कोचों और फ्रैंचाइज़ी के बीच का बंधन शानदार है। वे सभी को परिवार की तरह मानते हैं। इसी कारण कोई दबाव नहीं है और टीम में जुझारूपन की भावना बनी रहती है।

राज्य स्तरीय अंडर-19 ट्रॉफी क्वार्टर फाइनल, जयपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, जोधपुर जीती

आज खेले गए क्वार्टर फाइनल मैचों में शिफॉन खान, कार्तिक बदलानी, अभय शर्मा, शोएब खान, साहिब अबिचंदानी, जगदीश चौधरी, अभिषेक मूँद, नमन शर्मा, भव्य राज, अपूर्व शर्मा, सचिन सेन, रोहित का शानदार प्रदर्शन

जयपुर, 14 सितम्बर। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025 - 26 की अंडर 19 प्रतियोगिता में में भाग लेने वाली राजस्थान टीमों के संभावितों के चयन हेतु आरसीए के तत्वाधान में खेली जा रही राज्य स्तरीय अंडर 19 प्रतियोगिता के आज जयपुर में खेल गए प्री क्वाटर फाइनल मैचों का परिणाम व स्कोर।

के एल सैनी स्टेडियम जयपुर - नागौर (जयपुर 7 विकेट से जीती), नागौर पारी 153 आल आउट। टीम के लिए विहान जैन 30 , राहिल , कीरत प्रत्येक 22 -22 रन। जयपुर के गेंदबाज कार्तिक 25/3, अविनाश 23 /2, पर्व झालानी 37/2 व प्रखर शर्मा , जतिन , रोबिन प्रत्येक 1-1 विकेट। **जयपुर पारी** 154/3, टीम के लिए शिफॉन खान 64 , अभय शर्मा नाबाद 36 व गौरव 29 रन। नागौर के गेंदबाज विराट 34 /2 विकेट। **नारायणा ग्राउंड** कोटा - बीकानेर (बीकानेर 9 विकेट से जीती), कोटा पारी 79 आल आउट, टीम के लिए ऋतिक 20 , आशीष 17 रन। बीकानेर के गेंदबाज रोहित 11/3 , सचिन 23/3 व गुरमान 18/2 विकेट बीकानेर पारी 80/1, टीम के लिए सचिन लखेसर नाबाद 51 व हरेंद्र नाबाद 16 रन। **सोनी ग्राउंड** जोधपुर - भीलवाड़ा (जोधपुर 28 रन से जीती), जोधपुर पारी 200 आल आउट, टीम के लिए ऋषभ 39 , आर्यन 35 , जगदीश 30 रन। भीलवाड़ा महेंद्र रावत 28/2 , अपूर्व शर्मा 30/2 व अनिल 57/2 विकेट। भीलवाड़ा पारी 172 आल आउट, टीम के लिए अपूर्व शर्मा 22 , कुशल 22 रन। जोधपुर के गेंदबाज जगदीश चौधरी 29/4 व गौरव 17/2 विकेट

पी एस ग्राउंड सवाईमाधोपुर - सीकर (सवाई माधोपुर 10 रन से जीती), सवाई माधोपुर पारी 257 /7 टीम के लिए शोएब खान 71, साहिब अबिचंदानी 59, मयंक 35 , रक्षित 34 व नमन शर्मा नाबाद 19 रन सीकर के गेंदबाज भव्य राज 46/3 , अभिषेक मूंड 39/2 विकेट। सीकर पारी अभिषेक मूंड 54, अनित राज 41, सुनील 36 ,हितेश 36 व भव्य राज 32 रन सवाई माधोपुर के गेंदबाज नमन शर्मा 34/2 , तनिष्क सिंघल 36/2 व साहिब अबिचंदानी 53/2 विकेट।

रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर रावणा राजपूत समाज के प्रतिनिधिमण्डल ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से शिष्टाचार भेंट की तथा राज्य सरकार द्वारा संचालित लोककल्याणकारी नीतियों, विकासोन्मुखी योजनाओं तथा बजट घोषणाओं के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। प्रतिनिधिमण्डल में जनप्रतिनिधिगण एवं समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित थे। रविवार को ही एक अन्य कार्यक्रम में खटीक समाज का प्रतिनिधि मण्डल मुख्यमंत्री से मिला। प्रतिनिधिमण्डल में शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, विधायक रमेश खींची सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

संशोधित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

देने वाले वकीलों और केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की दलीलें सुनी गईं। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने पहले ही इन तीन प्रमुख मुद्दों की पहचान कर ली थी, जिन पर याचिकाकर्ताओं ने रोक लगाने की मांग की थी और जिन पर कोर्ट अब अंतरिम आदेश देने जा रही है। याचिका दाखिल करने वालों ने डिनोटिफिकेशन के मुद्दे के अलावा राज्य वक्फ बोर्ड और केंद्रीय वक्फ परिषद के ढ ांचे पर भी सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि इन संस्थाओं को सिर्फ मुसलमानों द्वारा ही चलाया जाना चाहिए, सिर्फ वे लोग छोड़कर जो अपने सरकारी पद की वजह से अपने-आप सदस्य बनते हैं। तीसरा मुद्दा एक ऐसे प्रावधान से जुड़ा है, जिसमें कहा गया है कि यदि जिला कलेक्टर यह जांच कर रहा हो कि कोई संपत्ति सरकारी जमीन है या नहीं, तो उस समय उस संपत्ति को वक्फ नहीं माना जाएगा।

इज़रायली बमबारी से उत्तरी गाज़ा में 13 फिलिस्तीनी मारे गये

लगातार हमलों से रोजाना हजारों लोग गाज़ा सिटी से पलायन कर रहे हैं

- **अल-जजीरा के हमज़ा मोहम्मद ने कहा कि गाज़ा सिटी इमारत दर इमारत, परिवार दर परिवार खाली होता जा रहा है। जल्द ही जो बचेगा वह एक शहर नहीं, बस एक शहर की याद बनकर रह जाएगा।**

गाज़ा, 14 सितंबर। इज़रायल की ओर से अंधाधुंध बमबारी में उत्तरी गाज़ा में रविवार को 13 फिलिस्तीनी मारे गए हैं। गाजा सिटी से हर दिन हजारों फिलिस्तीनी भागने को मजबूर हो रहे हैं, जिसमें रोजाना दर्जनों नागरिक मारे जा रहे हैं। परिवार दक्षिण की ओर पलायन कर रहे हैं, जिसमें कई भीड़भाड़ वाले और कई बार निशाना बनाए जाने वाले अल-मवासी शिविर की ओर जा रहे हैं। अल-जजीरा की रिपोर्ट में रविवार को यह जानकारी दी गई।

फिलिस्तीनी नागरिक सुरक्षा के मुताबिक, इज़रायली सेना के लगातार हमलों के कारण शनिवार को छह हजार से ज्यादा लोग गाजा सिटी छोड़कर चले गए। हालांकि, करीबी नौ लाख फिलिस्तीनी अभी भी शहर में हैं, लेकिन यह संख्या तेजी से घट रही है। अल-जजीरा के हमजा मोहम्मद ने कहा, गाजा सिटी इमारत दर इमारत, परिवार दर परिवार खाली होता जा रहा है। जल्द ही जो बचेगा वह शायद एक शहर नहीं, बस एक शहर की याद बनकर रह जाएगा।

हमले के डर के कारण भागने वाले लोगों ने अपनी स्थिति के बारे में बताया। दक्षिण की ओर जा रहे एक फलस्तीनी खलील मतर ने कहा, हम चल ही रहे हैं। हमारे साथ बीमार लोग हैं और हमें नहीं पता कि कहां जाएंगे। कोई जगह सुरक्षित नहीं है।कई निवासियों ने कहा कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है, इसलिए उन्होंने इस्त्राइल की निकासी चेतावनियों का पालन करते हुए अल-मवासी की ओर रुख किया है। हालांकि, जिसे सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है, उस शिविर से मिल रही रिपोर्ट में भारी भीड़ और खाने, पीने के पानी व आश्रय की गंभीर कमी की जानकारी दी गई है।

राजनाथ सिंह ने नई रक्षा खरीद नियमावली को मंजूरी दी

नयी दिल्ली, 14 सितम्बर। रक्षा मंत्रालय ने सुधारों की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाते हुए राजस्व खरीद प्रक्रिया को सुव्यवस्थित, सरल, सक्षम और युक्तिसंगत बनाने के लिए नयी रक्षा खरीद नियमावली 2025 को मंजूरी दे दी है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के कार्यालय ने रविवार को बताया कि रक्षा मंत्री ने नयी नियमावली को मंजूरी दे दी है। बजट अनुमान 2025 में राजस्व खरीद का बजट लगभग एक लाख करोड़ रुपये है। नयी नियमावली रक्षा क्षेत्र मेंआत्म निर्भरता को बढ़ ावा देते हुए सेनाओं के लिए राजस्व खरीद में तेजी लाएगी, स्टार्टअप और एमएसएमई सहित भारतीय उद्योग को सरल प्रक्रियाओं के साथ सक्षम बनाने के साथ साथ नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ ावा देगी। इसमें सहायक वित्तपोषण विकल्प और अनावश्यक दंड में ढील देकर उद्योगों के सामने आने वाली कार्यशील पूंजी संबंधी समस्याओं को कम किया गया है। नयी नियमावली से उद्योग, शिक्षा जगत और सार्वजनिक क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा अनुसंधान और विकास को कई सक्षम प्रावधानों के साथ बढ़ ावा मिलेगा।

अमृतसर मंदिर पर ग्रेनेड हमले के आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र पेश

एनआईए की जाँच के अनुसार, विशाल गिल ने ग्रेनेड फेंका, मन्ना भट्टी व दीवान सिंह ने अभियुक्तों को शरण दी

- **एनआईए को अंदेशा है कि यह घटना भारत और विदेश में बैठे आतंककारी गुर्गों द्वारा रची गई एक बड़ी साजिश का हिस्सा है।**

नयी दिल्ली, 14 सितंबर। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने अमृतसर के एक मंदिर में ग्रेनेड हमला करने के मामले में तीन आरोपियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया है।

एनआईए की ओर से जारी विज्ञिप्त के अनुसार एनआईए ने शुक्रवार को मोहाली (पंजाब) की विशेष अदालत में दाखिल आरोपपत्र में विशाल गिल , भगवंत सिंह उर्फ मन्ना भट्टी और दीवान सिंह उर्फ सनी पर अमृतसर के छेहरटा स्थित ठाकुरद्वारा सनातन मंदिर पर हमले की साजिश रचने और उसे अंजाम देने का आरोप लगाया है।

एनआईए के अनुसार विशाल गिल उन दो बाइक सवार हमलावरों में से एक था, जिन्होंने 15 मार्च, 2025 तड़के ग्रेनेड फेंका था। दूसरा हमलावर, गुरसिदक सिंह सिदकी हमले के दो दिन बाद पुलिस मुठभेड़ में मारा गया था।

आरोप पत्र के अनुसार भगवंत सिंह उर्फ मन्ना भट्टी ने हमले से पहले और बाद में हमलावरों को आश्रय, ग्रेनेडों को सुरक्षित रूप से छुपाने, टोही के लिए मोटरसाइकिल और रसद सहायता प्रदान करके उनकी मदद की थी। दीवान सिंह उर्फ सनी पर सह-अभियुक्तों को शरण देने और सबूत नष्ट करने में उसकी भूमिका के लिए आरोपपत्र दाखिल किया गया है। एक अन्य प्रमुख आरोपी शरणजीत कुमार को एनआईए ने पांच सितंबर 2025 को बिहार के गया से गिरफ्तार किया था। उसके और विदेश में रह रहे फरार आरोपी बादलप्रीत सिंह के खिलाफ जांच कर रही है। एजेंसी की जांच में यूपीआई और एमटीएसएस चैनलों के माध्यम से विदेशी संचालकों से स्थानीय गुर्गों को आतंकी धन हस्तांतरित करने का भी पता चला है। इसकी भी जांच की जा रही है।

मामले में अन्य फरार आरोपियों की पहचान करने और हमले में शामिल आतंकी मॉड्यूल के अंतरराष्ट्रीय संबंधों का पता लगाने के प्रयास जारी हैं। एनआईए को अंदेशा है कि यह घटना भारत और विदेश में बैठे आतंकवादी गुर्गों द्वारा रची गयी एक बड़ी साजिश का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य लोगों में भय पैदा करना तथा पंजाब और देश के बाकी हिस्सों में सांप्रदायिक वैमनस्य भड़काना है।

डिवाइडर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निवासी उनके रिश्तेदार अशोक वैष्णव उर्फ कालूराम (47), उनकी पत्नी सीमा देवी (45), बेटे रोहित (23) और पोते गजराज (3) की मौत हो गई। हादसे में मारे गए सभी लोग हरिद्वार में अस्थियां विसर्जन करके घर लौट रहे थे। थानाधिकारी सुरेंद्र सैनी ने बताया कि शिवदासपुरा इलाके में प्रहलादपुरा के पास रिंग रोड पर तेज रफ्तार कार बेकाबू होकर डिवाइडर से टकराई और रिंग रोड से 16 फीट नीचे अंडरपास में भरे पानी में गिर गई। पुलिस ने बताया कि रिंग रोड पर डिवाइडर के बीच करीब 20 फीट खाली जगह है। इसके बीच में से कार नीचे पानी में गिरी थी। हादसा इतना भीषण था कि सभी की मौके पर ही मौत हो गई।

वैष्णो ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुनिश्चित करने पर चर्चा की गयी। वैश्य ने कहा कि नवरात्रि निकट है और ऐसे में बोर्ड को तीर्थस्थल और कटरा स्थित आधार शिविर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ने की उम्मीद है इसलिए नवरात्रि पर्व के दौरान सभी एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करें। उन्होंने आने वाले दिनों में बिना किसी परेशानी के तीर्थयात्रा के लिए विभिन्न मोर्चों पर कार्रवाई करने का भी आव्हान किया।

व्यास नदी के किनारे बसे खैरी गाँव में वर्षा से तबाही

- **तीन घर उफनते नाले में डूबे, सड़कें बह गईं।**

सुजानपुर टीरा (हमीरपुर), 14 सितंबर। हिमाचल प्रदेश के सुजानपुर विधानसभा क्षेत्र में व्यास नदी के तट पर बसे खैरी गांव में शनिवार रात हुई भारी बारिश ने व्यापक तबाही मचाई जिससे क्षेत्र में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है।

प्रभावित इलाके में बाढ़ के पानी और मलबे से सड़कें बह गयीं। किसानों के खेत जलमग्न हो गए और असंख्य घरों को नुकसान पहुंचा। कुछ घर पूरी तरह से मलबे में दब गए हैं। कई अन्य में दरारें पड़ गईं, जिससे लोगों में हड़कम्प मचा हुआ है। शनिवार की देर रात शुरू हुई बारिश कुछ ही घंटों में तेज हो गई, जिससे बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गए। तीन घर एक उफनते नाले के पानी में डूब गये जिससे निवासियों को भागकर अपनी जान बचानी पड़ी। रविवार सुबह तक ग्रामीणों ने तबाही का जायजा लिया। गांव को जोड़ने वाली मुख्य सड़कें टूट गईं हैं। सड़कों पर खड़े वाहन मलबे में दब गए और कई घरों को भारी नुकसान पहुंचा। स्थानीय लोग अब अधिकारियों से तत्काल राहत और पुनर्वास की मांग कर रहे हैं। घटना की खबर मिलते ही स्थानीय विधायक कैप्टन रणजीत सिंह ने घटनास्थल का दौरा किया। उन्होंने लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के अधिकारियों के साथ समन्वय करके जेसीबी मशीनों से सड़कें और मलबा साफ करवाया। विधायक कैप्टन रणजीत सिंह ने कहा, "खैरी में बाढ़ से काफी नुकसान हुआ है। कई घर प्रभावित हुए हैं। सड़कें नष्ट हो गई हैं।

'संगीतकार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा" आम तौर पर मुख्यमंत्री से अनुरोध किया जाता है। लेकिन मैं इलैयाराजा से एक अनुरोध करना चाहता हूँ कि वे संगम की शास्त्रीय रचनाओं को संगीत के माध्यम से जीवित करें। इससे इन प्राचीन कृतियों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद मिलेगी।" इस अवसर पर अभिनेता रजनीकांत और कमल हासन के साथ-साथ उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने संगीतकार इलैयाराजा की प्रशंसा की, जिन्होंने इस अवसर पर एक संगीत प्रस्तुत दी।

कांस्टेबल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में अन्य नाम से सम्मिलित हुआ है। इसके बाद भूपेन्द्र से पूछताछ की गई। तकनीकी सहायता से 1 जून-2025 को अपनी बायोमेट्रिक अपने भतीजे धर्मवीर के नाम पर प्री डी एल एड (डिप्लोमा इन एलिमैंटरी एजुकेशन) परीक्षा में यूज की थी। भतीजे की जगह डमी कैंडिडेट बैठकर उसको प्रतियोगिता परीक्षा पास करवाई थी। जिससे धर्मवीर बिना परीक्षा के ही वर्तमान में केबीएम टीचर ट्रेनिंग कॉलेज बोंली सवाई माधोपुर में बेसिक स्कूल ट्रेनिंग कोर्स कर रहा है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908